चिंतन

बम से नहीं, वार्ता से सुलाझाएं विवाद

तनाव
डॉ. जयंतीलाल भंडारी

ईरानी और इजराइल-अमेरिका युद्ध लंबा खिंचने की आशंका से भारत की भी कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों, शेयर बाजार में गिरावट, माल ढुलाई की लागत बढ़ने, खाद्य वस्तुओं की महंगाई, भारत से बासमती चावल, चाय, मशीनरी, इस्पात तथा फुटवियर जैसे क्षेत्रों में निर्यात, निर्यात के लिए बीमा लागत में वृद्धि, पश्चिम एशिया में रहने वाले भारतीयों की सुरक्षा की चिंता तथा इजराइल और ईरान के सहित पश्चिम एशिया के अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार में कमी जैसी चिंताएं बढ़ सकती हैं। लेकिन ईरान और इजराइल-अमेरिका युद्ध के बीच भारत के कई ऐसे मजबूत आर्थिक पक्ष हैं, जिनसे भारत के आम आदमी और भारतीय अर्थव्यवस्था को अधिक नुकसान नहीं होगा।

संयुक्त राज्य अमेरिका और इज़राइल द्वारा ईरान पर किए गए व्यापक सैन्य हमलों ने क्षेत्रीय तनाव को चरम पर पहुंचा दिया है। विभिन्न शहरों में सैन्य ठिकानों के साथ-साथ नागरिक ढांचे को भी नुकसान पहुंचने की खबरें हैं। बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु एवं घायल होने की सूचना ने मानवीय संकट को और गहरा कर दिया है। जवाबी कार्रवाई में ईरान द्वारा भी हमले किए जाने से स्थिति और विस्फोटक हो गई है। यह संघर्ष यदि इसी दिशा में आगे बढ़ता रहा, तो इसका प्रभाव केवल मध्य पूर्व तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरी दुनिया इसकी चपेट में आ सकती है। सैंकड़ों निर्दोष लोग मारे जाएंगे, आर्थिक संकट भी बढ़ेगा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बम और मिसाइलें क्षणिक बढ़त तो दिला सकती हैं, लेकिन वे स्थायी शांति की नींव नहीं रख सकतीं। इस संघर्ष ने न केवल हजारों परिवारों को शोक में डुबोया है, बल्कि क्षेत्रीय अस्थिरता को भी बढ़ाया है। स्कूलों, रिहायशी इलाकों और नागरिक प्रतिष्ठानों को हुए नुकसान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आधुनिक युद्धों में सबसे बड़ी कीमत आम नागरिक ही चुकाते हैं। ऐसे समय में वार्ता, संयम, संवाद और कूटनीति ही एकमात्र रास्ता हैं जो व्यापक विनाश को रोक सकते हैं। मध्य पूर्व का भू-राजनीतिक महत्व पूरी दुनिया जानती है। ऊर्जा आपूर्ति का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है। यदि तनाव और बढ़ता है और होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग बाधित होते हैं, तो वैश्विक तेल आपूर्ति पर गहरा असर पड़ेगा। तेल की कीमतों में उछाल से विश्व अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ेगा, महंगाई बढ़ेगी और विकासशील देशों की आर्थिक स्थिति और कठिन हो जाएगी। स्पष्ट है कि यह केवल दो या तीन देशों का मामला नहीं है, बल्कि पूरी वैश्विक व्यवस्था की स्थिरता का प्रश्न है। भारत ने ईरान और खाड़ी क्षेत्र की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए सभी पक्षों से तनाव कम करने और नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने का आग्रह किया है। भारत का यह रुख संतुलित और जिम्मेदार कूटनीति का परिचायक है। इसी प्रकार चीन और रूस ने भी सैन्य कार्रवाई की निंदा करते हुए संवाद और शांतिपूर्ण समाधान पर जोर दिया है। यह सकारात्मक संकेत है कि वैश्विक शक्तियां कम से कम औपचारिक रूप से ही सही, शांति की वकालत कर रही हैं। वास्तव में, यह समय आरोप-प्रत्यारोप का नहीं, बल्कि आत्ममंथन का है। क्या सैन्य हमले किसी परमाणु या सुरक्षा विवाद का स्थायी हल दे सकते हैं? क्या क्षेत्रीय प्रभुत्व की राजनीति निर्दोष नागरिकों के जीवन से अधिक मूल्यवान है? इन प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट है। विश्व व्यवस्था नियम-आधारित होनी चाहिए, जहां सभी देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान हो। यदि कूटनीतिक प्रयासों को मजबूत किया जाए, तो विवादों का समाधान संभव है। अतीत में भी कई जटिल अंतरराष्ट्रीय विवाद वार्ता की मेज पर सुलझे हैं। संयुक्त राष्ट्र और अन्य बहुपक्षीय मंचों की भूमिका भी इस समय अत्यंत महत्वपूर्ण है। परमाणु कार्यक्रम, क्षेत्रीय सुरक्षा और प्रतिबंधों जैसे मुद्दों पर व्यापक और पारदर्शी वार्ता ही आगे का रास्ता दिखा सकती है। सैन्य टकराव से केवल अविश्वास बढ़ता है, जबकि संवाद से पुल बनते हैं। विश्व समुदाय को स्पष्ट संदेश देना होगा कि 21वीं सदी में संघर्षों का समाधान युद्ध नहीं, बल्कि वार्ता है। इसलिए यही उचित होगा कि सभी पक्ष तुरंत सैन्य कार्रवाइयों पर विराम लगाएं, तनाव कम करें और बातचीत की प्रक्रिया को पुनः आरंभ करें। बम से नहीं, बल्कि वार्ता से ही स्थायी शांति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

ईरान युद्ध से बढ़ी आर्थिक चिंताएं

इजराइल-अमेरिका द्वारा 28 फरवरी को ईरान पर हमले और उसके बाद ईरान के द्वारा इजरायल व अमेरिका के सैन्य ठिकानों पर हमलों से निर्मित युद्ध ने दुनिया की चिंताएं बढ़ा दी हैं। खास तौर से इस युद्ध में ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामेनेई के मारे जाने के बाद जहां ईरानी सेना ने इजराइल-अमेरिका से इसका पूरा बदला लेने और इजराइल- अमेरिका के द्वारा ईरान को पूरी तरह से कमजोर किए जाने के वक्तव्यों से इस युद्ध के लंबा खिंचने की आशंका बढ़ गई है। ऐसे भारत को भी चिंताएं बढ़ सकती हैं। ये चिंताएं कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों, शेयर बाजार में गिरावट, माल ढुलाई की लागत बढ़ने, खाद्य वस्तुओं की महंगाई, भारत से बासमती चावल, चाय, मशीनरी, इस्पात तथा फुटवियर जैसे क्षेत्रों में निर्यात, निर्यात के लिए बीमा लागत में वृद्धि, पश्चिम एशिया में रहने वाले भारतीयों की सुरक्षा की चिंता तथा इजराइल और ईरान के सहित पश्चिम एशिया के अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार में कमी की आशंकाओं से संबंधित हैं।

उल्लेखनीय है कि ईरान और इजरायल-अमेरिका के बीच युद्ध का असर वैश्विक शिपिंग रूट्स पर भी पड़ सकता है, खासकर होर्मुज जलडमरूमध्य पर। ईरान ने 33 किलोमीटर चौड़ा यह जल मार्ग रोक दिया है। यह वैश्विक यातायात का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मार्ग है। दुनिया को मिलने वाला करीब एक तिहाई तेल और खाद्य व कृषि उत्पादों का अधिकांश यातायात इसी मार्ग से होता है। ऐसे में इस क्षेत्र में शिपिंग बाधित होने से कच्चे तेल की ग्लोबल सप्लाई चेन प्रभावित हो सकती है। साथ ही इससे खाद्य पदार्थों, जैसे कि गेहूं, चीनी और अन्य कृषि उत्पादों की कीमतें बढ़ने लगेंगी। चूंकि भौगोलिक रूप से ईरान भारत का पड़ोसी क्षेत्र है और कच्चे तेल के लिहाज से भारत का करीब आधा कच्चा तेल इसी रास्ते से होकर आता है, ऐसे में यह युद्ध भारत के लिए कच्चे तेल संबंधी चिंता निर्मित करते हुए दिखाई दे रहा है। वजह यह है कि भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों के करीब 85 फीसदी तक आयात पर निर्भर है, अतएव कच्चे तेल के दाम में बढ़ोतरी भारत के आयात बिल की चिंता बढ़ा सकती है। स्थिति यह है कि युद्ध के तनाव के बीच 28 फरवरी को कच्चे तेल की कीमत 73 डॉलर प्रति बैरल के मूल्य स्तर पर पहुंच गई, जो सात माह का रिकॉर्ड मूल्य स्तर है। युद्ध के लंबा खिंचने पर कच्चे तेल की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल के पार जा सकती है। ईरान दुनिया के सबसे बड़े कच्चा तेल उत्पादकों में से एक है और यह देश युद्धग्रस्त है। ऐसे में ईरान के तेल बाजार में अस्थिरता से कच्चे तेल की कीमतें तेजी से बढ़ने पर पेट्रोल, डीजल और अन्य पेट्रोलियम उत्पाद महंगे होने लगेंगे। इसका असर भारत पर भी हो सकता है।

इस युद्ध से वैश्विक शेयर बाजार के साथ-साथ भारत के शेयर बाजार पर भी बड़ा असर पड़ने की आशंका है। इस युद्ध से भारत के शेयर बाजार में बड़ी संख्या में विदेशी निवेशकों के द्वारा जोखिम वाली संपत्तियां बेचने और बड़ी संख्या में निवेश निकालने की स्थिति दिखाई दे सकती है । सेंसेक्स और निफ्टी के लिए मार्च 2026 बड़ी गिरावट का महीना होगा। इस युद्ध के कारण निवेशक तेजी से सुरक्षित निवेश के तौर पर सोने की खरीदी का भी रुख करते हुए दिखाई देंगे। इससे वैश्विक स्तर के साथ-साथ भारत में भी सोने की खपत और सोने की कीमत और तेजी से बढ़ेगी। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि ईरान और अमेरिका-इजरायल के बीच युद्ध के लंबा खिंचने पर पश्चिम एशिया में रहने वाले करीब 90 लाख भारतीयों की सुरक्षा भी भारत के लिए चिंता का कारण बन सकती है। इस युद्ध का प्रभाव भारत के वित्तीय बाजार पर भी पड़ सकता है और भारतीय रुपया कमजोर भी हो सकता है। लेकिन ईरान और इजराइल-अमेरिका युद्ध के बीच भारत के कई ऐसे मजबूत आर्थिक पक्ष हैं, जिनसे भारत के आम आदमी और भारतीय अर्थव्यवस्था को अधिक नुकसान नहीं होगा। खास बात यह है कि इस समय भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। भारत खाद्यान्न अतिशेष वाला देश है और देश के 80 करोड़ से अधिक कमजोर वर्ग के लोगों को निशुल्क खाद्यान्न वितरित किया जा रहा है। वर्ष 2025 में भारत में 35.70 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ था और इस वर्ष 2026 में रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन की संभावना है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के पास केंद्रीय पूल में इस समय लगभग 182 लाख टन गेहूं उपलब्ध होने का अनुमान है। इसी तरह इस वित्त वर्ष 2025-26 के लिए निजी कंपनियों और व्यापारियों के पास लगभग 75 लाख टन गेहूं का स्टॉक मौजूद है। यह पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में करीब 32 लाख टन ज्यादा है। यह भी महत्वपूर्ण है कि रबी सीजन 2026 में गेहूं की बुवाई का रकबा बढ़कर 334.17 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले साल 328.04 लाख हेक्टेयर था।

एक खास बात यह है कि भारत में महंगाई नियंत्रित है भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। महंगाई दर 4 प्रतिशत के लक्ष्य से नीचे है। थोक मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई दर जनवरी 2026 में 1.81 प्रतिशत पर रही है। इसी तरह उपभोक्ता महंगाई दर 2.75 प्रतिशत रही है। भारत में महंगाई रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के निर्धारित लक्ष्य से भी कम है। निश्चित रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। यदि युद्ध से जरूरी दवाइयों की आपूर्ति में कोई कमी आती है, तो सरकार पीएलआई योजना के तहत दवाई उद्योग में काम आने वाले 35 प्रमुख कच्चे माल (एपीआई) का उत्पादन देश में ही तेजी से बढ़ाते हुए दिखाई दे सकेगी। इससे दवाइयों के दामों पर नियंत्रण रखा जा सकेगा। इस युद्ध के चलते वैश्विक तेल की कीमतों में आए उछाल पर भारत कच्चे तेल के किसी भी संकट से निपटने में सक्षम होगा। इस समय भारत के पास 74 दिनों की रणनीतिक कच्चा तेल भंडार उपलब्ध है। पहले भारत 27 देशों से कच्चा तेल खरीदता था, अब इन देशों की संख्या बढ़कर 39 हो गई है। इससे कुछ ही देशों से तेल खरीदने संबंधी जोखिम कम हो गया है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि आगामी वित्त वर्ष 2026-27 के बजट के तहत शीघ्र खराब होने वाले सामान की बाजार में समुचित आपूर्ति सुनिश्चित करने, महंगाई नियंत्रण व जरूरी दवाइयों की किफायती दाम पर आपूर्ति के लिए जो प्रभावी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं, वे युद्ध की चुनौती के बीच भारत के आम आदमी को राहत देते हुए दिखाई दे सकेंगी।

हम उम्मीद करें कि सरकार ईरान और इजराइल-अमेरिका के युद्ध के दुर्भाग्यपूर्ण रूप से विस्तारित होने पर युद्ध से निर्मित आर्थिक चुनौतियों की आशंका के मद्देनजर ऐसी बहुआयामी रणनीति के साथ आगे बढ़ेगी, जिससे देश के आमजन व देश की अर्थव्यवस्था को ईरान और इजराइल-अमेरिका युद्ध के दुष्प्रभावों से बचाया जा सकेगा।

(लेखक वरिष्ठ अर्थशास्त्री हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

कूटनीति
महेन्द्र तिवारी

खामेनेई के बाद ईरान की रणनीति व भारत पर असर

आयातुल्लाह अली खामेनेई की मृत्यु और उसके बाद मोजतबा खामेनेई का सत्ता के केंद्र में आना ईरान के इतिहास का वह मोड़ है, जहां से वापसी का रास्ता केवल संघर्ष और रणनीतिक आक्रामकता से होकर गुजरता है। ईरान की आगामी रणनीति अब केवल अस्तित्व बचाने की नहीं, बल्कि अपने खोये हुए गौरव और नेतृत्व के अपमान का बदला लेने की है। अहमद वाहिदी जैसे कट्टरपंथी सैन्य रणनीतिकार के हाथों में इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स की कमान होने का सीधा अर्थ है कि ईरान अब 'रणनीतिक धैर्य' की नीति को त्यागकर 'प्रत्यक्ष प्रतिशोध' के युग में प्रवेश कर चुका है। मोजतबा खामेनेई के लिए चुनौती दोहरी है: उन्हें न केवल अपने पिता की विरासत को सुरक्षित रखना है, बल्कि देश के भीतर पनप रहे असंतोष और बाहर से हो रहे सैन्य प्रहारों के बीच एक संतुलन बनाना है। ईरान की अगली चालों में सबसे महत्वपूर्ण उसका परमाणु कार्यक्रम होगा। अंतरराष्ट्रीय दबाव व हमलों के बावजूद, ईरान अब परमाणु हथियार की क्षमता को 'अंतिम सुरक्षा कवच' के रूप में देख रहा है। 2025-26 के इस कालखंड में ईरान का 90% तक यूरेनियम संवर्धन करना केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि एक भू-राजनीतिक ब्लैकमेलिंग का हथियार है, जो पश्चिम को सीधे टकराव से रोकने के लिए इस्तेमाल होगा। क्षेत्रीय स्तर पर, ईरान अपने 'एक्सिस ऑफ रेसिस्टेंस' यानी हिजबुल्लाह, हूती व हमास को नई ऊर्जा और आधुनिक हथियारों से लैस करेगा ताकि इजरायल-अमेरिकी ठिकानों पर दबाव बना रहे। होर्मुज जलडमरूमध्य की घेराबंदी ईरान का वह ब्रह्मास्त्र है, जिसे वह वैश्विक अर्थव्यवस्था को घुटनों पर लाने में इस्तेमाल कर सकता है।

इस भीषण उथल-पुथल के बीच भारत की स्थिति अत्यंत नाजुक और चुनौतीपूर्ण हो गई है। भारत के लिए ईरान केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि पश्चिम और मध्य एशिया तक पहुंचने का प्रवेश द्वार है। ईरान में इस तरह का नेतृत्व परिवर्तन और युद्ध की स्थिति भारत की 'स्ट्रेटेजिक ऑटोनोमी' यानी रणनीतिक स्वायत्तता की कड़ी परीक्षा है। भारत ने हमेशा से एक संतुलनकारी शक्ति की भूमिका निभाई है, जहां उसने एक तरफ इजरायल के साथ गहरे रक्षा संबंध बना रखे हैं, वहीं दूसरी तरफ ईरान के साथ चाबहार पोर्ट जैसे रणनीतिक निवेशों के जरिए अपनी कनेक्टिविटी को सुरक्षित किया है। खामेनेई के बाद यदि ईरान पूरी तरह से चीन और रूस के पाले में चला जाता है, जैसा कि वर्तमान संकेतों से लग रहा है, तो भारत के लिए अपनी स्वायत्तता बनाए रखना कठिन होगा। अमेरिका और इजरायल के साथ भारत की बढ़ती निकटता के बीच ईरान का नया कट्टरपंथी नेतृत्व नई दिल्ली को संदेह की दृष्टि से देख सकता है। यदि ईरान पर और कड़े प्रतिबंध लगते हैं या वह पूर्ण युद्ध में उलझता है, तो चाबहार बंदरगाह और 'इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर' जैसे प्रोजेक्ट ठंडे बस्ते में जा सकते हैं, जो भारत के लिए मध्य एशिया और यूरोप तक पहुंचने का सबसे छोटा और सस्ता रास्ता हैं। भारत की विदेश नीति के लिए यह वह समय है जब उसे 'गुटनिरपेक्षता 2.0' के सिद्धांतों पर चलते हुए यह सुनिश्चित करना होगा कि वह किसी एक पक्ष का मोहरा न बने। सामाजिक और सुरक्षा के दृष्टिकोण से देखें तो ईरान और पश्चिम के बीच बढ़ता तनाव भारत के भीतर के जनसांख्यिकीय संतुलन और प्रवासी सुरक्षा को भी प्रभावित करता है। पश्चिम एशिया में लाखों भारतीय काम करते हैं, जिनकी सुरक्षा और वहां से आने वाला प्रेषण भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यदि युद्ध फैला, तो उनकी सुरक्षित वापसी बड़ी लॉजिस्टिक चुनौती होगी।

अंततः, खामेनेई के बाद का ईरान एक ऐसा ज्वालामुखी है जिसके फटने का असर वाशिंगटन से लेकर नई दिल्ली तक महसूस किया जाएगा। मोजतबा खामेनेई और अहमद वाहिदी की जोड़ी ईरान को एक सैन्यीकृत धार्मिक शासन की ओर ले जा रही है, जो कूटनीति से अधिक शक्ति प्रदर्शन में विश्वास रखता है। भारत को ऐसे समयय में अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' को ढाल बना अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करनी होगी, भले ही इसके लिए उसे कठिन कूटनीतिक फैसले लेने पड़ें। उसे चाहिए कि वह ईरान के नए नेतृत्व के साथ अनौपचारिक माध्यमों से संवाद बनाए रखे और साथ ही अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को और मजबूत करे। ईरान का यह संकट वैश्विक व्यवस्था के पुनर्निर्धारण का संकेत है, और भारत को इस बदलती व्यवस्था में एक दर्शक के बजाय निर्णायक भूमिका निभानी होगी, ताकि उसकी ऊर्जा सुरक्षा और संप्रभुता पर आंच न आए। ईरान की अगली चालें केवल उसके भविष्य को ही नहीं, बल्कि भारत की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को भी नई दिशा देंगी।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

कुंभकर्ण एवं रावण के पिछले जन्म का रहस्य

संकलित
दर्शन

सनक, सनंदन, सनातन तथा सनतकुमार भगवान विष्णु से मिलने वैकुंठ लोक गए। वहां उनके द्वारपाल जय-विजय ने उन्हें अंदर जाने से रोक दिया और उनका अपमान किया। इससे क्रुद्ध होकर चारों मुनि कुमारों ने जय-विजय को पृथ्वी लोक पर असुर के रूप में जन्म लेने का शाप दे दिया। ऋषि कुमारों द्वारा शाप मिलने पर दोनों द्वारपालों को अपनी गलती का अहसास हुआ। वे दोनों उनके चरणों पर गिरकर पश्चाताप करने लगे और अपने अपराध के लिए क्षमा मांगने लगे। उसी समय वहां देवी लक्ष्मी सहित विष्णु पधारे। चारों मुनि कुमारों ने उन्हें प्रणाम किया। जय-विजय ने भगवान विष्णु को सास वृत्तांत सुनाया और प्रार्थना करते हुए कहा,'प्रभु हम पर दया करें। हमें शाप मुक्त करें।'भगवान विष्णु ने कहा, 'यह मेरे वश में नहीं है। ये चारों मुनि कुमार ही तुम्हें इस शाप से मुक्त कर सकते हैं।' मुनि कुमारों को दोनों द्वारपालों पर दया आ गई। उन्होंने जय-विजय से पूछा, 'आप सौ योनियों में जन्म लेकर भगवान विष्णु के भक्त बनकर जीने के बाद शाप मुक्त होना चाहेंगे या फिर तीन योनियों में भगवान के शत्रु बनकर जीने के बाद मुक्त होना चाहेंगे। दोनों ने कहा, 'सौ जन्म भगवान से दूर रहने की बजाय हम तीन जन्मों का ही चयन करेंगे।'जय और विजय ने असुरों के रूप में पहली योनि में हिरण्याक्ष तथा हिरण्यकशिपु, दूसरी योनि में कुंभकर्ण एवं रावण और तीसरी योनि में शिशुपाल तथा दंतवक्र के रूप में जन्म लिया। भगवान विष्णु ने नरसिंह, राम तथा कृष्ण का अवतार धारण कर उनका संहार कर शाप से मुक्ति दिलाई।

आपकी इच्छाशक्ति में सफलता का बीज

संकलित
प्रेरणा

दुर्बल इच्छाशक्ति एक सीमित इच्छाशक्ति है। जैसे ही कठिनाइयां और असफलताएं उसे नष्ट कर देती हैं, अनंत शक्ति के स्रोत से उसका संबंध टूट जाता है। अच्छे उद्देश्य के लिए इच्छाशक्ति के पीछे ईश्वर की इच्छाशक्ति होती है, जो कभी विफल नहीं हो सकती। यहां तक कि ईश्वर की इच्छाशक्ति को रोकने की शक्ति मृत्यु में भी नहीं है। जिस प्रार्थना के पीछे अनवरत इच्छाशक्ति हो, उस प्रार्थना का उत्तर प्रभु अवश्य देंगे। अधिकांश लोग जब कुछ ऐसा पाने की कोशिश कर रहे होते हैं, जिसका उनके लिए बहुत महत्व है, तो वे अत्यधिक अशांत या तनावग्रस्त हो जाते हैं। अधीर और अशांत कार्य ईश्वर की शक्ति को आकर्षित नहीं करते, परंतु इच्छाशक्ति का निरंतर शांत, शक्तिपूर्ण प्रयोग सृष्टि की शक्तियों को झकझोर देता है और अनंत से उत्तर प्राप्त करता है। आप जो कुछ भी करना चाहते हैं, उसकी सफलता का बीज आपकी इच्छाशक्ति में है। कठिनाइयों से बुरी तरह आहत हुई इच्छाशक्ति थोड़े समय के लिए पंगु हो जाती है, परंतु जो कृतसंकल्प मनुष्य यह कहता है, 'मेरा शरीर भले ही टूट जाए, परंतु इच्छाशक्ति रूपी मेरा सिर झुक नहीं सकता।' वह इच्छाशक्ति की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है। इच्छाशक्ति ही आपको दिव्य बनाती है। जब आप उस इच्छाशक्ति का प्रयोग करना बंद कर देते हैं, तो आप नश्वर मानव बन जाते हैं। बहुत-से लोग कहते हैं कि हमें अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग परिस्थितियों को बदलने के लिए नहीं करना चाहिए।

अंतर्मन

आज की पाती

शेयर धारकों को नुकसान

आजकल शेयर बाजार में गिरावट की खबरें सुर्खियों में हैं। इससे बहुत से लोगों को आर्थिक नुकसान भी हो रहा है। शेयर बाजार में ऐसी गिरावट काफी वर्षों बाद देखने को मिल रही है। इस गिरावट से बहुत से उन लोगों की उम्मीदें धराशायी हुई जिनका कारोबार ही शेयर बाजार पर निर्धारित है। शेयर कब औंधे मुंह गिरे, कोई पता नहीं, क्योंकि शेयर बाजार कंपनियों पर ही ज्यादा निर्भर होता है और कोई बड़ी कंपनी कब घाटे में चली जाए, यह पता नहीं चलता। दूसरा, शेयर बाजार दुनिया के किसी भी देश में होने वाले युद्ध से प्रभावित होते हैं। हमारे देश में कम लोग ही शेयर बाजार के बारे में जानते हैं, इसलिए यह कहना उचित होगा कि हमारे देश में शेयर बाजार में निवेश करना ही बेहतर विकल्प नहीं है। - रमेश कुमार साहू, रायपुर

ट्रेंड

अहम भूमिका निभाएगा तमिलनाडु

तमिलनाडु राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाएगा। हमारा सामूहिक लक्ष्य एक विकसित भारत के लिए एक विकसित तमिलनाडु है। तमिलनाडु एक तटीय राज्य है और इसमें विकास की अपार संभावनाएं हैं। लेकिन जब कांग्रेस और डीएमके पहले सत्ता में थी, तब वे निष्क्रिय थीं। -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

ममता को हटाना चाह रही जनता

तृणमूल पश्चिम बंगाल की जनसांख्यिकी में बदलाव कर इसे 'पश्चिम बांग्लादेश' बनाना चाहती है। राज्य का हर सही सोच रखने वाला नागरिक अब अपनी सुरक्षा और अस्तित्व के लिए ममता बनर्जी की इस सरकार को हटाना चाहता है। -धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय मंत्री

पिंक कार्ड से फ्री यात्रा

पिंक कार्ड से दिल्ली की महिलाओं को डीटीसी की बसों में मुफ्त यात्रा करने की सुविधा मिलेगी, साथ ही इसका उपयोग मेट्रो, क्षेत्रीय तीव्र पारगमन प्रणाली (आरआरटीएस) और अन्य सार्वजनिक परिवहन सेवाओं में सशुल्क यात्रा के लिए भी किया जा सकेगा। -रेखा गुप्ता, सीएम, दिल्ली

पीएम को देश से मतलब नहीं

भाजपा ने एक साल के शासन में राष्ट्रीय राजधानी को बर्बाद कर दिया। यहां की सड़कें टूटी हुई हैं, पानी भी दूषित है और वायु प्रदूषण के कारण लोगों को सांस लेने में परेशानी हो रही है। प्रधानमंत्री का देश से कोई मतलब नहीं है। -अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम, दिल्ली

करंट अफेयर

ईरान में सत्ता परिवर्तन के आसार कम

ईरान में गूंजे धमाकों ने पश्चिम एशिया को एक बार फिर युद्ध के मुहाने पर ला खड़ा किया है। अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हमलों के बाद यह सवाल खड़ा हो गया है कि क्या यह कार्रवाई सिर्फ सैन्य दबाव है या ईरान में सत्ता परिवर्तन की शुरुआत। इन हमलों के पैमाने से आपको क्या संकेत मिलता है? मुझे लगता है कि इन बड़े हमलों और क्षेत्र में कई हफ्तों से तैनात जहाजों तथा कुछ सैनिकों के जरिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनका प्रशासन ईरान में सत्ता परिवर्तन की कोशिश कर रहा है। मेरा अनुमान है कि अगले कुछ दिनों तक और हमले हो सकते हैं। शुरुआत में वे उस पारंपरिक रणनीति को अपनाएंगे जिसमें सेना के कमांड और नियंत्रण प्रणाली यानी सैन्य नियंत्रण के मुख्य केंद्रों को निशाना बनाया जाता है। मीडिया में आ रही खबरों से हमें पहले ही पता लग गया है कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के आवास पर हमला किया गया है। यहां अमेरिका की रणनीतिक अंतिम योजना क्या है? सत्ता परिवर्तन करना आसान नहीं होगा। आज ट्रंप ने ईरानी जनता से सरकार को गिराने की अपील की है लेकिन यह बहुत कठिन काम है। बिना हथियारों के लोग उस शासन को मुश्किल गिरा पाएंगे जो बहुत कड़े नियंत्रण में है और जिसके पास भारी हथियार हैं।

ऑफ बीट

विकसित भारत 2047 युवाओं की आकांक्षाओं पर आधारित

केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि 'विकसित भारत 2047' का विजन भारत के युवाओं की आकांक्षाओं में निहित है। उन्होंने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और भविष्य के लिए तैयार नवाचार से होने वाले बदलावों के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की। सिंह ने शनिवार को यहां पांचवें पी. परमेश्वरन स्मृति व्याख्यान में इस बात पर जोर दिया कि 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में भारत की यात्रा सशक्त युवा प्रतिभाओं, एक मजबूत अनुसंधान प्रणाली और साहसिक नीतिगत सुधारों पर आधारित होगी। विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री ने कहा कि 'विकसित भारत' देश के युवाओं को समर्पित है और केंद्र सरकार ने युवा सशक्तिकरण को शासन के केंद्र में रखा है। सिंह ने प्रमुख योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए विश्वविद्यालयों व संस्थानों में अनुसंधान संस्कृति को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना, साथ ही अटल नवाचार मिशन और अटल टिंकरिंग लैब का उल्लेख किया, जो स्कूली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक जिज्ञासा और नवाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। केंद्रीय मंत्री के अनुसार, भारत ने वैश्विक नवाचार सूचकांक में उल्लेखनीय प्रगति की है, जो नवाचार और अनुसंधान के केंद्र के रूप में इसकी बढ़ती प्रतिष्ठा को दर्शाती है।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

खामेनेई की हत्या पर लखनऊ में शिया मुसलमानों ने किया विरोध प्रदर्शन

फूट-फूटकर रोए लोग, कैंडल मार्च निकालेंगे, 3 दिन शोक मनाएंगे

इमाम ईदगाह ने कहा कि इजराइल और यूएस ने स्वतंत्र देश पर हमला किया, स्कूलों को भी नहीं छोड़ा

एजेंसी ▶▶ लखनऊ

राजधानी लखनऊ में रविवार को सुबह शिया समुदाय के लोग सड़कों पर उतर आए। रोते बिलखते हुए नारेबाजी शुरू कर दी। यहां तक कि महिलाएं भी सड़कों पर रोते दिखीं। छोटे इमामबाड़े के पास बड़ी संख्या में शिया समुदाय के लोग एकत्र हो गए। इस्लामिक सेंटर आफ इंडिया के अध्यक्ष एवं इमाम ईदगाह मौलाना खालिद रशीद ने कहा कि इस्त्राइल और यूएस ने मिलकर एक स्वतंत्र देश ईरान पर हमला किया, उन्होंने स्कूलों को भी नहीं छोड़ा। इसकी हम निंदा करते हैं। वहीं शिया चांद कमेटी के अध्यक्ष मौलाना सैफ़ अब्बास नक़वी ने कहा कि खामेनेई दुनिया के सभी मुसलमानों का ख्याल रखने वाले नेता

खामेनेई की हत्या के विरोध में प्रदर्शन करते लोग

प्रतिष्ठान बंद रख श्रद्धांजलि अर्पित की

आयतुल्ला ख़ामेनई की शहादत पर घोषित 3 दिवसीय शोक के तहत शिया समुदाय के लोग अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की । इस संबंध में मौलाना कल्बे जवाद ने तमाम उम्मते मुस्लिमा और इंसानियत परस्त लोगों से शोक में शामिल होने की अपील की थी। उन्होंने बताया कि रविवार रात 8 बजे छोटे इमामबाड़े में शोकसभा आयोजित की गई, जिसके बाद कैंडल मार्च निकाला गया।

उत्तर प्रदेश में हाई अलर्ट जारी

लखनऊ में भी शिया समुदाय के लोग सड़कों पर उतर आए। उत्तर प्रदेश में हाई अलर्ट जारी किया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार सुबह बैठक में सभी जिलों को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। इसके तहत लखनऊ समेत प्रदेश के विभिन्न जिलों में पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों की निगरानी बढ़ा दी गई है।

ओखला विहार में अमेरिका और इजराइल पर फूटा गुस्सा

लोगों ने की नारेबाजी, भारी पुलिस बल तैनात रहा

नई दिल्ली। ईरान पर इजराइली और अमेरिका ने मिलकर हमला किया। जिसमें ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत हो गई। खामेनेई की मौत के बाद भारत के कई राज्यों में विरोध प्रदर्शन तेज हो गए हैं। दिल्ली के जामियानगर इलाके के ओखला विहार में शिया समुदाय के करीब 100 से 150 लोग इकट्ठा हुए। इन लोगों ने अमेरिका ओर इजराइली के खिलाफ नारेबाजी की।

'इजराइल मुर्दाबाद अमेरिका मुर्दाबाद'

प्रदर्शन के दौरान लोगों ने इजराइल और अमेरिका के खिलाफ जमकर नारे लगाए। इजराइल मुर्दाबाद और अमेरिका मुर्दाबाद के नारे गूंजते रहे। कई लोग हाथों में तख्तियां और बैनर लिए हुए थे, जिन पर विरोध के संदेश लिखे थे। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि वे ईरान के साथ हैं।

खबर संक्षेप

अविमुक्तेश्वरानंद के बचाव में उतरे सदानंद

मथुरा। द्वारिका शारदापीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती ने स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद

सरस्वती पर लगे आरोपों को पूरी तरह खारिज किया है। उन्होंने कहा कि यह एक सुनियोजित राजनीतिक साजिश है। सनातन धर्म के आचार्यों को बदनाम करने की कोशिश की जा रही है। वे गोहत्या जैसे मुद्दों को उठाते हैं।

सीतापुर में 13 शिक्षकों को किया बर्खास्त

सीतापुर। यहां 13 शिक्षकों को बर्खास्त कर दिया गया है। सभी फर्जी प्रपत्र लगाकर नौकरी कर रहे थे। वर्ष 2024 में तैनाती मिली थी। सत्यापन के बाद शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया था। ये टीईटी का फर्जी प्रमाण पत्र लगाकर नौकरी कर रहे थे। बीएसए ने खंड शिक्षा अधिकारियों को एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए हैं।

हिंदू बन 200 लोगों से की डेढ़ करोड़ की ठगी

गोंडा। रूस भेजकर नौकरी दिलाने के नाम पर दस जिलों के 200 लोगों से करीब डेढ़ करोड़ की ठगी करने के मुख्य आरोपित शमशाद उर्फ विवेक को कोलकाता पुलिस ने गिरफ्तार किया है। वह बिहार जिले के चंपारण का रहने वाला है। शमशाद ने हिंदू बन लोगों को ठगी के जाल में फंसाया है। पुलिस छापेमारी कर रही है।

6 लोग जहरीली गैस का शिकार, 3 की मौत

हाजीपुर। सराय थाना क्षेत्र अंतर्गत अनवरपुर गांव में शौचालय के टंकी के गैस से आधा दर्जन से अधिक लोग मूर्छित हो गए। डॉक्टर ने 3 लोगों को मृत घोषित कर दिया।मौके पर अफरातफरी मच गई। सराय थाना की पुलिस ने लोगों की मदद से सभी को आनन-फानन सदर अस्पताल पहुंचाया गया।

पीएम मोदी ने 2 राज्यों को दी करोड़ों की सौगात, परियोजनाओं का किया उद्घाटन-शिलान्यास

कनेक्टिविटी में आएगी क्रांति, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा, रोजगार बढ़ेंगे और लोगों का जीवन बदलेगा

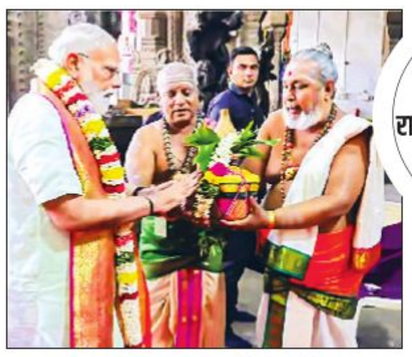

मदुरै में पूजन करते पीएम मोदी

तमिलनाडु में दो प्रमुख राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखी

पीएम मोदी ने कहा- एक दशक में रेल और सड़क मार्गों में हुआ ऐतिहासिक परिवर्तन

एजेंसी ▶▶ मदुरै

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को तमिलनाडु के मदुरै में एक सभा को संबोधित किया। पीएम नरेंद्र मोदी ने तमिलनाडु में चल रहे विकास कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि पिछले दशक में भारतीय रेलवे ने एक ऐतिहासिक परिवर्तन देखा है, जिसका प्रभाव विशेष रूप से तमिलनाडु में स्पष्ट है। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में रेलवे बजट आवंटन में 9 गुना वृद्धि हुई है। 1300 किलोमीटर से अधिक नई रेलवे लाइनें बिछाई गई हैं, 97 फीसदी विद्युतीकरण हासिल किया गया है और सैकड़ों फ्लाईओवर व अंडरपास का निर्माण किया गया है, जिससे सुरक्षा और दक्षता में सुधार हुआ है। पीएम मोदी ने यह भी बताया कि पिछले 12 वर्षों में भारत सरकार ने तमिलनाडु के राजमार्ग नेटवर्क में भारी निवेश किया है। 2014 से यहां 4,000 किलोमीटर से अधिक राजमार्गों का निर्माण किया गया है। दो प्रमुख राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखते हुए उन्होंने कहा कि यह तीर्थयात्रियों के लिए यात्रा को सुगम बनाएगा और कृषि उपज तथा समुद्री उत्पादों के सुचारू आवागमन को सुनिश्चित करेगा।

1300 किमी रेल लाइनों, 97 फीसदी विद्युतीकरण और 4,000 किमी से अधिक राजमार्गों के निर्माण से लोगों की यात्रा सुगम व सुचारू होगी

4,400 करोड़ रुपए से अधिक की परियोजनाओं का लोकार्पण

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कुल मिलाकर, 4400 करोड़ रुपए से अधिक की परियोजनाओं का शिलान्यास, उद्घाटन और राष्ट्र को समर्पित किया गया है। इन परियोजनाओं से कनेक्टिविटी में क्रांति आएगी, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा, रोजगार सृजित होंगे और लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आएगा। इससे किसानों को बाजार तक पहुंचने के लिए बेहतर सड़कें मिलेंगी, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की यात्रा आसान होगी, और व्यवसायों के लिए परिवहन तेज होगा।

पीएम मोदी ने इन परियोजनाओं का किया शिलान्यास

- एनएच मार्गों के मराक्कनम-पुडुचेरी, परमकुडी-रामनाथपुरम खंडों को 4-लेन बनाने की आधारशिला रखी।
- 3 नए आकाशवाणी एफएम रिले ट्रांसमीटरों का उद्घाटन किया। 8 पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों का भी उद्घाटन किया।

2,700 करोड़ की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ, 'बीईएसटी पुडुचेरी'

पुडुचेरी को दी बड़ी सौगात

प्रधानमंत्री ने रविवार को पुडुचेरी में 2,700 करोड़ की कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इनमें इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, नागरिक सुविधाओं के विस्तार, औद्योगिक प्रगति, शिक्षा, विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवा और सस्टेनेबल ग्रोथ को गति देने वाले प्रेजेक्ट थे।

एनडीए सरकार पुडुचेरी के विकास को और गति देगी

पीएम मोदी ने कहा कि पुडुचेरी ने प्रति व्यक्ति आय में शानदार बढ़ोतरी दिखाई है। इसने देश में सबसे ज्यादा सामाजिक प्रगति सूचकांक स्कोर भी हासिल किया है।एनडीए सरकार पुडुचेरी के विकास को और गति देगी।

नए भवनों और छात्रावासों का लोकार्पण किया

पीएम मोदी ने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, एपीजे अब्दुल कलाम इंजीनियरिंग ब्लॉक और गंगा हॉस्टल, क्षेत्रीय कैंसर केंद्र का लोकार्पण किया।

करासूर-सेदरापेट औद्योगिक क्षेत्र को राष्ट्र को समर्पित किया

उन्होंने 750 एकड़ में फैले करासूर-सेदरापेट औद्योगिक क्षेत्र को राष्ट्र को समर्पित किया। स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित करने व जल आपूर्ति प्रणालियों में सुधार के उद्देश्य से अलग-अलग जल आपूर्ति परियोजनाओं की आधारशिला रखी गई।

मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस आज से

भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे सिंधिया, भारत पैवेलियन शुरू करेंगे

नई दिल्ली। स्पेन के बार्सिलोना में 2 से 5 मार्च तक होने वाले मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं और केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस (एमडब्ल्यूसी) 2026 में भारत की भागीदारी का नेतृत्व करेंगे। एमडब्ल्यूसी दुनिया के सबसे बड़े और सर्वाधिक प्रभावशाली टेक्नोलॉजी और मोबाइल सम्मेलनों में से एक है। संचार मंत्री अपनी यात्रा के दौरान एमडब्ल्यूसी 2026 में भारत पैवेलियन का उद्घाटन भी करेंगे। यह पैवेलियन भारत की बढ़ती दूरसंचार निर्माण क्षमताओं और नवोन्मेष पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदर्शित करने के लिए वैश्विक मंच मुहैया कराएगा। भारत की मेजबानी में आयोजित सीईओ डिनर में वैश्विक मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के साथ विचार विमर्श करेंगे जिनमें सहभागी नवोन्मेष और भरोसेमंद साझीदारियों के लिए भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया जाएगा। वह प्रमुख वैश्विक और भारतीय कंपनियों के बूथों और प्रौद्योगिकी प्रदर्शनों में भी जाएंगे।

सत्र का मंत्र 'भविष्य के लिए निर्माण'

सिंधिया मुख्य मंच के सत्र 'भविष्य के लिए निर्माण' के दौरान जीएसएमए मंत्रिस्तरीय कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। इसमें वैश्विक नेता डिजिटल अवसंरचना और उभरते प्रौद्योगिकी फ्रेमवर्क पर चर्चा करेंगे। सिंधिया जीएसएमए मंत्रिस्तरीय मंच पर 'ब्रेकिंग द कॉस्ट बैरियर' विषय पर सत्र में मुख्य समापन भाषण देंगे। यह सेशन दुनिया के लिए किफायती, समावेशी और मापनीय डिजिटल कनेक्टिविटी मॉडलों पर केंद्रित होगा। वह इंडिया मोबाइल कांग्रेस 2026 की पूर्व-प्रस्तुति का भी अनावरण करेंगे। आईएमसी की विशेषताओं पर प्रकाश डालेंगे।

मोदी सरकार की विदेश नीति बेनकाब, देश चुका रहा भारी कीमत

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और महासचिव (संचार) जयराम ने रमेश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र सिंह मोदी की विदेश नीति पर तीखा हमला बोलते हुए कहा है कि 'स्वयंभू विश्वगुरु' के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति पूरी तरह बेनकाब हो चुकी है और देश को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है।

सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी बयान में रमेश ने कई बिंदुओं पर केंद्र सरकार को घेरा और अमेरिका, पाकिस्तान, चीन तथा पश्चिम एशिया से जुड़े घटनाक्रमों का हवाला दिया।

अमेरिका–पाकिस्तान संबंधों पर सवाल : कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड को ट्रंप लगातार पाकिस्तान के साथ नजदीकियां बनाए हुए हैं और ऐसे व्यक्तियों की सराहना कर रहे हैं, जिनके 'भड़काऊ बयानों' ने 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमलों की पृष्ठभूमि तैयार की।

कांग्रेस का आरोपः 'ऑपरेशन सिंदूर' और टैरिफ विवाद

रमेश ने दावा किया कि अमेरिकी राष्ट्रपति सौ से अधिक बार यह कह चुके हैं कि उन्होंने 10 मई 2025 को भारत के निर्यात पर टैरिफ बढ़ाने की धमकी देकर 'ऑपरेशन सिंदूर' को रुकवाने में भूमिका निभाई।

कांग्रेस का कहना है कि इन दावों पर प्रधानमंत्री मोदी मौन हैं। रमेश के अनुसार, 10 मई 2025 को शाम 5:37 बजे अमेरिकी विदेश मंत्री ने इस ऑपरेशन को रोकने की घोषणा की थी।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर निशाना कांग्रेस नेता ने 2 फरवरी को घोषित भारत–अमेरिका व्यापार समझौते को "हताश पहल" करार दिया। उन्होंने कहा कि अठारह दिन बाद अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति ट्रंप की टैरिफ रणनीति को अवैध और असंवैधानिक ठहरा दिया, जो इस समझौते की बुनियाद थी। रमेश के अनुसार, यह समझौता एकतरफा माना जा रहा है, जिसमें भारत ने कृषि उत्पादों के आयात को उदार बनाने के वादे किए हैं, जबकि अमेरिका की ओर से समान प्रतिबद्धता स्पष्ट नहीं है। रूस से तेल खरीद बंद करने के मुद्दे पर भी सरकार ने स्पष्ट रुख नहीं अपनाया है।

इजराइल दौरा और ईरान पर हमला : कांग्रेस ने 25–26 फरवरी को प्रधानमंत्री के इजराइल दौरे का भी उल्लेख किया। बयान में कहा गया कि प्रधानमंत्री के इजराइल से लौटने के दो दिन बाद अमेरिका–इजराइल द्वारा ईरान पर सैन्य कार्रवाई शुरू हो गई। कांग्रेस ने इसे भारत के मूल्यों और सिद्धांतों के विपरीत बताते हुए कहा कि सरकार की प्रतिक्रिया "नैतिक कायरता" का प्रदर्शन है।

चीन मुद्दे पर भी उठाए सवाल : रमेश ने 19 जून 2020 के प्रधानमंत्री के उस बयान का जिक्र किया, जिसमें चीन को लेकर टिप्पणी की गई थी। कांग्रेस का आरोप है कि इस बयान ने भारत की वार्ता स्थिति को कमजोर किया और अब संबंधों को चीन की शर्तों पर सामान्य बनाने का दबाव है।

शादी के बाद तिरुपति पहुंचे रश्मिका-विजय

भगवान वेंकटेश्वर का आशीर्वाद लिया

तिरुपति। 26 फरवरी को रश्मिका मांदाना और विजय देवकोंडा ने उदयपुर में शादी कर ली है। पति-पत्नी बन चुके रश्मिका-विजय ने रविवार को आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुमाला पहाड़ियों पर स्थित तिरुपति बालाजी (वेंकटेश्वर स्वामी) मंदिर के दर्शन कर नए शादीशुदा जीवन के लिए आशीर्वाद लिया है।उनका यह वीडियो फैंस के बीच काफी पसंद किया जा रहा है।

पेंट करने वाला प्लांट आग की चपेट में आया

अलवर की फैक्ट्री में जिंदा जलने से बचे 30 मजदूर, निकले बाहर

एजेंसी ▶▶ अलवर

अलवर में ट्रक-बस बनाने वाली कंपनी अशोक लीलैंड के प्लांट में आग लग गई। फैक्ट्री के जिस हिस्से में आग लगी वहां 30 से ज्यादा वर्कर काम कर रहे थे। प्लांट के इस एरिया में ट्रक-बसों पर पेंट किया जाता है। आग भड़कने के कुछ मिनटों में ही लोगों को बाहर निकाल दिया गया था।

हादसा शनिवार रात करीब 10.30 बजे मत्स्य इंडिस्ट्रियल एरिया में हुआ। करीब एक से डेढ़ घंटे बाद फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पा लिया। फकर्मचारियों ने बताया कि प्लांट के गेट नंबर दो पर कुछ हिस्से में अचानक आग लगी थी। कुछ मिनटों बाद आग की लपटें 300 मीटर दूर तक से भी दिखाई दे रही थीं। आग के कारणों को लेकर अभी कुछ जानकारी सामने नहीं आई है।

30 लाख से ज्यादा का नुकसान

अलवर के फायर ऑफिसर अमित मीणा ने बताया- प्लांट के जिस हिस्से में आग लगी, उसके पास ही बसों और ट्रकों की कई चेचिस रखी हुई थी। हालांकि आग इस हिस्से तक नहीं आई। वहीं, अनुमान है कि आग से करीब 30 लाख रुपए का नुकसान हो गया।

बंगाल की सड़कों पर भाजपा ने शुरू किया 5,000 किमी लंबा शक्ति प्रदर्शन

सभी 294 विधानसभा क्षेत्रों में जाएगी, 280 जनसभाएं होंगी

यात्रा में एक करोड़ से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा

एजेंसी ▶▶ कोलकाता

राज्यव्यापी 'परिवर्तन यात्रा'

पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारी के बीच भाजपा ने रविवार से राज्यव्यापी 'परिवर्तन यात्रा' की शुरुआत कर दी है। पार्टी इस अभियान के जरिए तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सरकार के खिलाफ जनमत को संगठित करने, जमीनी स्तर पर संगठन को सक्रिय करने और चुनाव से पहले व्यापक जनसंपर्क स्थापित करने की रणनीति पर काम कर रही है। परिवर्तन यात्रा करीब 5,000 किलोमीटर की दूरी तय करेगी और राज्य के सभी 294 विधानसभा क्षेत्रों को कवर करेगी। इस दौरान 63 बड़ी सार्वजनिक सभाएं और 280 जनसभाएं आयोजित की जाएंगी।

9 स्थानों से एक साथ शुरुआत की, 63 सभाएं भी होंगी

रैली को हरी झंडी दिखाते जेपी नड्डा

पार्टी का दावा है कि इस यात्रा में एक करोड़ से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस पहल को एक बड़े पैमाने पर लोगों से जुड़ने, अभियान और संगठनात्मक क्षमता की परीक्षा दोनों के रूप में तैयार किया गया है, ताकि बूथ स्तर की तैयारी को बड़े जनसमर्थन में बदला जा सके। परिवर्तन यात्रा राज्य के 9 अलग-अलग स्थानों कूचबिहार, कृष्णानगर, कुल्टी, गरबेटा, रैदिघी, इस्लामपुर, हसनाबाद, संदेशखाली और आमता से शुरू हुई है। कृष्णानगर के दिगनगर पंचायत मैदान, सर्वमंगला मंदिर में सभा की।

भाजपा अध्यक्ष नबीन का आरोप

ममता दीदी ने फर्जी दस्तावेज हासिल करने में की घुसपैठियों की मदद

बंगाल में विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा ने अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं। भाजपा ने रासमेला मठ,कूचबिहार से परिवर्तन यात्रा शुरू की है। भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन ने आज इस यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान नबीन ने टीएमसी और सूबे की मुखिया ममता बेनर्जी पर निशाना साधा।

संपादकीय जागरण

सोमवार, 2 मार्च, 2026 : फाल्गुन शुक्ल - 14 वि. 2082

धर्म मानवता का प्राण है

अनिश्चितता से घिरा ईरान

इजरायल-अमेरिका की संयुक्त सैन्य कार्रवाई में ईरान के सर्वोच्च शासक एवं मजहबी नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद वहां नेतृत्व परिवर्तन तो हो गया, लेकिन यह कहना कठिन है कि सत्ता परिवर्तन भी हो जाएगा, जो कि अमेरिकी राष्ट्रपति का लक्ष्य है। एक तो ईरान वेनेजुएला नहीं है और न ही वहां शासन एवं सेना को नियंत्रित करने वाले तंत्र में फिलहाल किसी असहमति और विद्रोह के आसार दिख रहे हैं। इसका प्रमाण यह है कि खामेनेई के स्थान पर अंतरिम नेतृत्व के नाम की घोषणा कर दी गई है एवं ईरानी सेना और विशेष रूप से रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के कमांडर इजरायल-अमेरिका के हमले का जवाब देने के साथ ही खामेनेई की मौत का बदला लेने की धमकी भी दे रहे हैं। ईरानी सेना जिस तरह इजरायल को निशाना बनाने के साथ सऊदी अरब, कतर, जार्डन, ओमान, बहरीन, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात आदि जगह अमेरिकी सैन्य ठिकानों के साथ नागरिक क्षेत्रों को निशाना बना रही है, उससे यही स्पष्ट होता है कि वह आसानी से हार नहीं मानने वाली। ईरानी सेना ने जिस तरह पड़ोसी देशों में नागरिक ठिकानों पर भी हमले किए, उससे पश्चिम एशिया में तनाव और बढ़ेगा। इसका असर भारत समेत पूरी दुनिया पर पड़ेगा, क्योंकि यह क्षेत्र विश्व को ऊर्जा की आपूर्ति का बड़ा स्रोत है। ईरानी सेना के प्रतिरोध के बावजूद तथ्य यही है कि वह इजरायल और अमेरिका की सैन्य क्षमता का लंबे समय तक सामना नहीं कर सकती।

इस पर आश्चर्य नहीं कि खामेनेई की मौत के बाद जहां आम तौर पर शिया जगत में आक्रोश है, वहीं ईरान में जनता का एक वर्ग खुश है। इसका कारण यही है कि करीब 40 वर्षों से सत्ता पर काबिज रहने के दौरान उन्होंने निरंकुशता से शासन किया और अपने लोगों पर कठोर मजहबी मान्यताएं थोपीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिजबुल्ला, हमास एवं हाउती जैसे संगठनों की हर तरह से मदद की। इससे इजरायल और अमेरिका का ईरान से का बैर बढ़ा। इसमें संदेह नहीं कि ईरान पर इजरायल और अमेरिका का हमला वैध नहीं। यह हमला कुल मिलाकर अमेरिका की मनमानी का ही परिचायक है, लेकिन जो स्थिति बनी उसके लिए ईरानी सत्ता की हठधर्मिता भी उत्तरदायी है। ईरान येन-केन -प्रकारेण परमाणु हथियार बनाने की जुगत में लगा हुआ था। यदि ईरानी सत्ता ने परमाणु हथियार कार्यक्रम को लेकर अड़ियल रुख का परिचय नहीं दिया होता तो संभवतः कूटनीतिक वार्ताओं के माध्यम से कोई हल निकल सकता था। कहना कठिन है कि ईरान का भविष्य क्या है, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि एक समय आधुनिकता का वरण करने वाला यह देश पुरातनपंथी मजहबी कट्टरता में जकड़ गया था और इसी कारण ईरानी जनता के एक वर्ग के साथ पश्चिमी जगत में ईरानी शासन के प्रति विरोध बढ़ता जा रहा था।

स्थायी प्रबंध जरूरी

राजधानी में चांदनी चौक और सदर बाजार जैसे प्रमुख बाजारों में रेहड़ी-पटरी वालों का अतिक्रमण निराशाजनक है। मामला तब और भी गंभीर हो जाता है, जब ये सामने आता है कि हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट से भी इन बाजारों के फुटपाथों को अतिक्रमणमुक्त करने के निर्देशों के बावजूद इनमें अतिक्रमण व्याप्त है। इसे लेकर कारोबारियों का चिंतित होना लाजिमी है। कारोबारियों ने रेहड़ी-पटरी वालों के कारण कारोबार को हो रहे नुकसान और खरीदारों को हो रही परेशानियों को लेकर एक बार फिर चिंता जताई है।

राजधानी के प्रमुख बाजारों में अतिक्रमण की समस्या चिंता का विषय है, जिम्मेदारों को इसका स्थायी समाधान करना चाहिए

इन बाजारों के कारोबारियों का कहना है कि रेहड़ी-पटरी वालों में बड़ी संख्या में बांग्लादेशी घुसपैठिये भी हैं, जिससे स्थिति और गंभीर हो जाती है। कारोबारियों ने अपनी चिंताओं को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री को पत्र लिखा है और होली के बाद नए सिरे से इनके खिलाफ आंदोलन शुरू करने का एलान किया है। राजधानी के इन प्रमुख बाजारों में अतिक्रमण वर्षों से एक बड़ी परेशानी बना हुआ है। निश्चित तौर पर इनसे कारोबारियों को व्यवसाय में नुकसान हो रहा है, वहीं यहां दूर-दूर से आने वाले खरीदारों के लिए भी रेहड़ी-पटरी वाले बड़ी परेशानी बनते हैं। यही नहीं, बाजार में कोई घटना घटने पर यदि भगदड़ जैसी स्थिति बनती है तो बड़ी संख्या में लोगों की जान जा सकती है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या पश्चिम एशिया में युद्ध का नया मोर्चा भारत की भी समस्याएं बढ़ाने का काम करेगा?

आज का सवाल

क्या खामेनेई की मौत के बाद ईरान में सत्ता परिवर्तन आसान होगा?

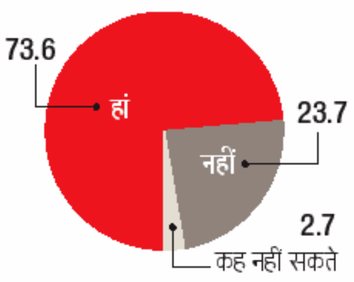

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

खामेनेई के बाद ईरान का भविष्य

डा. मनिष दभाडे

ईरान में सत्ता-परिवर्तन तब आसानी से संभव है जब वह चरणबद्ध ढंग से हो एवं आंतरिक उत्प्रेरणा से उपजे। बाहरी दबाव से प्रतिरोध और बढ़ेगा

इजरायल ने अमेरिका के साथ साझा अभियान में ईरान पर हमला बोल ही दिया। हमले के शुरुआती दौर में ही ईरान के शीर्ष नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत से दोनों देशों ने अपने इरादे पूरी तरह जाहिर कर दिए थे। स्पष्ट है कि उन्होंने ईरान में विध्वंस ही नहीं, बल्कि सत्ता परिवर्तन की जिद को अपना लक्ष्य बना लिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तो ईरान की जनता का आह्वान तक कर दिया है कि अपने देश की कमान अपने हाथ में लीजिए और ऐसा मौका फिर पता नहीं कब मिले। देखा जाए तो ईरान पर यह हमला किसी आसन्न खतरे से अधिक अमेरिकी सत्ता प्रतिष्ठान के राजनीतिक गुणा-गणित, इजरायल की सुरक्षा चिंताओं और तथाकथित डोनरो सिद्धांत की आक्रामक महत्वाकांक्षाओं का परिणाम है। डोनरो सिद्धांत के जरिये ट्रंप अमेरिकी प्रभुत्व का व्यापक विस्तार करना चाहते हैं। साल की शुरुआत में वेनेजुएला में तख्तापलट और ग्रीनलैंड को लेकर कड़े तेवर इसी रणनीति का हिस्सा रहे हैं। इसी कड़ी में अब ईरान पर बड़ा हमला किया गया है।

अब अमेरिकी एजेंडा ईरान में सत्ता परिवर्तन का भले हो, लेकिन इतिहास साक्षी है कि जहां समाज, सेना और राज्य-सत्ता की जड़ें गहरी हों, वहां केवल बाहरी बमबारी से सत्ता की संरचना को नहीं बदला जा सकता। खामेनेई की मौत के संदर्भ में ट्रंप प्रशासन शीर्ष नेतृत्व के सफाए और वास्तविक सत्ता परिवर्तन के बीच के अंतर को या तो समझ नहीं पाया या फिर उसे अनदेखा कर रहा है। याद रहे कि ईरानी इस्लामी गणराज्य कोई एक व्यक्ति की तानाशाही नहीं, बल्कि समानांतर संस्थाओं वाला एक हाइब्रिड माडल है। यह माडल सर्वोच्च नेता के ऊपर सैद्धांतिक वैधता के छत्र तले रिवोल्यूशनरी गार्ड यानी आइआरजीसी, बसीज मिलीशिया, गार्जियन काउंसिल, विशेषज्ञ सभा, न्यायपालिका और विशाल धार्मिक-आर्थिक ट्रस्टों के संजाल से मिलकर बनता है। यह राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं पर नियंत्रण रखते हुए दमन का सहारा भी लेता है। इस संरचना के एक सिरे को उड़ा देने भर से यह समाप्त नहीं होती, बल्कि और खतरनाक रूप भी ले लेती है।

वर्तमान परिस्थितियों में ईरान में जो संभावित परिदृश्य आकार लेते दिख रहे हैं, उसमें संभव है कि किसी प्रतीकात्मक धर्मगुरु को केंद्र में रखते हुए आइआरजीसी ही कमान अपने हाथ में ले। इस तरह मुल्ला-राज की जगह सैन्य-राज शुरू होगा और व्यवस्थागत तानाशाही जस की तस रहेगी। दूसरे परिदृश्य में संभव है कि आइआरजीसी

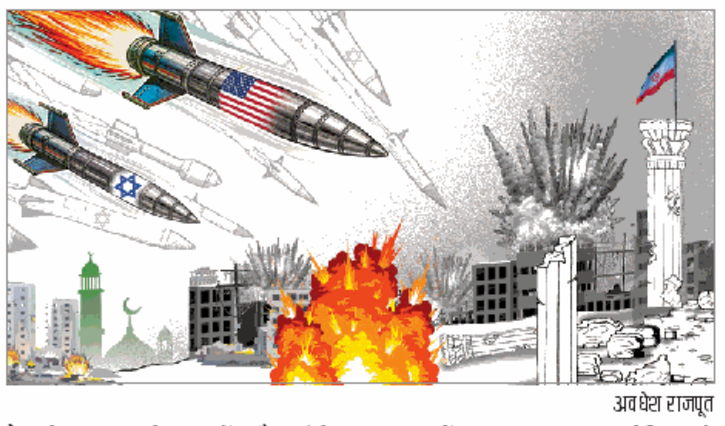

अवधेश राजपूत

के भीतर मजहबी ताकतों और प्रांतीय कमांडरों के बीच लंबी खींचतान और गुटीय संघर्ष की स्थिति बने, जिसमें अस्पष्ट सत्ता साझेदारी और हिंसक अस्थिरता कायम रह सकती है। तीसरी स्थिति जनविद्रोह की भी दिखती है जिसमें जनवरी में हुए व्यापक प्रदर्शनों और अब खामेनेई की हत्या से उपजी भावनाओं के बल पर कोई नया राजनीतिक संतुलन बनाने की जुगत हो सकती है। हालांकि सांगठनिक ढांचे का अभाव और नेतृत्व के स्तर पर निर्वात से यह संभावना कमजोर ही दिखती है। चौथी स्थिति चारों तरफ अफरा-तफरी फैलने की भी हो सकती है। हालांकि इसके आसार अभी बहुत कम दिखते हैं, लेकिन यदि ऐसा हुआ तो क्षेत्रीय एवं वैश्विक व्यवस्था के लिए इसके परिणाम बहुत घातक होंगे।

पुराने अनुभव यही बताते हैं कि हवाई हमलों से परमाणु ठिकाने नष्ट किए जा सकते हैं, प्रतिद्वंद्वी सेना को निस्तेज किया जा सकता है, नेताओं की हत्या की जा सकती है, लेकिन राज्य की आंतरिक राजनीतिक संरचना को पूरी तरह नहीं बदला जा सकता। लीबिया को छोड़कर कोई उदाहरण याद नहीं आता, जहां केवल हवाई हमलों और सीमित जमीनी दखल से स्थिर एवं लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था स्थापित हुई हो। हालांकि आज वह भी अव्यवस्था का शिकार है। उसके उलट ईरान को देखें तो प्रतिरोध को लेकर उसका लंबा इतिहास रहा है। वह अपेक्षाकृत साधन संपन्न भी है। जब 1980-88 के युद्ध में लाखों जानें गंवा कर भी उसने झुकने से इन्कार किया था तो क्या वह अब अपने शीर्ष नेता को मार गिराए जाने से समर्पण कर देगा? ईरानी समाज की अंतर्वस्तु भी कुछ और कहानी कहती है। 1979 के बाद पैदा हुई तीन चौथाई आबादी के लिए इस्लामी गणराज्य का अनुभव राजनीतिक दमन के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक नियंत्रण का भी रहा है। क्या पहनें, क्या सुनें, क्या पढ़ें, किससे प्रेम करें, किससे विवाह करें, इन सब पर निगरानी। इसकी प्रतिक्रिया में यह समाज आज पश्चिम एशिया में कुछ सेक्युलर दिखता है। जनता के एक वर्ग में अमेरिका विरोधी भावनाएं भी कम हैं। इसके बावजूद असंतोष और लोकतांत्रिक संक्रमण के बीच गहरी खाई कायम है, जिसे केवल बाहरी बमबारी से नहीं पाटा जा सकता।

ईरान ने बहरीन, कतर, कुवैत और यूएई में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले कर अपनी प्रतिशोधी क्षमता का संकेत दिया है और होर्मुज स्ट्रेट में तेल की आवाजाही पर ग्रहण लगा दिया है। अरब देशों के शासक ईरानी प्रभाव से कभी खुश नहीं रहे, क्योंकि उन्हें आशंका सताती रही है कि अराजक ईरान पूरी पश्चिम एशियाई व्यवस्था को अस्थिर कर देगा। तेल बाजारों में हलचल, वैश्विक महंगाई पर दबाव और अफगानिस्तान-इराक-सीरिया के बाद एक और लंबे युद्ध से आजिज आ चुके अमेरिकी समाज जैसे पहलू इन हालात को और नाजुक बना देते हैं।

विकल्पों की बात करें तो स्थिति बहुत आश्वस्तकारी नहीं है। रजा पहलवी जैसी निर्वासन में रह रहे व्यक्तित्व प्रतीकात्मक आकर्षण तो रखते हैं और स्वतंत्र चुनाव में वे बेहतर प्रदर्शन भी कर पाएं, लेकिन उनके पास न जमीनी संगठन है और न कोई कारगर गठबंधन। इसलिए बेहतर यही होगा कि ईरान में आक्रामक सत्ता परिवर्तन अभियान के बजाय वहां लोक-शक्ति, दीर्घकालिक संस्थागत सुधार और क्षेत्रीय कूटनीति के बीच संतुलन के सोच को मजबूत किया जाए। ईरान में सत्ता परिवर्तन का वास्तविक पड़ाव अवश्य आएगा, पर बात तभी बनेगी जब यह चरणबद्ध एवं आंतरिक उत्प्रेरणा से उपजे। एकाएक बाहरी दबाव अराजकता को ही बढ़ाएगा।

(लेखक जेएनयू में एसोसिएट प्रोफेसर और 'द इंडियन फ्यूचर्स' के संस्थापक हैं)
response@jagran.com

मुकदमों का बोझ बढ़ाती सरकार

डा. ब्रजेश कुमार तिवारी

प्रशासनिक तंत्र की जवाबदेही तय कर एवं न्यायिक नियुक्तियों में तेजी लाकर अदालतों में लंबित मामले कम कर सकते हैं

त्वरित न्याय देने की चुनौती ● फाइल

भारत की न्याय व्यवस्था आज केवल लंबित मुकदमों की समस्या तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह न्याय-क्षमता और शासन-क्षमता के बीच बढ़ते असंतुलन की एक बड़ी कहानी बन गई है। दिसंबर 2025 तक के आंकड़े दर्शाते हैं कि पिछले पांच वर्षों में जिला एवं अधीनस्थ अदालतों में लंबित मामलों की संख्या लगभग 4.11 करोड़ से बढ़कर 4.80 करोड़ हो गई है। इसी अवधि में उच्च न्यायालयों में लंबित मामले 53.1 लाख से बढ़कर 63.3 लाख और सर्वोच्च न्यायालय में यह संख्या 70 हजार से बढ़कर लगभग 90.7 हजार तक पहुंच गई है। वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में औसतन प्रति वर्ष 193 कार्य दिवस हैं, जबकि उच्च न्यायालयों में 215 और ट्रायल कोर्ट (अधीनस्थ न्यायालयों) में 245 दिन काम होता है। भारत उन देशों में शुमार है जहां की न्यायपालिका साल में सर्वाधिक दिन कार्य करती है। अमेरिका में यह अवधि मात्र 79 दिन है, जबकि आस्ट्रेलिया, कनाडा, सिंगापुर और ब्रिटेन की शीर्ष अदालतें क्रमशः 97, 120, 145 और 189 दिन ही बैठती हैं। भारत का सर्वोच्च न्यायालय प्रतिदिन औसतन 10 से 15 फैसले सुनाता है, जबकि इसके विपरीत अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट पूरे एक वर्ष में अधिकतम 10 से 15 निर्णय ही देता है।

आम जनता में अक्सर न्यायालयों की छुट्टियों को लेकर बहस छिड़ी रहती है, परंतु सच तो यह है कि जो लोग इस व्यवस्था की आंतरिक कार्यप्रणाली से अनभिज्ञ हैं, वही इसकी आलोचना करते हैं। वास्तव में इन्हीं छुट्टियों के दौरान न्यायाधीश अपने आरक्षित निर्णयों और लंबित आदेशों को पूर्ण करते हैं। अवकाश के समय भी न्यायाधीश अपने चैंबर या घर पर स्थित कार्यालयों में बैठकर निरंतर जजमेंट लिखवाते हैं। किसी भी निर्णय को अंतिम रूप देने से पहले उन्हें केस की विस्तृत फाइलों, लंबी जिरह के विवरणों और मामले से संबंधित पुराने कानूनी दृष्टांतों का गहन अध्ययन करना होता है। यह देश के सबसे कठिन कार्यों में से एक है, क्योंकि न्यायाधीश द्वारा लिखा गया प्रत्येक शब्द सीधे तौर पर लोगों के जीवन और उनके भविष्य को प्रभावित करता है। अत्यंत मानसिक दबाव और तनाव के प्रबंधन के लिए न्यायाधीशों को उचित विश्राम की आवश्यकता होती है। यह धारणा भी गलत है कि न्यायाधीश केवल प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक ही कार्य करते हैं। वे अपना अधिकांश समय शाम, रात और सप्ताहांत में फाइलें पढ़ने, आदेश तैयार करने और कानूनी शोध करने में व्यतीत करते हैं, क्योंकि अदालत की कार्यवाही के दौरान उनके पास इन कार्यों के लिए बहुत कम समय बचता है।

रिक्तियां तो एक बड़ी समस्या हैं ही, परंतु मुद्दा केवल पदों के खाली होने तक सीमित नहीं है। वास्तव में जब शासन-प्रशासन की नाकामियां रोजमर्रा के स्तर पर निर्णय लेने में अक्षम साबित होती हैं, तब नागरिक के पास न्याय और शिकायत के लिए एकमात्र भरोसेमंद विकल्प अदालत ही बचता है। यही देश में मुकदमों की बाढ़ की असली जड़ है। जब सरकारी फाइलें अटकती हैं, आदेश समय पर पारित नहीं होते और नियमों की व्याख्या हर दफ्तर में अलग-अलग की जाती है तो जवाबदेही से बचने की प्रवृत्ति बढ़ती है। इसका परिणाम यह है कि आज सड़क, पानी, भर्ती, जमीन और स्कूल-फीस जैसे बुनियादी मुद्दे भी अदालत की चौखट तक पहुंच रहे हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी विभाग स्वयं भी बड़े पैमाने पर अपील, रिविजन और रिट याचिकाओं में जाते हैं। ऐसे में न्यायालयों का बहुमूल्य समय न केवल विवाद निपटाने में, शासन के नियमों की निगरानी करने में भी व्यय होता है। अंततः अदालतें प्रशासनिक तंत्र की कमियों का बैकअप सिस्टम बनकर रह गई हैं, जिससे लंबित मामले बढ़ते हैं और सामान्य नागरिक के लिए न्याय की प्रक्रिया महंगी हो जाती है। प्रतिदिन आने वाले नए मामलों की बाढ़ अदालतों का सुनवाई-समय निगल जाती है। ऐसे में वर्षों पुराने मुकदमे अगली तारीखों पर धकेल दिए जाते हैं। ऊपर से गवाहों की अनुपस्थिति, समन-तामीली में देरी, पुलिस चार्जशीट में विलंब और दस्तावेजी रिकार्ड की सुस्त प्रक्रिया एक केस को वर्षों तक खींचती है।

प्रश्न यह है कि क्या हम न्यायपालिका का बोझ केवल अदालतों के भीतर कम करेंगे या अदालतों के बाहर भी ठोस कदम उठाएंगे? असली राहत अदालत के बाहर मिलनी चाहिए, जहां नागरिक को समयबद्ध, तर्कसंगत और अपील-योग्य प्रशासनिक निर्णय प्राप्त हो सकें। केवल जटिल और गंभीर विवाद ही अदालत की दहलीज तक पहुंचने चाहिए। भारत में न्यायाधीश-जनसंख्या अनुपात के भारी अंतर को भी पाटना अनिवार्य है। वर्ष 2020 के आंकड़ों के अनुसार भारत में प्रति 10 लाख की आबादी पर मात्र 21 न्यायाधीश थे, जबकि 1987 में ही विधि आयोग ने प्रति 10 लाख नागरिकों पर कम से कम 50 न्यायाधीश होने का सुझाव दिया था। अमेरिका में प्रति 10 लाख लोगों पर 107 न्यायाधीश हैं और ब्रिटेन में यह संख्या 51 है। सरकारों को अपनी मुकदमेबाजी नीति में आमूल-चूल बदलाव करना चाहिए। वर्तमान स्थिति न केवल न्यायालयों का बहुमूल्य समय नष्ट कर रही है, बल्कि निरर्थक मुकदमों पर सार्वजनिक धन की भी भारी बर्बादी हो रही है। प्रशासनिक जवाबदेही तय करना और न्यायिक नियुक्तियों में तेजी लाना ही इस संकट का एकमात्र स्थायी समाधान है।

(लेखक जेएनयू के अटल स्कूल आफ मैनेजमेंट में प्रोफेसर हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

एकाग्रचित्तता

मानसिक शांति की तलाश आज हर व्यक्ति कर रहा है। हर अवस्था में मनुष्य को स्वयं को नियंत्रित रखने के लिए धैर्य का होना नितांत आवश्यक है, जिसके लिए अनुकूल वातावरण और उससे भी कहीं अधिक एकाग्रचित्तता का होना परम आवश्यक है। जोश में होश खो देने वाले और फिर अपनी ही इस मूर्खता पर पछताने वाले व्यक्ति सफलता के निचले पायदान पर ही रह जाते हैं। कैसी भी परिस्थिति हो, हर हाल में खुद को ढाल पाना तभी संभव है जब हर बात पर बारीकी से नजर रखी जा सके, जिसके लिए मन की एकाग्रता का होना आवश्यक है। पूरी निष्ठा और ईमानदारी से किया गया हर काम सफलता की सीढ़ियां चढ़ता ही है।

कर्मठता और सफलता की डोर सदा ही एकाग्रचित्त व्यक्ति के हाथ में होती है। कर्म को प्रधानता और सफलता को लक्ष्य जिसने अपने जीवन में मान लिया, उस व्यक्ति से अधिक अनुभवी कोई दूसरा नहीं हो सकता। जीवनपर्यंत हासिल किए गए अनुभव एकाग्रचित्तता धारण करने वाले मनुष्य की वह पूंजी है जिसे वह निर्धन होने पर भी आपातकाल में प्रयोग कर स्वयं को प्रगतिशील की श्रेणी में खड़ा कर समाज के लिए एक ज्वलंत उदाहरण बन सकता है। अपना ध्यान मन पर केंद्रित कर कर्म को करते रहना, हरसंभव प्रयास करना, मुश्किलों से मुंह न फेरना और अंत में हार की अंत्येष्टि कर विजय का बिगुल फूंककर स्वयं को सिद्ध करना ही जागरूक मनुष्य जाति का प्रमाण है।

एकाग्रता वह स्थिति है जब मनुष्य को अपने भीतर छिपी हुई शक्तियों का अहसास होता है, यह वह क्षण होता है जब मनुष्य स्वयं को सर्वशक्तिमान और आत्म-संयमी मानकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में दोगुनी ऊर्जा के साथ अपने रोम-रोम को लगा देता है। परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाला फल लंबे समय तक स्मृतियों में दर्ज हो जाता है।

पारूल हर्ष वंसल

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

सीबीआइ की कार्यशैली पर सवाल

'कठघरे में खड़ीं जांच एजेंसियां' शीर्षक से लिखे आलेख में संजय गुप्त ने सही कहा है कि अब ऐसी व्यवस्था आवश्यक है कि सीबीआइ-ईडी जैसी एजेंसियां बिना किसी ठोस साक्ष्य लोगों को गिरफ्तार न कर सकें, ताकि बदले की कार्रवाई भी न हो सके और भ्रष्टाचार से लड़ा भी जा सके। दिल्ली आबकारी मामले में राऊज एवेन्यू कोर्ट द्वारा अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया सहित सभी 23 आरोपितों को आरोपमुक्त जाने का फैसला देश की प्रमुख जांच एजेंसी सीबीआइ की कार्यशैली और निष्पक्षता पर गंभीर सवालिया निशान खड़े करता है। यह निर्णय जहां एक ओर हमारी न्यायिक प्रणाली की सुदृढ़ता को रेखांकित करता है, वहीं दूसरी ओर जांच एजेंसियों के लिए आत्ममंथन का एक निर्णायक क्षण भी है। यदि सीबीआइ बिना किसी पुख्ता मनी ट्रेल या ठोस आधार के हाईप्रोफाइल गिरफ्तारियां करती है तो इससे न केवल उनकी साख गिरती है, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं पर जनता का भरोसा भी डगमगाता है। भविष्य में अपनी विश्वसनीयता बचाए रखने के लिए इस जांच एजेंसी को पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना अनिवार्य होगा। इस ऐतिहासिक फैसले के बाद अब उच्च अदालतें धनशोधन निवारण अधिनियम जैसे कड़े कानूनों के तहत की जाने वाली गिरफ्तारियों और चार्जशीट की और भी सूक्ष्मता से समीक्षा करेंगी। अब न्यायालय केवल अनुमानों के स्थान पर ठोस भौतिक साक्ष्यों की मांग करेंगे। चूंकि कोर्ट ने इस मामले में जांच अधिकारी के विरुद्ध विभागीय जांच के आदेश दिए हैं, इसलिए अब सीबीआइ को अपनी आंतरिक कार्यप्रणाली में आमूलचूल सुधार करना होगा। यह आवश्यक है कि गलत मंशा या लापरवाही से की गई जांच के लिए संबंधित अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की जाए।

श्रीधर मिश्रा, बहराइच

स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़

दिल्ली पुलिस द्वारा नकली दवाओं तथा खाद्य पदार्थों में मिलावट के मामले समय-समय पर पकड़े जाते हैं। आश्चर्य की बात है कि हाल ही में दिल्ली में नामचीन कंपनियों की एक्सपायर खाद्य पदार्थ और सौंदर्य प्रसाधनों के लेबल बदलकर फिर से बाजार में बेचने के मामले सामने आए हैं। इस प्रकार से पकड़े गए गिरोह द्वारा उनकी तिथियां में परिवर्तन कर एक्सपायर डेट को बदल दिया जाता था। यह एक ऐसा गिरोह है, जो इनकी तिथि समाप्त होने के उपरांत उनकी पैकिंग को बदलकर उसमें नई तिथि डाल देता था। इस तरह से बाजार में जाने के उपरांत ग्राहक उपभोक्ता नामचीन कंपनी होने के कारण उसे पर विश्वास के साथ सामान खरीद लेते थे। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के तहत यह स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। इस तरह के मामलों पर सरकार को सख्त कानून को अमलीजामा पहनाना होगा। ग्राहकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो भी सामान खरीदें उसका बिल अवश्य लें। दुकानदार और ग्राहकों को भी इसके बार में जागरूक करना चाहिए। जिससे इस तरह के अवैध करोबार पर रोक लग सके।

मीना धानिया, सिरसपुर

विश्व पर मंडराता संकट

पश्चिम एशिया में छिड़ी इजरायल-अमेरिका और ईरान के बीच के भीषण सैन्य टकराव ने वैश्विक राजनीति को अस्थिर कर दिया है। इजरायल-अमेरिका द्वारा ईरान के रणनीतिक ठिकानों पर की गई एयरस्ट्राइक तथा उसके जवाब में ईरान के मिसाइल और ड्रोन हमलों ने पूरे क्षेत्र को युद्ध की आग में झोंक दिया है। ईरान ने खाड़ी क्षेत्र के कई देशों में अमेरिकी सैन्य अड्डों को निशाना बनाया है। यह संघर्ष केवल दो देशों तक सीमित नहीं रहा बल्कि बहुस्तरीय क्षेत्रीय युद्ध का रूप लेता दिखाई दे रहा है। यह टकराव लंबा खिंचता है तो इसके दूरगामी प्रभाव पूरी दुनिया को प्रभावित करेंगे। भारत जैसे देशों के लिए स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक हो सकती है क्योंकि ऊर्जा आयात का बड़ा हिस्सा खाड़ी क्षेत्र से आता है। तेल की कीमतें तेजी से बढ़ती हैं तो मुद्रास्फीति पर दबाव बढ़ेगा। सरकारों को ईंधन सब्सिडी या करों में राहत देने जैसे कदम उठाने पड़ सकते हैं। जिससे राजकोषीय संतुलन प्रभावित होगा। साथ ही खाड़ी देशों में कार्यरत प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा और उनकी आय पर भी असर पड़ सकता है। डालर की कीमत पर भी इस युद्ध का गहरा प्रभाव पड़ सकता है। परंपरागत रूप से वैश्विक संकट के समय निवेशक सुरक्षित निवेश की ओर भागते हैं और अमेरिकी डालर को सुरक्षित मुद्रा माना जाता है। इसलिए शुरुआती चरण में डालर की मांग बढ़ सकती है, जिससे अन्य मुद्राओं के मुकाबले उसकी कीमत मजबूत हो सकती है।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

पोस्ट

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री और उनके बास यानी सेना के मुखिया को शर्म आनी चाहिए कि उन्होंने नोबेल शांति पुरस्कार के लिए डोनाल्ड ट्रंप का नाम आगे बढ़ाया।

सरवर बारी@BariSarwra

ईरान ने जिस तरह दुबई को निशाना बनाया, उससे एक सुरक्षित स्थान के रूप में उसकी साख जरूर प्रभावित हुई है। दर्शित पटेल@darshitpatel84

अगर हमले के 24 घंटे से भी कम समय में खामेनेई को मार दिया गया तो इस अभियान को आधुनिक इतिहास की सबसे बेहतरीन खुफिया तैयारी कहा जा सकता है।

ओबिदुल्ला बहीर@ObaidullaBaheer

कानून की पढ़ाई में अंतरराष्ट्रीय कानून पढ़ाने की जगह अमेरिकी विदेश नीति को ही पढ़ाया जाना बेहतर होगा, क्योंकि उसकी विदेश नीति ही एक तरह से अंतरराष्ट्रीय कानून है।

एन. जूलियस@KatushabeJulius

चीन आपको लड़ने के लिए तो उकसाएगा, लेकिन जब आप लड़ाई में फंस जाएंगे तो कभी मदद के लिए आगे नहीं आएगा। एमबीएएच@Mbahdeyforyou

जनपथ

खामेनेई बन गए पल भर में सद्दाम,
अब तो रुकना चाहिए छिड़ा विश्व संग्राम।
छिड़ा विश्व संग्राम बढ़ेगा अब यदि यारो,
तो बेमतलब जान गंवाएंगे हज्जारों!
पाल स्वयं के देश मंथरा अरु कैकेयी,
हो बैठे कमजोर मरे तब खामेनेई।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन.नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा -201309 से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित
संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 227

हां 83% / नहीं 17% — क्या भारत के साथ इजरायल के मजबूत संबंध राष्ट्रीय हितों के लिहाज से जरूरी हैं ?

हां 72% / नहीं 28% — क्या भारत कूटनीति की दुनिया में सैद्धांतिक हिचक छोड़ कर राष्ट्रीय हितों को साध रहा है ?

मुद्दा से संबंधित अपनी राय, सुझाव और प्रतिक्रिया mudda@jagran.com पर भेज सकते हैं।

सिद्धांत बनाम राष्ट्रीय हित

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इजरायल यात्रा के दौरान दोनों देशों ने अपने संबंधों को विशेष रणनीतिक भागीदारी के स्तर तक पहुंचाने का फैसला किया है। इसके तहत दोनों देश रक्षा सहित कई क्षेत्रों में अपने सहयोग का विस्तार करेंगे। पीएम मोदी की यह यात्रा ऐसे समय में हुई है, जब क्षेत्रीय आक्रामक नीतियों को लेकर इजरायल की आलोचना की जा रही है। ईरान पर इजरायल और अमेरिका के संयुक्त हमले के बीच भारत में भी इस बात पर बहस हो रही है। खासकर तब जब भारत एक स्वतंत्र फलस्तीन के लिए दशकों से प्रतिबद्ध रहा है। वहीं, कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि भारत की कूटनीति अब नारों के दायरे से निकल कर राष्ट्रीय हित पर जोर दे रही है। उनका मानना है कि जब कोई देश बड़ा होने लगता है तो उसके अनेक हित प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से कई देशों से जुड़ते हैं। ऐसे में कौन सा हित उसके लिए पहली प्राथमिकता होगी, उसके आधार पर वह अपना अगला कदम तय करता है। ऐसे में इजरायल के साथ संबंधों को मजबूत बनाना एक यथार्थवादी रवैया है। रूस और यूक्रेन युद्ध में भी यही स्थिति दिखी और अमेरिका-यूरोप के लगातार दबाव के बावजूद भारत ने यूक्रेन पर हमले के लिए रूस की निंदा नहीं की। ऐसा इसलिए क्योंकि भारत के राष्ट्रीय हित रूस के साथ हैं। ऐसे में सिद्धांतवादी हिचक से निकल राष्ट्रीय हितों के आधार पर संबंधों की दशा-दिशा तय करने वाली रणनीति की पड़ताल बड़ा मुद्दा है...

रणनीतिक स्वायत्तता

पहले भारत गुटनिरपेक्षता की बात करता था, लेकिन अब भारत सभी पक्षों से संबंध बनाने की नीति पर काम कर रहा है। उदाहरण के तौर पर भारत अमेरिका के साथ क्वाड में हैं और रूस-चीन के साथ ब्रिक्स में भी। भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था उसे ऐसा करने का आत्मविश्वास देती है।

ग्लोबल साउथ का नेतृत्व

भारत अब केवल दक्षिण एशिया का नहीं बल्कि विकासशील देशों (ग्लोबल साउथ) की आवाज बन चुका है। 2023 में दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन की अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्यता दिलाना इसका बड़ा उदाहरण है।

राष्ट्रीय हित सर्वोपरि

भारत अब स्पष्ट रूप से अपने हितों को प्राथमिकता देता है। यूक्रेन युद्ध के दौरान पश्चिमी दबाव के बावजूद रूस से तेल खरीदना इसका सबसे सटीक उदाहरण है, जहां भारत ने 'राष्ट्र प्रथम' की नीति को सर्वोपरि रखा।

आर्थिक ताकत के दम पर मुखर हुआ भारत

भारत की विदेश नीति अब पहले की तुलना में कहीं अधिक मुखर और नतीजों पर जोर देने वाली हो गई है। इसका सीधा संबंध भारत की तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था और जीडीपी के आकार से है। जब किसी देश की आर्थिक शक्ति बढ़ती है, तो उसकी बात सुनने की दुनिया की मजबूरी और जरूरत दोनों बढ़ जाती है। पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में आए इस बदलाव को रेखांकित कर रहे हैं महेन्द्र सिंह...

अर्थव्यवस्था का आकार और कूटनीति में बदलाव

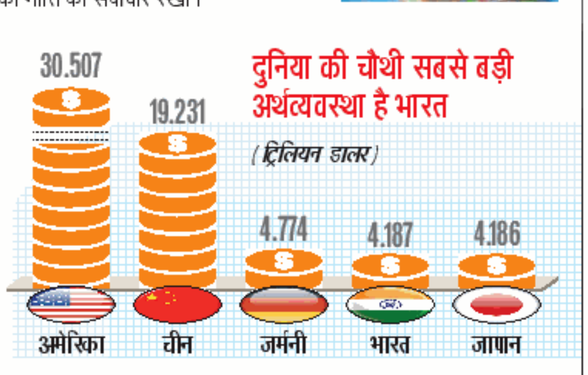

भारत वर्तमान में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और वित्त वर्ष 2026-27 तक इसके तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान है। इस आर्थिक बढ़त ने भारत को साफ्ट पावर से स्मार्ट पावर में बदल दिया है।

दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है भारत

सैन्य शक्ति और आधुनिकीकरण

भारत रक्षा पर खर्च के मामले में अब दुनिया के शीर्ष 3-4 देशों में शामिल है।

₹7.85 लाख करोड़-रक्षा बजट

पूंजीगत व्यय: बजट का लगभग

(2.19 लाख करोड़) केवल नए हथियारों और तकनीक के लिए है।

नौसेना विस्तार: 2030 तक नौसेना अपने बेड़े को बढ़ा कर 200 जहाज तक पहुंचाने पर काम कर रही है।

रक्षा सौदे और रणनीतिक साझेदारी

जब भारत किसी देश से बड़ा रक्षा सौदा करता है, तो वह उस देश को अपने साथ दीर्घकालिक भू-राजनीतिक हितों में बांध लेता है। फ्रांस के साथ 36 राफेल विमानों का सौदा भारत की कूटनीति का मास्टरस्ट्रोक माना जाता है। हाल में भारत की रक्षा खरीद परिषद ने 114 राफेल विमानों की खरीद के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी है।

बिना किसी शर्त के समर्थन

अमेरिका या दूसरे यूरोपीय देशों के विपरीत फ्रांस ने कभी भी भारत के आंतरिक मामलों में दखल नहीं दिया और भारत ने जब परमाणु परीक्षण किया तो प्रतिबंध भी नहीं लगाए। इस सौदे ने फ्रांस को भारत का सबसे भरोसेमंद यूरोपीय साझेदार बना दिया।

एयरोस्पेस इकोसिस्टम

सौदे के तहत 'आफसेट क्लाज' के जरिये फ्रांस की कंपनियों को भारत में निवेश करना पड़ा, जिससे भारत का अपना एयरोस्पेस इकोसिस्टम मजबूत हुआ।

रक्षा सौदों का अर्थव्यवस्था पर असर का मल्टीप्लायर माडल

क्षेत्र	प्रभाव	जीडीपी में योगदान
स्वदेशी खरीद	एमएसएमई को आर्डर मिलना	उच्च
आफसेट निवेश	विदेशी कंपनियों द्वारा भारत में फैक्ट्री लगाना	मध्यम से उच्च
रोजगार सृजन	कुशल इंजीनियरों और तकनीशियनों की मांग	लंबी अवधि में फायदा
अनुसंधान	नई तकनीक का नागरिक उपयोग	बेहतर भविष्य

जागरण इन्फो

रक्षा उपकरणों का निर्यात

ब्रह्मोस मिसाइल: फिलीपींस को ब्रह्मोस मिसाइल बेचना भारत का दक्षिण चीन सागर में चीन के बढ़ते प्रभाव को सीधा जवाब है।

आर्मीनिया को पिनाका: आर्मेनिया-अजरबैजान संघर्ष के बीच आर्मेनिया को हथियार देना दिखाता है कि भारत अब वैश्विक संघर्षों में अपने हितों के आधार पर पक्ष लेने से नहीं हिचकता।

> "यूरोप की समस्या दुनिया की समस्या है, लेकिन दुनिया की समस्या यूरोप की समस्या नहीं है।"
>
> **एस जयशंकर**, विदेश मंत्री

सशक्त भारत दिखा रहा है रणनीतिक स्पष्टता

डा. अभिषेक श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, जेएनयू

भारत की विदेश नीति में 'रणनीतिक स्वायत्तता' का सिद्धांत बरकरार है। 'रणनीतिक अस्पष्टता' का युग समाप्त हो रहा है। उसकी जगह ले रही है एक ऐसी 'रणनीतिक स्पष्टता', जो यथार्थवाद, साझा हितों और दीर्घकालिक दृष्टि पर आधारित है। भारत इसी के आधार पर तमाम देशों से अपने रिश्तों को आकार दे रहा है।

स्वतंत्रता के बाद से भारत की पश्चिम एशिया नीति संतुलन और सावधानी पर आधारित रही। एक ओर फलस्तीन के समर्थन की ऐतिहासिक प्रतिबद्धता, दूसरी ओर ऊर्जा सुरक्षा और खाड़ी देशों में कार्यरत भारतीय प्रवासियों के हित, इन सबके बीच भारत ने अक्सर सार्वजनिक रूप से संतुलित भाषा का प्रयोग किया। परंतु वर्तमान वैश्विक परिदृश्य, भारत को अधिक स्पष्ट रुख अपनाने की ओर प्रेरित कर रहा है। अब नई दिल्ली यह संकेत दे रही है कि आतंकवाद के प्रश्न पर कोई अस्पष्टता नहीं हो सकती। इजरायल के साथ खड़े होना केवल नैतिक समर्थन नहीं, बल्कि एक साझा सुरक्षा दृष्टिकोण का हिस्सा है। यह उस भारत की अभिव्यक्ति है, जो स्वयं दशकों तक सीमा-पार आतंकवाद का सामना करता रहा है और अब वैश्विक मंच पर आतंकवाद-विरोधी विमर्श में निर्णायक भूमिका निभाना चाहता है। बदलती वैश्विक भू-राजनीति के बीच भारत और इजरायल के संबंध एक नए और स्पष्ट चरण में प्रवेश कर चुके हैं। 25 फरवरी 2026 को इजरायल की संसद में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संबोधन केवल एक औपचारिक कूटनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि यह भारत की पश्चिम एशिया नीति में संरचनात्मक परिवर्तन का संकेतक था। हमास को स्पष्ट रूप से आतंकवादी संगठन कहना और अक्टूबर 2023 के हमलों की कड़ी निंदा करना उस 'रणनीतिक अस्पष्टता' से बाहर निकलने का प्रतीक है, जिसे भारत लंबे समय तक संतुलन की नीति के तहत अपनाता रहा था।

पश्चिम एशिया में भारत की भूमिका अब एक निष्क्रिय ऊर्जा आयातक की नहीं, बल्कि एक सक्रिय सुरक्षा और स्थिरता भागीदार की है। हिंद महासागर से लेकर लाल सागर तक समुद्री मार्गों की सुरक्षा, आपूर्ति शृंखलाओं की निरंतरता और ऊर्जा अवसंरचना की रक्षा, इन सभी में भारत की भागीदारी पिछले एक दशक में बढ़ी है। यही कारण है कि क्षेत्र के कई देशों ने प्रधानमंत्री मोदी को अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया है, जो भारत की बढ़ती स्वीकार्यता और विश्वसनीयता का संकेत है।

एक तरफ जहां सितंबर 2025 में सऊदी-पाकिस्तान रक्षा सहयोग और चीन की बढ़ती क्षेत्रीय सक्रियता ने दक्षिण एशिया की सामरिक गणनाओं को प्रभावित किया है। ऐसे परिदृश्य में इजरायल के साथ उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकी साझेदारी भारत के लिए एक संतुलनकारी कारक बनती है। यह संदेश भी जाता है कि भारत अपने सुरक्षा हितों की रक्षा के लिए विविध स्रोतों से सहयोग लेने में संकोच नहीं करेगा। ड्रोन, मिसाइल प्रणालियां, साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान और उत्पादन भारत को उच्च-तकनीकी विनिर्माण का केंद्र बना सकता है। इससे न केवल सैन्य क्षमता में वृद्धि होगी, बल्कि रोजगार, नवाचार और निर्यात की संभावनाएं भी बढ़ेंगी। वहीं दूसरी ओर अमेरिकी नीतियों में उतार-चढ़ाव और यूरोपीय देशों की बदलती प्राथमिकताओं के बीच इजरायल को ऐसे सहयोगियों की आवश्यकता है, जो राजनीतिक रूप से स्थिर हों और तकनीकी नवाचारों के लिए बड़ा बाज़ार प्रदान कर सकें। भारत का विशाल उपभोक्ता आधार, कुशल मानव संसाधन और तेजी से विकसित होता रक्षा उद्योग इजरायली प्रौद्योगिकी को नई संभावनाएं देता है। कृषि तकनीक, जल प्रबंधन, साइबर सुरक्षा और स्टार्टअप सहयोग जैसे क्षेत्रों में भी साझेदारी गहरी हो रही है। इस प्रकार संबंध केवल सामरिक नहीं, बल्कि व्यापक आर्थिक और तकनीकी आयाम ग्रहण कर रहे हैं।

भारत-इजरायल संबंधों को 'रेसिप्रोकल हेजिंग' के रूप में भी देखा जा सकता है, अर्थात् दोनों देश एक-दूसरे के साथ सहयोग कर वैश्विक अनिश्चितताओं के विरुद्ध संतुलन बना रहे हैं। भारत को उन्नत तकनीक और सामरिक समर्थन मिलता है, वहीं इजरायल को एक विश्वसनीय, दीर्घकालिक और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली साझेदार। यह माडल दोनों देशों को किसी एक महाशक्ति पर निर्भर हुए बिना अपनी रणनीतिक स्वतंत्रता बनाए रखने की सुविधा देता है। यही कारण है कि यह साझेदारी केवल वर्तमान परिस्थितियों की उपज नहीं, बल्कि दीर्घकालिक भू-राजनीतिक गणनाओं का परिणाम है।

भारत की विदेश नीति में 'रणनीतिक स्वायत्तता' का सिद्धांत बरकरार है, 'रणनीतिक अस्पष्टता' का युग समाप्त हो रहा है। उसकी जगह ले रही है एक ऐसी 'रणनीतिक स्पष्टता', जो यथार्थवाद, साझा हितों और दीर्घकालिक दृष्टि पर आधारित है। आने वाले दशक में यह साझेदारी केवल दोनों देशों की सुरक्षा को सुदृढ़ नहीं करेगी, बल्कि पश्चिम एशिया और उससे परे के क्षेत्रीय भूगोल को भी नई दिशा दे सकती है।

आपकी आवाज

इजरायल द्वारा हमास के खात्मे के लिए वेस्ट बैंक पर हमले की निंदा के प्रस्ताव पर वोटिंग से भारत ने पहले दूरी बनाई, बाद में उस प्रस्ताव के पक्ष में तमाम देशों की तरह वोटिंग किया। फिर बाद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इजरायल की महत्वपूर्ण यात्रा की। इन बातों से भारत की सैद्धांतिक हिचक और उसे छोड़कर राष्ट्रीय हित साधने का कूटनीतिक प्रयास स्पष्ट हो रहा है।

गौरीशंकर अंतज

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जिस तरह हमेशा हमें स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं और हर त्योहार में स्वदेशी वस्तुओं को प्रयोग करने के लिए कहते हैं, उससे साफ जाहिर है कि प्रधानमंत्री मोदी देश के लिए देश का हित सर्वोपरि है। सरकार चीन से आर्थिक लड़ाई खुलकर नहीं लड़ सकती और चीनी सामान पर पूर्ण प्रतिबंध आसानी से नहीं लगा सकती, क्योंकि विदेशी व्यापार, आयात-निर्यात के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुछ समझौते होते हैं, जिनकी उल्लंघन करना हमारे देश के लिए भारी पड़ सकता है। इसलिए चीन से आर्थिक लड़ाई लड़ने में हमारे देश के नागरिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, इसके लिए नागरिकों को चीनी सामान पर अपनी निर्भरता कम करनी होगी।

राजेश कुमार चौहान

जब किसी देश की ताकत बढ़ती है तो दूसरे देशों के साथ रिश्तों में बदलाव आता है क्योंकि बड़ी ताकते किसी और देश का उभार नहीं चाहती हैं। ऐसे में भारत भी पुराने तौर तरीकों और नीतियों से बंधा नहीं रह सकता है। बदलते समय के लिहाज से राष्ट्रीय हित की मांग के अनुसार तौर तरीकों और नए रिश्तों की जरूरत है। भारत यही कर रहा है।

अशोक पाल

बदलते परिदृश्य के साथ व्यावहारिक और लचीली है विदेश नीति

पवन चौरसिया
रिसर्च फेलो, इंडिया फाउंडेशन

रूस-यूक्रेन युद्ध हो या इजरायल-हमास संघर्ष की चुनौती, भारत ने राष्ट्रहित और नैतिकता के बीच एक संतुलन स्थापित किया है। अब भारत विदेश नीति को वैचारिक दृष्टिकोण' के ढांचे में सीमित रखने में विश्वास नहीं रखता है, बल्कि उसका जोर लचीलेपन पर है।

बीते कुछ वर्षों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जिस तरह से भारत ने यथार्थवादी कूटनीति को गले लगाया है, उससे न केवल वैश्विक स्तर पर भारत की साख बढ़ी है, बल्कि भारत अपने हितों को भी सफलतापूर्वक साध पा रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध हो या इजरायल-हमास संघर्ष की चुनौती, भारत ने अपने राष्ट्र हित और नैतिकता के बीच एक संतुलन स्थापित किया है। अब भारत अपनी विदेश नीति को किसी एक 'वैचारिक दृष्टिकोण' के ढांचे में सीमित कर के रखने में विश्वास नहीं रखता है, अपितु उसे व्यावहारिक एवं गतिशील बनाए रखना चाहता है। एक आम धारणा है कि जब कोई देश यथार्थवादी कूटनीति को अपना लेता है तो वह स्वयं को नैतिकता के मूल्यों से स्वतः ही दूर कर लेता है। इस अति-अनैतिकवादी नीति को आम भाषा में 'चाणक्य नीति' मैकियावेलीवादी नीति' की संज्ञा दी जाती है, परन्तु वैचारिक स्तर पर यहां थोड़ी स्पष्टता लाने की आवश्यकता है। दरअसल चाणक्य नीति और मैकियावेली की विचारधारा किसी भी शासक को अनैतिक कार्य करने की अनुमति तभी देती है, जब उस कार्य से उस राज्य और राज्य की प्रजा का लाभ हो, न की शासक या उसके परिवार या उसके करीबियों का। ऐसे में भारत ने भी जो यथार्थवाद अपनाया है, उसके केंद्र में जनकल्याण और जनसुरक्षा है। अमेरिका और यूरोप के भारी दबाव के बावजूद भी भारत ने अगर अपने पारंपरिक मित्र रूस का साथ नहीं छोड़ा तो इसके पीछे एक बहुत बड़ा कारण था कि भारत अपने नागरिकों को सस्ता तेल प्रदान करना चाहता था। इस मुद्दे पर भी भारत ने यह साफ किया था कि वो किसी देश के नहीं, बल्कि शांति और कूटनीति के पक्ष में खड़ा है। वहीं इजरायल-हमास जंग के दौरान भी और उसके बाद भी प्रधानमंत्री मोदी का हालिया इजरायल दौरा इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि भारत अब अपने हितों को सामने रखने और उसके लिए कोई अभूतपूर्व कार्य करने में संकोच नहीं करेगा। इसकी वैचारिक आधारशिला भारत ने अपनी 'डीहायफनेशन नीति' में ही रख दी थी जिसके अंतर्गत भारत के एक देश के साथ संबंध उसके किसी अन्य देश के साथ रिश्तों से प्रभावित हुए बिना स्थापित होते हैं। इसीलिए जहां एक ओर भारत आतंक के खिलाफ इजरायल के साथ खड़ा रहा है। वहीं, दूसरी ओर उसने फलस्तीनियों को मदद पंहुचाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है। मोदी के इजरायल दौरे, जिससे दोनों देशों के रिश्ते विशेष रणनीतिक भागीदारी तक पहुंच गए हैं , के कुछ दिन पहले भारत ने नई दिल्ली में अरब देशों के विदेश मंत्रियों का व्यापक सम्मलेन भी आयोजित किया था जिसमें अरब लीग से जुड़े तमाम देशों के उच्चस्तरीय नेता एवं अधिकारीयों ने शिरकत की थी। इस सम्मलेन में प्रधानमंत्री मोदी ने फलस्तीन को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने की भारत की प्रतिबद्धता को भी दोहराया था।

ऐसा नहीं है कि भारत के लिए यथार्थवाद को खुले तौर पर अपनाने से उसको चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। भारत एक पुरानी सभ्यता वाला देश हैं और उससे यह आशा रखी जाती है कि वो अपने नैतिक बल पर वैश्विक अन्याय के विरुद्ध आवाज़ बुलंद करेगा। लेकिन हालिया घटनाओं ने यह साबित कर दिया है की विश्व 'जिसकी लाठी,उसकी भैंस' की ही विचारधारा पर चलेगा। ऐसे में विश्व भारत के नैतिकतावादी नेतृत्व को तभी स्वीकार करेगा जब वह अपनी आर्थिक, प्रौद्योगिकी और सैन्य क्षमताओं को वैश्विक महाशक्तियों के स्तर पर पहुंचा सकेगा।

विश्व ने अमेरिका, इजरायल और ईरान से हमले रोकने को कहा

ब्रसेल्स, एपी: ईरान में सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद अरब क्षेत्र में हिंसा फैलने पर विश्व भर के नेताओं ने अमेरिका, इजरायल और ईरान से हमले बंद करने के लिए कहा है। कहा है कि यह विश्व शांति और स्थिरता के लिए जरूरी है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री किएर स्टार्मर, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने अमेरिका, इजरायल और ईरान से हमले रोककर ईरानी परमाणु कार्यक्रम पर वार्ता करने के लिए कहा है।

तेहरान रविवार को शक्तिशाली विस्फोटों की आवाज से गूंजता रहा। इजरायली सेना ने कहा है कि वह शहर के हृदय स्थल और प्रमुख ठिकानों को निशाना बना रही है। जवाब में ईरानी सेना इजरायल, बहरीन, कतर, कुवैत और यूएई को निशाना बना रहा है। आस्ट्रेलिया और कनाडा ने अमेरिकी कार्रवाई का समर्थन किया है जबकि रूस और चीन ने हमले की निंदा की है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने अमेरिका और इजरायल से ईरान पर अविलंब हमले रोकने की अपील की है। यूरोपीय यूनियन के 27 देशों के प्रतिनिधियों की बैठक के बाद विदेश मामलों की प्रमुख काजा कलास ने खाड़ी क्षेत्र में लड़ाई फैलने से रोकने के लिए सभी संबद्ध देशों से हमले रोकने के लिए कहा है। अरब लीग ने ईरान से पड़ोसी देशों पर हमले रोकने को कहा है। यूएई के राष्ट्रपति के सलाहकार अनवर गार्गाश ने ईरान से होश में आने के लिए कहा है।

खामेनेई की हत्या के विरोध में कई जगह पर प्रदर्शन

- दिल्ली में जंतर-मंतर पर शोकसभा में जुटे लोग, कश्मीर में दो दिन बंद रहेंगे सभी स्कूल
- आल इंडिया शिया पर्सनल ला बोर्ड ने घोषित किया तीन दिन का शोक, पहनेंगे काले कपड़े

जागरण टीम नई दिल्ली : अमेरिका और इजरायल के हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई की मौत के विरोध में उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, बिहार और झारखंड समेत विभिन्न राज्यों में लोगों ने प्रदर्शन किए। नई दिल्ली स्थित ईरान दूतावास पर ईरान का राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहा। आल इंडिया शिया पर्सनल ला बोर्ड ने तीन दिनों का शोक घोषित किया है।

राजधानी दिल्ली में जंतर-मंतर पर आयोजित शोक सभा में बड़ी संख्या बच्चे और महिलाएं भी शामिल हुईं। खामेनेई की तस्वीरें लिए लोगों ने लोगों ने बांह और माथे पर काली पट्टी बांध रखी थी। ओखला समेत कई स्थानों पर विरोध प्रदर्शन हुए तो जोरबाग स्थित कर्बला में कैंडल मार्च निकाला गया। ईरान सांस्कृतिक केंद्र में भी शोक सभा हुई, जिसमें भी बड़ी

ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत की सूचना मिलने पर जंतर मंतर पर मातम करती मुस्लिम महिलाएं ● चंद्र प्रकाश मिश्र

संख्या में लोग शामिल हुए। जमात-ए-इस्लामी हिंद के अध्यक्ष सैयद सआहतुल्लाह हुसैनी ने खामेनेई की मौत की कड़ी निंदा की। पुराने लखनऊ में मुसलमान समुदाय ने दुकानें बंद कर दीं। छोटे इमामबाड़े में बड़ी संख्या में लोग एकत्र हुए। शिया धर्मगुरु मौलाना यासूब अब्बास ने कहा कि शोक के दौरान तीन दिनों तक हम सभी काले कपड़े पहनें। खामेनेई के लिए फातिहा पढ़ें और नज़्र करें।

कश्मीर में लगभग 15 लाख शिया हैं। लाल चौक, सैदा कदल, बडगाम, बांदीपोरा, अनंतनाग और पुलवामा में बड़े प्रदर्शन हुए। विभिन्न धार्मिक संगठनों के मंच मुताहिदा मजलिस-ए-उलेमा ने सोमवार को कश्मीर बंद का आह्वान किया है। सरकार ने दो व तीन मार्च को कश्मीर में सभी स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय बंद रखने का आदेश जारी किया है। पंजाब के मालेरकोटला में मुस्लिम समुदाय ने रोष मार्च निकाला। बिहार के मुजफ्फरपुर व शेखपुरा में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने कैंडल मार्च निकाला।

ईरान पर हमले की कांग्रेस ने की निंदा, विदेश नीति पर उठाए सवाल

- प्रियंका ने कहा, संप्रभु देश के सुप्रीम लीडर की हत्या घिनौनी
- पश्चिम एशिया में फंसे भारतीयों की वापसी को कदम उठाएं पीएम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: कांग्रेस ने ईरान पर हुए हमले की निंदा करते हुए सरकार की विदेश नीति पर यह कहते हुए सवाल उठाया कि देश को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति की विषय वस्तु और उसके तौर-तरीकों की भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। ईरान पर हमले को लेकर कोई स्पष्ट दृष्टिकोण जाहिर नहीं किए जाने के मद्देनजर पार्टी ने विदेश नीति पर सवाल उठाया। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने ईरान की संप्रभुता का उल्लंघन कर उसके सुप्रीम लीडर खामेनेई की हत्या किए जाने की निंदा की। उम्मीद जताई की पीएम मोदी पश्चिम एशिया में फंसे भारतीयों की सुरक्षित वापसी के लिए कदम उठाएंगे।

ईरान पर हमले के मद्देनजर रविवार को एक्स पर प्रियंका गांधी ने कहा, 'लोकतांत्रिक दुनिया के तथाकथित नेताओं द्वारा एक संप्रभु देश के सुप्रीम लीडर की टारगेटेड हत्या और बहुत सारे बेगुनाह लोगों की हत्या बहुत ही घिनौनी है।

जयराम रमेश ने बयान जारी कर कहा कि भारत की विदेश नीति पूरी तरह बेनकाब हो चुकी है। प्रधानमंत्री मोदी ने इजरायल का ऐसे समय दौरा किया, जब पूरी दुनिया को यह जानकारी थी कि सत्ता परिवर्तन के उद्देश्य से ईरान पर सैन्य हमला होने वाला है।

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

एक और युद्ध

दुनिया में एक और बड़े युद्ध का छिड़ना बहुत चिंता और दुख की बात है। वैसे, ईरान को लेकर युद्ध का माहौल बीते दो महीने से बन रहा था, पर चौबीस घंटे के युद्ध में ही जो भयावहता सामने आई, उसने पूरी दुनिया को तनावग्रस्त कर दिया है। अमेरिका और इजरायल ने शनिवार को ईरान पर सबसे पहले प्रहार किए, इसके बाद ईरान ने कम से कम छह मध्यपूर्व के देशों में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया। इसका बहुत ही खतरनाक जवाब अमेरिका और इजरायल ने दिया। भारत में जब लोग रविवार सुबह जागे, तब इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू बता रहे थे कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के जीवित न होने के संकेत मिले हैं। शुरू में ईरान ने इस सूचना को छिपाने की कोशिश करते हुए इसे मानसिक युद्ध बताया, पर बहुत जल्दी ही पूरी दुनिया ने देखा कि कैसे ईरानी न्यूज चैनल पर एक एंकर रोते हुए अपने देश के सर्वोच्च नेता की मौत की खबर सुना रहा था। इतना ही नहीं, एक तरह से ईरानी सत्ता की पहली कड़ी ध्वस्त हो गई है और चालीस दिन के शोक के बीच दूसरी कड़ी ने ऐसे इरादे के साथ सत्ता संभाली है कि लगता है, यह युद्ध बहुत जल्दी खत्म नहीं होगा।

दोनों तरफ से जारी की जा रही धमकियों पर गौर कीजिए, तो दहशत होती है। एक तरफ, ईरान कह रहा है कि अमेरिका पछताएगा, तो दूसरी ओर, खुद अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप बोल रहे हैं कि दुश्मनों को खून के आंसू रोना पड़ेगा। जंग में यह भाषा आम है, पर इस भाषा की प्रशंसा नहीं हो सकती। यह युद्ध मिसाइलों और तकनीकी योग्यता के आधार पर लड़ा जा रहा है और शक नहीं कि इस मोर्चे पर अमेरिका और इजरायल बहुत आगे हैं। ईरान की ताकत की कलई चौबीस घंटे में खुल गई है। ईरान अपने आला नेताओं की सुरक्षा में भी नाकाम रहा है। इजरायल दूर बैठकर मिसाइल से टारगेट कीलिंग को अंजाम देने में माहिर है। क्या ईरान के सत्ता प्रतिष्ठान को इजरायल की इस ताकत का पता नहीं था? क्या ईरान अपने रक्षा प्रमुख की हत्या को भूल चुका था? फिलहाल, ईरान ताकत और तैयारी, दोनों मोर्चों पर पीछे दिख रहा है। जंग सिर्फ इरादे के जोर पर नहीं जीती जाती है। आगे ईरान को अपना ज्यादा नुकसान करने से बचना चाहिए। युद्ध नहीं रुका, तो मध्यपूर्व के कम से कम छह देशों में हजारों लोग मारे जाएंगे, जो आर्थिक नुकसान होगा, उसका अनुमान लगाना मुश्किल है। युद्ध को रोकने की समझदारी ईरान को दिखानी चाहिए और अमेरिका को भी वैश्विक जिम्मेदारी का परिचय देना चाहिए।

ईरान बनाम अमेरिका युद्ध रोकने की कोशिशें तेज होनी चाहिए। ईरान को समझदारी दिखानी चाहिए और अमेरिका को जिम्मेदारी का परिचय देना चाहिए।

निस्संदेह, अमेरिकी हमले की कोई तारीफ नहीं करेगा। ऐसा ही काम कोई अन्य देश करे, तो खुद अमेरिका विरोध में खड़ा हो जाएगा, पर यह त्रासद है कि जब बात अमेरिका की आती है, तब नीतियां एकतरफा काम करने लगती हैं और न्याय का तराजू खराब हो जाता है। दुनिया के तमाम देशों को दबाव बनाना चाहिए कि अमेरिकी हमले जल्दी से जल्द थम जाएं। किसी भी देश में सैन्य हस्तक्षेप से सत्ता परिवर्तन की दुष्प्रवृत्ति निंदनीय है। सत्ता का मद बहुत बुरा है और वही युद्ध की ओर धकेलता है। सत्ता का मद तो ईरान के सर्वोच्च मजहबी नेता में भी था और अपनी ताकत-क्षमता से बहुत ज्यादा बोलकर खतरा मोल लेने की उनकी शैली नई नहीं थी। यह शैली इतनी भारी पड़ी है कि ईरान के इतिहास में दर्ज हो गई है। खैर, पता नहीं, संयुक्त राष्ट्र कहां है? बहरहाल, भारत, चीन, रूस और यूरोपीय देशों को प्रयास करना चाहिए कि जल्दी से जल्दी युद्ध-विराम हो, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों की जान बचाई जा सके।

हिन्दुस्तान Hindustan | **75 साल पहले** 02 मार्च, 1951

नया बजट

परम्परा के अनुसार 28 फरवरी को संसद में 1951-52 का सरकारी बजट पेश हो गया। इससे पहले सामने आये रेलवे बजट ने नये धक्कों के लिए पहले ही लोगों को तैयार कर दिया था, इसलिए बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री ने जब हलके धक्के के लिए तैयार रहने के लिए कहा, तो उपस्थित जनों को आश्चर्य नहीं हुआ। मदारी के पिटारे की तरह एक-एक कर-प्रस्ताव सामने लाये जाने पर भी लोगों में विस्मय या विरोध की प्रतिध्वनि नहीं हुई। कुछ ऐसा लगा कि उत्साह नहीं, तो निरुत्साह भी बजट ने पैदा नहीं किया। कारण इसका शायद यही था कि आर्थिक स्थिति जैसी बिगड़ती जा रही है, उसके कारण इससे अच्छे बजट की शायद कोई आशा रखता ही नहीं था।

जहां तक बजट का संबंध है, वित्त मंत्री श्री चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख ने न तो लम्बे-चौड़े आश्वासन दिये और न निराशा ही व्यक्त की; उन्होंने तो स्थिति को मानो उसके यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया और जो स्थिति है, उसमें रास्ता निकालने का अपना उपाय प्रस्तुत किया। कल्याणकारक राज्य, लोगों की सुविधाएं बढ़ाने, चीजों के दाम गिराने आदि के कोई मोहक वाक्य उन्होंने प्रयुक्त नहीं किये; सीधे-सादे शब्दों में, बल्कि, यह स्वीकार किया कि जो स्थिति चल रही है, उसमें लोगों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कर प्राप्त किये बगैर काम नहीं चल सकता। यों यह बात निराशाजनक नहीं मानी जा सकती कि चालू साल (1950-51) की अनुमानित बचत 71 लाख के बजाय 7 करोड़, 93 लाख रुपये होगी। साथ ही नये वर्ष (1951-52) के लिये घाटे का 5 करोड़, 54 लाख रुपये का अनुमान भी बहुत चिन्ताजनक नहीं माना जा सकता, खासकर उस हालत में जब बताया गया कि इसमें सेना के लिए वायुयान खरीदने तथा अधिक अन्न उपजाओ आंदोलन या विकास-कार्यों के लिए राज्यों को दी जाने वाली सहायता की रकम भी इस बार पूंजीगत व्यय में न रखकर राजस्व व्यय में शामिल की गई हैं।

यह खर्चा बजट में न जोड़ा जाता, तो घाटे के बजाय बचत ही रहती। लेकिन मदों के हेरफेर से दिखावटी संतोष हो सकता है, वास्तविक स्थिति तो सब प्रकार के खर्च-आमद और अपने पास रहने वाली पूंजी को सम्पूर्ण रूप में सामने रखने से ही पता चल सकती है।

ईरान पर अमेरिकी-इजरायली हमले और उसके सुप्रीम नेता अली खामेनेई की हत्या के बाद तेहरान ने जैसी प्रतिक्रिया दी है, उससे पश्चिम एशिया के हालात बेहद संगीन हो गए हैं। इन हमलों में अब तक सैकड़ों लोगों के मारे जाने और हजारों के जख्मी होने की सूचना है। हजारों लोग जगह-जगह फंस गए हैं। इस युद्ध का दुनिया के कूटनीतिक संबंधों और विश्व अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ सकता है, इस पर दो विशेषज्ञ टिप्पणियां:

ईरान पर हुए बड़े हमले से बदल रही दुनिया

यहां स्कैन करें

शशांक | पूर्व विदेश सचिव

- अमेरिका के लिए ईरान में अपनी पसंद की व्यवस्था लागू करवाना कठिन।
- युद्ध पश्चिम ही नहीं, दक्षिण एशिया की भू-राजनीति भी प्रभावित कर सकता है।
- इस वार-पलटवार से मध्य-पूर्व के देशों में निवेश पर बुरा असर पड़ेगा।

ईरान युद्ध का अंदेशा तो था, लेकिन इस आक्रामकता के कयास नहीं लगाए गए थे। अब जब अमेरिकी और इजरायली हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ही नहीं, उनके रक्षा मंत्री, आईआरजीसी मुखिया समेत कई महत्वपूर्ण लोग मारे गए हैं, तब मध्यपूर्व में वार और पलटवार भी बढ़ गया है। यह लग रहा है कि इस जंग का मकसद ईरान में सिर्फ सत्ता परिवर्तन नहीं, पूरे इस्लामी शासन का अंत है। अब बड़ा सवाल यह है कि खामेनेई के बाद ईरान का क्या होगा? एक हिसाब यह भी लगाया जा रहा है कि यह युद्ध पश्चिम एशिया और विश्व राजनीति को किस कदर प्रभावित करेगा?

खबर है कि अयातुल्ला अराफी ने फिलहाल खामेनेई की जिम्मेदारी संभाल ली है, जो साफ संकेत है कि ईरान में इस्लामी शासन का अंत इतना आसान नहीं। खामेनेई भले ही सर्वोच्च नेता थे, लेकिन उन्होंने अपना काम-काज इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) और ईरानी आर्मी के बीच बांट रखा था। ऐसा उन्होंने अपनी बढ़ती उम्र के मद्देनजर किया था। इतना ही नहीं, ईरान काफी बड़ा देश है और एक बड़ी आबादी भले ही वहां के इस्लामी शासन से नाराज है, लेकिन वह किसी बाहरी दखल से सत्ता-परिवर्तन की पक्षधर नहीं है। लिहाजा, अमेरिका के लिए यहां अपनी पसंद की व्यवस्था लागू करवाना टेढ़ी खीर साबित हो सकता है।

दिलचस्प यह है कि अमेरिका और ईरान में दोस्ती व दुश्मनी के रिश्ते रहे हैं। किसी जमाने में यहां पहलवी शासन (शाह शासन) की स्थापना में ब्रिटिशों ने अहम भूमिका निभाई थी, लेकिन बाद में पहलवी सरकार अमेरिका के करीब हो गई थी। यह नजदीकी इतनी बढ़ गई थी कि शाह शासन को वाशिंगटन की 'कठपुतली' कहा जाने लगा था। सरकार का विरोध करने वालों पर कार्रवाइयां शुरू हो गई थीं। इसी ने 1979 की इस्लामी क्रांति की नींव रखी, जिसकी सफलता से पश्चिमी प्रभाव वाले समाज को बढ़ावा देने वाले रजा पहलवी को निर्वासित होना पड़ा। तब से यहां की हुकूमत अमेरिका को चुभती रही है, मगर तमाम कोशिशों के बावजूद वह सफल नहीं हो सका।

इस बार की स्थिति उसे अपने अनुकूल जान पड़ी। इसकी बड़ी वजह खामेनेई की वृद्धावस्था और ईरान में हुकूमत व अवाम के बीच बढ़ती दूरी थी। राष्ट्रपति ट्रंप आश्वस्त थे कि अभी बदलाव का सबसे अच्छा वक्त है, इसलिए उन्होंने यहां एक ऐसी हुकूमत की कल्पना की, जो अमेरिका का पक्षधर हो। उनको लगता है कि इसमें ईरानी जनता उनकी मदद करेगी, इसलिए उन्होंने लोगों से सड़कों पर उतरने का आह्वान भी किया है, पर उनका यह विश्लेषण गलत साबित हो सकता है। इतना ही नहीं, पिछले साल जून में जब इजरायल ने ईरान पर हमला बोला था, तब यह दावा किया गया था कि तेहरान की परमाणु क्षमता नष्ट कर दी गई है, पर अब कहा जा रहा है कि ईरान ने परमाणु क्षमता 60 फीसदी तक फिर अर्जित कर ली है। यहां तक कि उसने बैलेस्टिक मिसाइल भी बना लिए हैं।

बहरहाल, यह दावा कितना सच है, इसका जवाब तो आने वाले दिनों में मिल सकेगा, लेकिन अपने हित में तथ्यों को मरोड़ना और सत्ता-परिवर्तन करना अमेरिका की प्रवृत्ति रही है। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी इसका हालिया उदाहरण है। इराक में भी उसने उन सद्दाम हुसैन को सैन्य-कार्रवाई के बाद हटाया, जिनका इस्तेमाल व्हाइट हाउस ने कभी ईरान के खिलाफ किया था। लीबिया में भी मुअम्मर गद्दाफी के शासन के खिलाफ इसी तरह की कार्रवाई हो चुकी है। सीरिया में तो असद सरकार को ईरान का समर्थन हासिल था, पर उसका पतन भी 2024 में हो चुका है।

जाहिर है, अमेरिका की यह मंशा रही है कि जिन राष्ट्रों की उसके लिए रणनीतिक व आर्थिक अहमियत है, वहां की सरकार पश्चिम के खिलाफ न हो; वाशिंगटन की हिमायती हो, तो और भी बेहतर। लिहाजा, ईरान युद्ध तब तक चलता रहेगा, जब तक उसकी यह रणनीति सफल न हो जाए। हालांकि, तेहरान भी दमखम दिखाता रहेगा। यदि वह पीछे हटता भी है, तो संभावित सरकार का प्रारूप अभी साफ नहीं है।

मध्यपूर्व सुलगा

यह जंग विश्व व्यवस्था के भी प्रतिकूल है। इससे ऊर्जा सुरक्षा पर खतरा सबसे अधिक है। अगर तेल जहाजों को होर्मुज जलडमरूमध्य का रास्ता बदलकर अफ्रीका से आना पड़ेगा, तो उनकी लागत बढ़ सकती है। यहां से खाड़ी देशों के तेल चीन, भारत, जापान, दक्षिण कोरिया आदि मुल्कों में जाते हैं। अमेरिका ने बेशक वेनेजुएला से तेल-आपूर्ति की बात भारत से कही है, पर हम अपनी जरूरत का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा निर्यात करते हैं, यानी करीब 13 लाख बैरल तेल प्रतिदिन। इतनी बड़ी मात्रा में वेनेजुएला से आपूर्ति मुश्किल है। लिहाजा, हमारे लिए अपने संसाधनों और अक्षय ऊर्जा के विस्तार की जरूरत बढ़ गई है।

विश्व व्यवस्था की परीक्षा मध्य-पूर्व की अस्थिरता भी ले सकती है। ईरान ने अमेरिकी-इजरायली हमले के खिलाफ यहां के उन देशों पर मिसाइलें दागी हैं, जहां अमेरिका के सैन्य ठिकाने हैं। इससे इस युद्ध का दायरा बढ़ गया है, जिससे यहां का निवेश प्रभावित हो सकता है। भारत भी यहां निवेश करता रहा है।

नई दिल्ली के लिए परेशानी की बात यह है कि यदि यह युद्ध लंबा खिंचा, तो गैस की दिक्कत हो सकती है, जो खाड़ी से यहां आती है। फिर, तकरीबन एक करोड़ प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा भी बड़ा मुद्दा है, जो खाड़ी के देशों में बसे हुए हैं। ईरान में तो कई छात्र फंस गए हैं।

यह युद्ध दक्षिण एशिया की भू-राजनीति को गहरे प्रभावित कर सकता है। पाकिस्तान भले अफगानिस्तान से अभी उलझा हुआ है, लेकिन ईरान में इस्लामाबाद अपनी भूमिका निभाने की जुगत में है। अगर अमेरिकी शह पर ऐसा होता है, तो भारत के लिए चुनौती बढ़ सकती है। ईरान युद्ध उन सभी इलाकों की महत्वाकांक्षाएं बढ़ा सकता है, जो अपनी हुकूमत से नाराज हैं। बलूचिस्तान भी इनमें एक है। वह पाकिस्तानी हुकूमत के खिलाफ अमेरिका की मदद मांग सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

आर्थिक रूप से बहुत भारी पड़ेगा यह युद्ध

यहां स्कैन करें

आलोक जोशी | वरिष्ठ पत्रकार

- ईरान दुनिया में सबसे अधिक तेल उत्पादन करने वाले देशों में एक है।
- होर्मुज जलडमरूमध्य पर भी उसका नियंत्रण है, जिधर से तेल ढोया जाता है।
- भारत का लगभग 40 फीसदी तेल और गैस इसी रास्ते से आता है।

शनिवार को अमेरिका और इजरायल ने आखिरकार ईरान पर कहर बरपा कर दिया। ऑपरेशन 'एपिक फ्यूरी' का शाब्दिक अनुवाद तो प्रचंड गुस्सा या प्रचंड प्रहार ही हो सकता है, मगर अर्थ कहर बरपा करना ही है। शनिवार सुबह ईरान की राजधानी तेहरान समेत अनगिनत ठिकानों पर हमले की खबर आई। मानवाधिकार संगठनों के मुताबिक, ईरान के 31 में से 24 प्रांत हमले का निशाना बने हैं। सैकड़ों लोगों की मौत और घायल होने की खबरें शुरुआती अनुमान में ही आईं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरानी जनता का आह्वान भी किया कि वे अपनी सरकार को उखाड़ फेंकें और ईरान पर राज करें।

बात इतनी सीधी और आसान भी नहीं है। ईरान ने भी वैसा जवाब दिया, जैसा उसने कहा था। उसने पश्चिम एशिया के अनेक देशों में अमेरिकी ठिकानों पर जवाबी बमबारी कर दी। कतर, कुवैत, बहरीन और संयुक्त अरब अमीरात में अमेरिकी सैन्य ठिकानों के अलावा दुबई के आलीशान इलाके पाम में फेयरमोंट होटल पर भी बम बरसाए गए हैं। पता नहीं, कहां-कहां और आग बरस सकती है, लेकिन टीवी या इंटरनेट पर जो लाइव कवरेज हो रही है, उसे देखकर तस्वीर काफी खौफनाक लगती है।

चिंता सिर्फ इन इलाकों या वहां फंसे लोगों तक सीमित नहीं है। इस युद्ध का असर अब पूरी दुनिया पर पड़ना तय है। इसकी सबसे बड़ी वजह है कच्चा तेल। ईरान दुनिया में कच्चे तेल के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। जिन देशों में अमेरिकी ठिकानों पर उसने हमला किया है, वे भी इस बिरादरी में शामिल हैं। साथ ही होर्मुज स्ट्रेट या होर्मुज जलडमरूमध्य पर भी ईरान का नियंत्रण है। यह फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ने वाला महत्वपूर्ण जलमार्ग है। इसे दुनिया में तेल गैस या ऊर्जा सप्लाई की जीवनरेखा कहा जाता है। दरअसल, समुद्री रास्ते से दुनिया में जितना भी तेल और गैस ढोया जाता है, उसका करीब एक चौथाई हिस्सा इसी रास्ते से गुजरता है।

जाहिर है, इस इलाके में युद्ध की आशंका से ही तेल के दाम उछलने लगते हैं। कारण दो हैं- एक, तेल उत्पादन में रुकावट की आशंका और दूसरा, इस रास्ते से तेल टैंकरों के गुजरने में परेशानी। हालांकि, यह रास्ता बंद होने की कोई खबर नहीं है, लेकिन दुनिया की बड़ी शिपिंग कंपनियों ने अपने जहाजों व टैंकरों को इस मार्ग से दूर रहने की हिदायतें देनी शुरू कर दी हैं। उधर कच्चे तेल के एक्सचेंज भी शनिवार और रविवार को बंद थे, पर शुक्रवार को ही ब्रेंट क्रूड का दाम उछलकर 72 डॉलर के ऊपर चला गया। अब युद्ध छिड़ने के बाद तो इसके 100 डॉलर तक जाने की आशंका जताई जा रही है।

इतिहास में देखें, तो तेल के बाजार को बड़ा झटका 1973 में उस वक्त लगा था, जब अरब-इजरायल युद्ध हुआ और सऊदी अरब के नेतृत्व में अरब देशों ने उन देशों को तेल निर्यात पर पाबंदी लगा दी, जिन्होंने युद्ध में किसी भी तरह से इजरायल का साथ दिया था। एक रात में ही कच्चे तेल की कीमतें चार गुना हो गई थीं और फिर काफी समय तक तेल का दाम चढ़ा रहा। नतीजा, अमेरिका और यूरोप में मंदी के हालात पैदा हो गए। यह वह समय था, जब पहली बार तेल को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया। यहीं से दुनिया की अर्थनीति और राजनीति में 'ऊर्जा सुरक्षा' नाम का एक नया शब्द-पद जुड़ गया। भारत को भी महंगाई और विदेशी मुद्रा का गंभीर संकट झेलना पड़ा।

इसके बाद सन् 1979 में ईरान की 'इस्लामिक क्रांति' के दौरान जब तेल उत्पादन में तेज गिरावट आई, तब फिर तेल के दाम लगभग दोगुने हो गए और करीब-करीब पूरी दुनिया को मंदी व महंगाई की मार एक साथ झेलनी पड़ी। इसे आर्थिक शब्दावली में 'स्टैगफ्लेशन' कहा जाता है, यानी जब महंगाई की वजह से अर्थव्यवस्था में मंदी के हालात पैदा होते हैं। वर्ष 1990 का खाड़ी युद्ध फिर महंगाई की मार लेकर आया। तभी भारत में वह गंभीर भुगतान संतुलन या विदेशी मुद्रा का संकट पैदा हुआ, जिससे निपटने के लिए नरसिंह राव सरकार को 1991 में आर्थिक सुधारों की राह पकड़नी पड़ी। 2003 के इराक युद्ध ने भी कई देशों को महंगाई का झटका दिया और ताजा उदाहरण यूक्रेन पर रूस का हमला है, जिसने न सिर्फ तेल व गैस का दाम बढ़ाया, बल्कि यूरोप में ऊर्जा संकट पैदा कर दिया।

भारत के लिए राहत की बात यह रही कि उसने सस्ती दर पर रूसी तेल खरीदकर अपनी काफी परेशानियों से राहत पाई। इससे पहले, जब ईरान पर प्रतिबंध लगे हुए थे, तब भारत ने ईरान से भी तेल के बदले अनाज या अन्य सामान देने का सौदा किया था। पिछले दिनों अमेरिका से हुई सौदेबाजी में यही मामला गले की हड्डी भी बना रहा।

दिक्कत यह भी है कि ईरान भारत के लिए सिर्फ तेल का आपूर्तिकर्ता नहीं है। वह मध्य एशिया में भारत का एक अहम सहयोगी रहा है। अभी हाल में चाबहार बंदरगाह के जरिये भारत न सिर्फ इस इलाके, बल्कि यूरोप तक पहुंच का एक बेहतर रास्ता खोल रहा था। दूसरी तरफ, अमेरिका भी हमारे लिए व्यापार और रणनीतिक मोर्चे पर महत्वपूर्ण सहयोगी बनता जा रहा है। ऐसे में, अगर ये दोनों आमने-सामने हों, तो संतुलन बनाना काफी टेढ़ी खीर है। अगर अमेरिका के अरमान पूरे हो गए और ईरान में उसके पक्ष की सरकार बन गई, तब भारत के लिए भी दोनों से रिश्ते रखना आसान होगा। ऐसा नहीं हुआ, तो इस मोर्चे पर स्थिति काफी दुविधाजनक हो सकती है।

हालात कब तक सामान्य होंगे, कहना बहुत मुश्किल है, पर यह साफ है कि भारत के लिए बड़ी मुश्किल सामने है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक है और अपनी जरूरत का लगभग 85 प्रतिशत तेल और गैस यह बाहर से खरीदता है। इसका भी करीब 40 फीसदी हिस्सा होर्मुज के रास्ते आता है। तेल के महंगा होने का अर्थ सिर्फ पेट्रोल-डीजल महंगा होना नहीं है, यह माल ढुलाई की लागत बढ़ा देता है, जिससे महंगाई का एक पूरा कुचक्र चल पड़ता है। विदेशी मुद्रा की मांग बढ़ने से रुपया कमजोर होता है और सरकार का घाटा बढ़ता है। अनुमान है, कच्चे तेल के दामों में दस डॉलर की बढ़ोतरी से भी भारत का आयात बिल सालाना 15 अरब डॉलर तक बढ़ सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

जागरूक कौन?

जागरूक रहने वाला कौन है? जब आप किसी प्रकार का कोई गहरा अनुभव कर रहे हैं, तब उस समय क्या हो रहा होता है? क्या आप इसके प्रति जागरूक होते हैं कि आप अनुभव कर रहे हैं?

अनुभव समाप्त हो जाने के बाद ही अनुभवकर्ता और अनुभव अस्तित्व में आते हैं। तब अनुभवकर्ता अनुभव में आए विषय का निरीक्षण करता है। अनुभव के क्षण में न तो द्रष्टा होता है और न दृश्य; वहां केवल अनुभूति हो रही होती है। हममें से अधिकतर लोग अनुभव नहीं कर रहे होते। हम सदा अनुभूति की अवस्था के बाहर रहते हैं और इसीलिए यह प्रश्न करते हैं कि निरीक्षक कौन है? जागरूक रहने वाला कौन है?

आपको नहीं लगता कि यह प्रश्न ही गलत है? अनुभूति के दौरान न सजग रहने वाला होता है, और न उसकी सजगता का विषय। कई लोगों के लिए अनुभूति की अवस्था में रहना अत्यधिक कठिन है, क्योंकि उसके लिए एक असाधारण लचीलेपन, गहन संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है; और जब हम किसी लक्ष्य के पीछे दौड़ रहे हैं, जब हम सफल होना चाहते हैं, जब हम लाभ-हानि के बारे में सोचते हैं, तब हम उस संवेदनशीलता से वंचित हो जाते हैं और तब हममें कुंठा पैदा होती है।

जो किसी वस्तु की मांग नहीं कर रहा, जो किसी लक्ष्य के पीछे नहीं दौड़ रहा, किसी परिणाम व उसके निहितार्थों को नहीं खोज रहा, ऐसा व्यक्ति सतत अनुभूति की अवस्था में है। तब सब कुछ गतिशील होता है, अर्थपूर्ण होता है; तब कुछ भी कहीं प्राचीन, कहीं दोहराव नहीं होता, क्योंकि जो वास्तविकता है, वह कभी पुरानी नहीं होती।

जे कृष्णमूर्ति

एंटोनियो गुटेरस | संयुक्त राष्ट्र महासचिव

पूरी दुनिया में मानवाधिकारों को जान-बूझकर, कभी-कभी तो गर्व के साथ पीछे धकेला जा रहा है। हम सत्ता-प्रतिष्ठानों को ऐसे नए कायदे नहीं लिखने दे सकते, जिसमें ताकतवर लोगों के अधिकारों की कोई सीमा न हो।

सहकारिता मॉडल पर आधारित अच्छी सेवा

जिस दिन भारत टैक्सी की घोषणा हुई, उसी दिन से बाजार में हलचल मच गई है। कहा जाता है कि ओला और उबर ने अपने चार्ज में बदलाव शुरू कर दिए हैं। लंबे समय से कई ड्राइवर साथी कमीशन कटौती, भुगतान में देरी और मनमानी शर्तों से परेशान थे। ऐसे में, सहकारिता आधारित मॉडल के साथ भारत टैक्सी की शुरुआत ने एक नई चर्चा शुरू कर दी है। भले ही हर जगह किराया कम न लगे, लेकिन अगर ड्राइवरों को सम्मानजनक कमाई और पारदर्शिता मिले, तो यही असली बदलाव है। गृह मंत्री होने के साथ-साथ सहकारिता मंत्रालय की कमान संभालने वाले अमित शाह का उद्देश्य भी यही जान पड़ता है कि जैसे अमूल ने दुग्ध के क्षेत्र में सहकारिता मॉडल से क्रांति लाई, वैसे ही अब ड्राइवरों और छोटे कामगारों को भी सशक्त बनाया जाएगा। इतने बड़े पद पर होते हुए भी यदि कोई टैक्सी चालकों और रोजगार से जुड़े लोगों के बारे में सोचता है, तो यह संवेदनशील नेतृत्व की पहचान है। आलोचकों की भले अन्य राय हो, लेकिन सहकारिता मॉडल शहरों में रोजगार का नया रास्ता बन सकता है। इस लिहाज से सरकार का यह प्रयास दूरगामी प्रभाव डालेगा।

गायक राम प्रजापति, टिप्पणीकार

भारत टैक्सी सहकारिता के आधार पर शुरू की गई देश की पहली सरकार समर्थित राइड-हेलिंग प्लेटफॉर्म है, जिसका उद्देश्य टैक्सी चालकों को सशक्त बनाना और यात्रियों को सस्ती सेवा प्रदान करना है। यह मोबाइल एप के माध्यम से यात्रियों को निजी ड्राइवरों से जोड़ने वाली डिजिटल परिवहन सेवा है। इस साल इसे 20 शहरों में शुरू करने की योजना है। दिल्ली, गुजरात जैसे राज्यों में इसकी शुरुआत हो भी चुकी है। इस योजना का लक्ष्य मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि सेवा है। सरकार ने स्पष्ट किया है कि भारत टैक्सी के चालक खुद को 'ड्राइवर' नहीं, बल्कि गौरव के साथ 'सारथी' कहेंगे। जैसे भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी थे, वैसे ही यह नाम ड्राइवरों को समाज में सम्मान और गरिमा प्रदान करेगा। यह पहल चालकों को एहसास कराएगी कि वे केवल आजीविका नहीं कमा रहे हैं, बल्कि देश की व्यवस्था में योगदान भी दे रहे हैं। इसे चलाने वाले सारथियों को परिश्रम के बदले कोई कमीशन नहीं देना होगा। वर्तमान में पारंपरिक एप-आधारित सेवाओं में इन ड्राइवरों को 30-40 प्रतिशत कमीशन देना पड़ता है। यात्रियों को भी भारत टैक्सी से यह फायदा है कि पीक ऑवर्स में इसमें दाम नहीं बढ़ेंगे। सरकार की मंशा साफ है। वह साल 2030 तक देश भर में एक लाख से भी अधिक गाड़ियों को इस नेटवर्क से जोड़ना चाहती है।

युगल किशोर राही, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

भारत टैक्सी

भारत टैक्सी के साथ अभी कई दिक्कतें

यह सही है कि 'भारत टैक्सी' जिस लक्ष्य के साथ शुरू की गई है, वह यदि काम कर गया, तो इस सहकारिता मॉडल का लाभ लोगों को मिल सकेगा, पर ऐसे मॉडल का क्या हश्र होता है, यह कोई छिपा तथ्य नहीं है। यही नहीं, इस कैब सेवा को अभी कई चुनौतियों से जूझना पड़ रहा है। इनमें सबसे पहली चुनौती यात्रियों के लिए है, जिनके लिए किराये की दर अन्य कैब सेवाओं से महंगी है। कहीं-कहीं तो यह काफी अधिक देखी गई है और अन्य सेवाओं के मुकाबले इसमें लगभग दोगुना का अंतर पाया गया है। हालांकि, दिक्कत सिर्फ किराये को लेकर नहीं आती, उसके भुगतान में भी आती है। खबर है कि तकनीकी गड़बड़ियों की वजह से इसमें ड्राइवरों के भुगतान में समय लगता है। वैसे, अभी 'सारथियों' को यह भी दिक्कत हो रही है कि उनको ओला, उबर जैसी लोकप्रिय कैब सेवाओं की तुलना में कम यात्री मिल रहे हैं। अगर व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद लोग इस एप की तरफ नहीं मुड़ रहे, तो यह समझा जा सकता है कि वे इसके इस्तेमाल में परेशानी झेल रहे होंगे।

इस टैक्सी सेवा को लेकर लोगों में रुझान न बढ़ने की एक बड़ी वजह एप का 'यूजर्स-फ्रेंडली' न होना भी है। बुकिंग के दौरान तकनीकी दिक्कतों की शिकायतें लोग करते हैं, जिसके कारण यात्री और ड्राइवर, दोनों को परेशानी हो रही है। बेशक, यह कहा जा रहा है कि भारत टैक्सी की कुल कमाई का 20 प्रतिशत सारथी बंधुओं की पूंजी के रूप में भारत टैक्सी के खाते में जमा किया जाएगा और बाकी 80 प्रतिशत टैक्सी द्वारा तय की गई किलोमीटर की दूरी के आधार पर सारथियों को वापस किया जाएगा, पर इससे ड्राइवरों की उलझन और बढ़ गई है। कोऑपरेटिव कैपिटल का 20 प्रतिशत भारत टैक्सी द्वारा रख लिए जाने से सारथियों को वाकई लंबे समय में फायदा हो सकेगा, इस पर संदेह बना हुआ है। इस तरह के मॉडल का मकसद हिस्सेदारों को ज्यादा स्थायित्व और सफलता में हिस्सेदारी देना होता है, मगर भारत टैक्सी तो मुनाफे का 20 प्रतिशत रोक लेगी, जिससे दूसरी कैब सेवाओं की तुलना में ड्राइवरों की कमाई कम हो सकती है।

कुल मिलाकर देखें, तो अभी इस टैक्सी सेवा की राह में चुनौतियां अधिक हैं। हां, जैसा कि सरकार की तरफ से कहा गया है कि इसकी शुरुआती मुश्किलों को दूर करने का काम हो रहा है, तो संभव है कि आने वाले दिनों में यह यात्रियों और ड्राइवरों, दोनों के लिए सुखद हो। आखिरकार हमें इस तरह की सेवाओं की जरूरत तो है ही।

शुभांगी, टिप्पणीकार

खुद पर भरोसे का रंग सबसे गाढ़ा

जब मन में संशय हो, तो बेहतरीन रास्ता भी धुंधला दिखने लगता है। खुद पर भरोसे की कमी मुमकिन कामों को भी नामुमकिन बना देती है। हमारी छोटी-बड़ी सफलताएं हमारे आत्मविश्वास के विकास की यात्रा भी होती हैं। दूसरों से तुलना, अतीत के जख्म और गलत संगति अक्सर हमारे आत्मविश्वास को दीमक की तरह चाट जाते हैं। अच्छी बात यह है कि आत्मविश्वास कोई जन्मजात गुण नहीं है। अच्छी आदतों के अभ्यास के साथ आत्मविश्वास बढ़ाया जा सकता है।

जैक केनफील्ड
अमेरिकी लेखक और प्रेरक वक्ता। 'चिकन सूप फॉर द सोल' आपकी प्रसिद्ध किताब है।

जेक को एहसास हुआ कि वह जिस रास्ते पर हैं, वह उन्हें खुशी नहीं दे रहा। उन्होंने खुद पर भरोसा किया और दुनिया घूमने के अपने सपने को पूरा करने के लिए ग्वाटेमाला चले गए। वहां उन्होंने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाई और वह उद्देश्य पाया, जिसकी उन्हें तलाश थी। यह सब इसलिए संभव हुआ, क्योंकि उन्होंने माना कि 'यह मुमकिन है'।

आपके जीवन में आज जो कुछ भी है- आपकी सफलताएं, रिश्ते और आपकी स्थिति- वह आपके स्वयं पर विश्वास और इस अटूट भरोसे का परिणाम है। सफलता की सीढ़ी चढ़ने के लिए खुद पर यकीन करना कोई विकल्प नहीं, बल्कि पहली शर्त है। आइए जानते हैं कि इस आत्मविश्वास को कैसे विकसित किया जाए और यह आपके जीवन के लिए क्यों अनिवार्य है?

सबसे खतरनाक झूठ : 'हम नहीं कर सकते'

क्या आपने कभी सोचा है कि आपकी मानवीय क्षमता का सबसे बड़ा दुश्मन कौन है? वे हैं आपके चार शब्द - 'हम नहीं कर सकते।' यह वह झूठ है, जिसे अधिकांश लोग बार-बार दोहराते हैं, ताकि उन्हें अपने 'कम्फर्ट जोन' से बाहर न निकलना पड़े।

लोग जोखिम लेने से डरते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वे असफल हो जाएंगे, लेकिन सच तो यह है कि असफलता केवल एक सबक है, जो आपको वह जानकारी देती है, जिसकी कमी के कारण आप इस बार सफल नहीं हो पाए। असहज महसूस करना बुरा नहीं है, इसका मतलब है कि आप कुछ नया सीख रहे हैं, जो आपकी व्यक्तिगत वृद्धि के लिए जरूरी है। जब आप 'मैं नहीं कर सकता' के बंधन तोड़कर 'मैं कर सकता हूं' के सच को गले लगाते हैं, तो आप अपनी कल्पना को हकीकत में बदलने की दिशा में पहला कदम बढ़ाते हैं।

क्यों नहीं स्वयं पर विश्वास

आत्मविश्वास की राह में कुछ मानसिक बाधाएं अक्सर रुकावट बनती हैं। इन्हें पहचानना और हटाना बेहद जरूरी है-

■ **तुलना का जाल:** दूसरों से अपनी तुलना करना हमेशा दुख का कारण बनता है। हम अक्सर दूसरों की बाहरी चकाचौंध को उनका पूरा सच मान लेते हैं, जबकि हमें उनके आंतरिक संघर्षों का पता ही नहीं होता। याद रखें, सफलता का फलक संकीर्ण नहीं होता। दूसरे की जीत आपकी हार नहीं है।

■ **अतीत के जख्म:** कई बार बचपन में किसी शिक्षक या बड़ों की कही नकारात्मक बातें हमारे मन में घर कर जाती हैं। 'तुमसे यह नहीं होगा' जैसे वाक्य हमारे आत्मविश्वास को गहरी चोट पहुंचाते हैं। इन पुरानी यादों को मिटाने के लिए नियमित 'माइंडसेट प्रैक्टिस' या प्रोफेशनल मदद की जरूरत हो सकती है।

■ **गलत संगति:** आपके आसपास के लोगों की आपकी सफलता में बड़ी भूमिका होती है। जो भी आपके मित्र या रिश्तेदार बेवजह की कमियां निकालते हैं, टोका-टाकी करते हैं, उनके साथ दूरी बना लें। आपको ऐसे लोगों की जरूरत है, जो आपके सपनों को पंख दें, न कि उन्हें काटें।

■ **आत्मघात :** कभी-कभी हम अपने सबसे बड़े दुश्मन बन जाते हैं। टालमटोल करना या अवसरों को नजरअंदाज करना केवल खुद को हार के डर से बचाने का एक तरीका है। वास्तव में ऐसा करना हमें अपनी वास्तविक क्षमताओं से दूर कर देता है।

jackcanfield.com

पहले आप तो करें खुद पर भरोसा

एक पुरानी कहावत है- यदि आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते, तो दुनिया आप पर क्यों करेगी? यह बात सुनने में कठोर लग सकती है, लेकिन पूरी तरह सत्य है। जब आप आत्म-संदेह से भरे होते हैं और अपनी क्षमताओं पर सवाल उठाते हैं, तो दूसरे लोग भी इसे भांप लेते हैं। वे आपकी झिझक को इस बात के प्रमाण के रूप में देखते हैं कि आप अभी बड़ी जिम्मेदारियों या सफलता के लिए तैयार नहीं हैं। इसके विपरीत, जब आप आत्मविश्वास से भरे होते हैं, तो लोग आपके दृष्टिकोण की ओर आकर्षित होते हैं और आपकी मदद के लिए आगे आते हैं। मानसिकता में छोटे-छोटे बदलाव आपमें आत्म सम्मान की भावना का विकास करता है।

खुद पर यकीन करने के 4 सुनहरे कदम

सफलता की राह में अपनी बाधाएं समझने के बाद अब समय है उन्हें दूर करने का। नीचे दिए चार चरण आपकी सोच को नई दिशा देंगे-

1 विश्वास करें कि यह संभव है : नियमित रूप से 'आत्म-चिंतन' करें। उन सभी छोटी-बड़ी उपलब्धियों की सूची बनाएं, जो आपने अब तक हासिल की हैं। यह अभ्यास आपको याद दिलाएगा कि आप चुनौतियों से पार पाने में सक्षम हैं। खुद से पॉजिटिव बातें करने की आदत डालें। खुद को बताएं कि आप बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने के हकदार हैं।

2 'विजन बोर्ड' बनाएं : कल्पना की शक्ति बहुत बड़ी होती है। अपने भविष्य का एक स्पष्ट चित्र अपने दिमाग में बनाएं। इसके लिए आप 'विजन बोर्ड' की मदद ले सकते हैं। अपनी आंखों के सामने उन लक्ष्यों की तस्वीरें लगाएं, जिन्हें आप पाना चाहते हैं। जब आप सफलता को हर रोज अपनी आंखों के सामने देखते हैं, तो आपका मस्तिष्क उसे हकीकत बनाने के लिए सक्रिय हो जाता है।

3 निर्णायक कदम उठाएं : सिर्फ सोचना और विजन बोर्ड बनाना काफी नहीं है। नतीजे, काम करने से मिलेंगे। बहुत से लोग इसलिए रुक जाते हैं, क्योंकि वे डरते हैं। याद रखें, साहस डर का होना नहीं है, बल्कि डर के बावजूद आगे बढ़ना है। छोटे-छोटे कदम उठाएं। यदि आप गिरते भी हैं, तो उठें, सबक सीखें और फिर से चल पड़ें।

4 जैसा बनना चाहते हैं, वैसा आचरण करें : यह सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है। यदि आप एक सफल उद्यमी या वक्ता बनना चाहते हैं, तो आज से ही वैसे ही व्यवहार करना शुरू करें। सोचिए, एक सफल व्यक्ति कैसे कपड़े पहनता होगा, वह संकट के समय कैसा व्यवहार करता होगा या वह दूसरों से कैसे बात करता होगा? जब आप 'सफल व्यक्ति' की तरह अभिनय करना शुरू करते हैं, तो आपका अवचेतन मन इसे सच मानने लगता है और आपको वैसे ही अवसर मिलने लगते हैं।

काम की बात

आपके ये हुनर कोई चुरा नहीं सकता

अक्सर हम जिन सुख-सुविधाओं से अपनी सफलता मापते हैं, वे कठिन समय आने पर हमारा साथ छोड़ती दिखती हैं। हमारी असली सफलता उन कौशल में है, जो हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा होते हैं। आइए इन्हें जानें...

1 दबाव में शांत रहना
ज्यादातर लोग बुरे हालात में केवल प्रतिक्रिया (रिएक्शन) देते हैं। सफल लोग वे होते हैं, जो सोच-समझकर विचार जाहिर (रिस्पॉन्ड) करते हैं।
■ **क्या करें:** कोई भी जवाब देने से पहले 5 सेकेंड रुकें। भावनाओं और तथ्यों को अलग करके ही फैसला लें।

2 रणनीतिक सोच
सिर्फ काम करना काफी नहीं है, यह सोचना जरूरी है कि आपके कदम का भविष्य में क्या नतीजा होगा।
■ **क्या करें:** हमेशा खुद से पूछें-'इसके बाद क्या होगा?' दिनों के बजाय महीनों और वर्षों की योजना बनाएं।

3 कहानी सुनाने की कला में माहिर
दुनिया का सबसे बेहतरीन विचार भी तब तक बेकार है, जब तक आप उसे सही ढंग से दूसरों तक न पहुंचा सकें।
■ **क्या करें:** शब्दों की बाजीगरी के बजाय उदाहरणों का प्रयोग करें। पहले संदर्भ बताएं, विस्तार में बाद में जाएं।

4 रचनात्मक हल
जब कोई स्पष्ट समाधान खोज रहा हो, तब वह व्यक्ति जीतता है, जो समस्या को नए नजरिये से देखता है।
■ **क्या करें:** उत्तर खोजने से पहले समस्या को नए सिरे से परिभाषित करें। कम से कम तीन संभावित समाधान जरूर निकालें।

5 अनुकूलन क्षमता
दुनिया किसी भी योजना से कहीं अधिक तेजी से बदलती है। जो तालमेल बनाना जानते हैं, वे ही बचते हैं। जो सख्त रहते हैं, वे टूट जाते हैं।
■ **क्या करें:** नई जानकारी मिलते ही अपने नजरिये में भी सुधार करें। नई जानकारियों के साथ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ें।

6 अनुशासन में रहना
हमारी प्रेरणा में कमी या बढ़ोतरी होती रहती है। अकेले प्रेरणा का होना ही सब कुछ नहीं होता। अनुशासन ही हमें मंजिल तक पहुंचाता है।
■ **क्या करें:** सबसे महत्वपूर्ण काम दिन की शुरुआत में ही खत्म करें। मूड के हिसाब से नहीं, बल्कि एक तय व्यवस्थित तरीके से काम करें।

7 खुद को गहराई से जानना
अपनी खूबियों और कमियों को समझना और उन पर काम करना, हमें दूसरों की तुलना में आगे बढ़ाता है।
■ **क्या करें:** अपनी गलतियों के पैटर्न को ट्रैक करें।

नेटन मोहार्ट, उद्यमी

उबंटू यानी सबको साथ लेकर आगे बढ़ें

आज हर तरफ 'मैं' और 'मेरा' का शोर है। अकेलापन बढ़ रहा है। ऐसे में दक्षिण अफ्रीका का प्राचीन दर्शन उबंटू हमें याद दिलाता है कि हमारी असली ताकत एक-दूसरे का सहारा बनने में है। 'मैं हूं, क्योंकि हम हैं' यह महज एक विचार नहीं, बल्कि एक सफल लीडर और खुशहाल जीवन का सूत्र भी है।

कुछ साल पहले की बात है, किसी ने मुझसे मेरा हालचाल पूछा। मेरे ठीक कहने पर उन्होंने कहा, 'आप ठीक हैं, तो हम भी ठीक हैं।' मुझे यह सुनकर अच्छा लगा। मैं उन लोगों से पहली बार मिल रही थी। बाद में जब उबंटू के बारे में जाना, तो वही शिष्टाचार याद आ गया।

दक्षिण अफ्रीकी दर्शन 'उबंटू' का सरल अर्थ है- मैं हूं, क्योंकि हम हैं। यह हमें समाज, मानवता और प्रकृति से जोड़ने वाली एक जीवनशैली है। यहां तक कि रंगभेद नीति के खत्म होने के बाद महान नेता नेल्सन मंडेला ने समाज को जोड़ने और लोगों को एक-दूसरे को माफ करने के लिए इस प्राचीन सूत्र को अपनाने के लिए कहा था। एक इंटरव्यू में जब मंडेला से उबंटू के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा, 'पुराने समय में, जब कोई यात्री हमारे गांव में रुकता था, तो उसे भोजन या पानी मांगना नहीं पड़ता था। जैसे ही वह रुकता, लोग स्वयं ही उसके सत्कार और मनोरंजन में जुट जाते थे।'

सबको साथ चाहिए

चाहे घर हो या दफ्तर, दूसरों का सहयोग ही हमारी सफलता को बड़ा बनाता है। सच तो यह है कि बड़े लक्ष्य साझा प्रयासों से ही प्राप्त किए जा सकते हैं। आज हर तरफ 'मैं' और 'मेरा' का शोर है, वहां यह समझना कि हमारी सफलता अकेले हमारी नहीं है, हमारे भीतर के अहंकार और बेचैनी को कम कर सकता है। दक्षिण अफ्रीका के आर्कबिशप और नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित डेसमंड टूटू ने यहां तक कहा, 'जब हम किसी एक को नीचा दिखा रहे होते हैं तो हम स्वयं को भी नीचा दिखाते हैं।'

साइकोलॉजी टूडे में डीपॉल यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञानी डेकन जोसेफ के अनुसार, उबंटू बताता है कि हमें दूसरे मनुष्यों से, प्रकृति से, जीव मात्र से कैसा व्यवहार करना चाहिए। जब हम दूसरों को प्रेम व सम्मान नहीं दे पाते, तो हमारी मानवता सिकुड़ जाती है। यह सोचना कि दूसरों का दुख, हमारा दुख है और उनकी खुशी, हमारी खुशी, हमारे व्यवहार और जिंदगी को पूरी तरह बदल सकता है।'

गौर करें तो हम दिन भर में कई बार 'उबंटू' का पालन करते हैं- अपने सहकर्मियों की मदद करना, दूसरों को ध्यान से सुनना, अपना ज्ञान बांटना और जीत का श्रेय पूरी टीम को देना। उबंटू का अर्थ यह नहीं कि आप अपनी प्रगति न करें। यह बस इतना है कि आपकी तरक्की से दूसरों का जीवन भी बेहतर बने। 'द बुक ऑफ मिर्दाद' में मिखाइल नैमी कहते हैं कि विभाजन केवल एक भ्रम है। और आधुनिक मैनेजमेंट और लीडरशिप कोच कहते है, अच्छा नेता वह नहीं, जो खुद आगे बढ़ने की होड़ में रहता है, बल्कि वह है, जो दूसरों को आगे बढ़ने का हुनर और हौसला देता है।

पूनम जैन

एक दुखी तो सब दुखी

एक मानवविज्ञानी ने अफ्रीका के आदिवासी बच्चों को एक खेल खेलने के लिए कहा। उसने मिठाइयों से भरी एक टोकरी को एक पेड़ के पास रख दिया। उसने बच्चों से कहा, जो भी दौड़कर सबसे पहले टोकरी के पास पहुंचेगा, वह टोकरी उसकी हो जाएगी। मानवविज्ञानी ने देखा बच्चों ने दौड़ना शुरू न करके एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और एक साथ पेड़ की ओर दौड़ने लगे। पास जाकर उन्होंने टोकरी उठाई, वहीं घेरा बनाया और सारी मिठाइयां आपस में बांटकर मजे में खाने लगे। अब मानवविज्ञानी ने बच्चों से पूछा, 'तुमने ऐसा क्यों किया? कोई भी बड़े आराम से पूरी टोकरी जीत सकता था।' इस पर सब बच्चों ने कहा, 'उबंटू। कोई एक व्यक्ति कैसे खुश रह सकता है, जब दूसरे दुखी हों।'

एकदा

विनम्रता

एक गांव में चंद्रभूषण नाम के विद्वान थे। वह थोड़ा अटककर बोलते थे। बावजूद उनकी कथा ऐसी होती थी कि लोग मुग्ध हो जाते थे।

उसी गांव के एक अन्य प्रकांड विद्वान नंबियार को अपने ज्ञान पर बड़ा अहंकार था। वे चंद्रभूषण की लोकप्रियता से मन ही मन ईर्ष्या रखते थे। एक शाम जब नंबियार ने अपनी पत्नी को भी चंद्रभूषण की कथा में बैठे देखा, तो उनका क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया। उन्होंने भरी सभा में चंद्रभूषण को 'मूर्ख' कहकर अपमानित किया।

चंद्रभूषण चुप रहे। सभा बिखर गई। नंबियार ने घर आकर अपनी पत्नी को भी वहां जाने के लिए गुस्सा किया। इस पर पत्नी को भी गुस्सा आ गया। उसने नंबियार के अहं को चुनौती देते हुए कहा, 'क्यों अपने मुंह मियां मिट्ठू बनते हो? कभी सोचा है कि तुम्हें सुनने के लिए लोग क्यों नहीं आते? मैं तो तुम्हारी जली-कटी रोज सुनती हूं, अब तुम दूसरों को भी नीचा दिखाने लगे। तुम्हें ईर्ष्या के सिवा कोई काम नहीं है?

रात भर नंबियार को नींद नई आई। वह जितना घटना के बारे में सोचते, उतना बेचैन हो उठते। उन्हें अपने व्यवहार पर गहरा पश्चाताप हुआ।

अगली सुबह जब नंबियार क्षमा मांगने के लिए निकले, तो उन्होंने देखा कि कड़ाके की ठंड में चंद्रभूषण स्वयं उनके दरवाजे पर बैठे हैं। नंबियार के पैर छूते हुए चंद्रभूषण बोले, 'आपने कल सबके सामने मेरा दोष बताकर मुझ पर उपकार किया। मैं रात भर यहां बैठा रहा, ताकि आप बाहर आएं और मैं अपनी कमियों के लिए आपसे क्षमा मांग सकूं।'

चंद्रभूषण की इस अगाध विनम्रता देखकर नंबियार लज्जित हो गया।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन परेशान रहेगा। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। बेकार की बहस से बचें। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे।

वृष : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। परिवार का साथ मिलेगा। किसी राजनेता से भेंट हो सकती है। संतान की सेहत का ध्यान रखें। नौकरी में आय में वृद्धि होगी।

मिथुन : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। वाणी में मधुरता रहेगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। लाभ के अवसर मिलेंगे।

कर्क : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। घर-परिवार में धार्मिक संगीत के कार्यक्रम हो सकते हैं। परिवार की किसी बुजुर्ग महिला से धन की प्राप्ति हो सकती है।

सिंह : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, पर मन परेशान हो सकता है। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। परिवार की सेहत का ध्यान रखें।

कन्या : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव भी रहेंगे। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। कार्यक्षेत्र में तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं।

तुला : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। माता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में लाभ में वृद्धि होगी।

वृश्चिक : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग हैं।

धनु : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। लेखनादि बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। परिश्रम अधिक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मकर : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। सेहत का ध्यान रखें। किसी संपत्ति से आय के साधन बन सकते हैं।

कुंभ : आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने के प्रयास करें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार के लिए परिवार की किसी बुजुर्ग महिला से धन मिल सकता है।

मीन : मन प्रसन्न रहेगा। संतान की ओर से सुखद समाचार मिल सकता है। कारोबार के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। पिता का साथ मिल सकता है।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषभुकांत गोस्वामी

2 मार्च, सोमवार, **शक संवत्:** 11 फाल्गुन (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 19 फाल्गुन मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 12 रमजान, 1447, **विक्रमी संवत्:** फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी तिथि सायं 05.56 बजे तक पश्चात पूर्णिमा। चंद्रमा कर्क राशि में प्रातः 07.52 बजे तक उपरांत सिंह राशि में।

सूर्य उत्तरायण। प्रातः 07.30 मिनट से प्रातः 09 बजे तक राहुकालम्। भद्रा सायं 05.56 बजे से सूर्योदय पूर्व 05.32 बजे तक। होलिका दहन। श्री सत्यनारायण व्रत। लक्ष्मीनारायण व्रत।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि होलिका दहन में किन वस्तुओं का उपयोग करना उचित रहेगा?
-विनय कुमार, धनबाद

- होलिका दहन में लौंग डालने से जीवन में उलझन एवं अशांति कम होती है।
- होलिका दहन में उपले डालने से जीवन की नकारात्मकता दूर होती है।
- होलिका दहन में 7 हल्दी की गांठें डालने से विवाह में आ रही बाधाओं का निवारण होता है। वहीं हरी इलायची डालने से निर्णय क्षमता बढ़ती है, व्यापार में लाभ होता है।
- होलिका दहन में चंदन डालने से सुख-समृद्धि आती है। होलिका दहन में बताशे डालने से सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। गुड़ डालने से कर्ज उतारने में आसानी होती है।

वर्ग पहेली : 8256

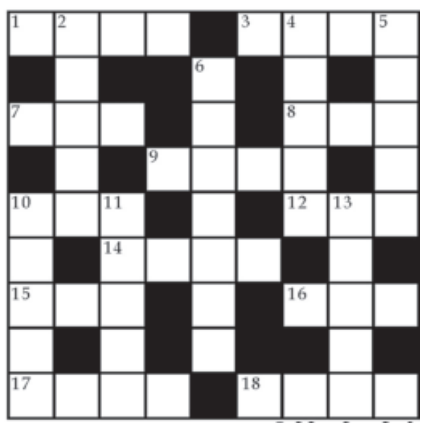

बाएं से दाएं
1. बड़ा पेड़; बड़ा वृक्ष (4)
3. चकित हो जाना; भ्रमित होना; चक्कर खाना; घूमना (4)
7. जो दूसरे स्थान से आया हो; बाहर से आया हुआ; विदेश से मंगवाया गया माल (3)
8. धोने वाला; धोबी (3)
9. संयुक्त; मिला हुआ; जमा किया हुआ; एकत्र (4)
10. सामग्री; आतिशबाजी; नमक मिर्च आदि पदार्थ (3)
12. साल का बारहवां भाग; मास; माह (3)
14. जिसे देखने से भय लगता हो; खौफनाक; डरावना; भयानक; विकराल (4)
15. प्रतियोगी दरों पर माल उपलब्ध कराने के लिए दिया गया आमंत्रण; टेंडर (3)
16. तीन घंटे का समय; दिन का आठवां भाग (3)
17. जी की धकधक; दिल की धकधक (4)
18. परिवर्तन; परिवर्तित स्थिति (4)

ऊपर से नीचे
2. धन दौलत; धन संपत्ति; नकदी (3,2)
4. अत्यंत कठोर; बहुत कड़ा; बेहद सख्त; अति निष्ठुर; बहुत बेरहम (5)
5. ईश्वर में अविश्वास होना; आस्तिक न होना; धर्महीन होना (3,2)
6. खोई हुई वस्तु को प्राप्त करना; ढूंढ निकालना; बाहर लाना (4,3)
10. मद्य सेवन की मनाही; नशे पर लगी रोक; शराबबंदी (5)
11. जिससे लाभ हो; फायदेमंद; लाभकारी; गुणकारी (5)
13. बहाना; टालमटोल (2,3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8255

सुडोकू : 8238 *कठिन

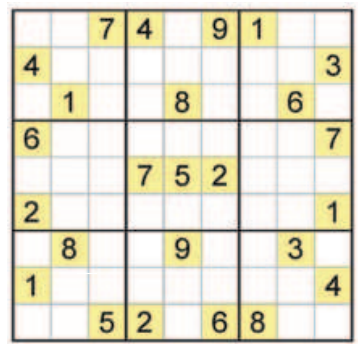

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8237

1	6	9	2	8	3	7	4	5
3	5	2	1	7	4	9	6	8
8	7	4	6	9	5	2	3	1
5	9	3	4	6	1	8	7	2
2	1	7	5	3	8	4	9	6
4	8	6	9	2	7	1	5	3
9	4	1	3	5	2	6	8	7
7	2	5	8	4	6	3	1	9
6	3	8	7	1	9	5	2	4

अमर उजाला

प्रवाह

7 साल बेमिसाल

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

नई दिल्ली ■ सोमवार, 2 मार्च 2026

युद्ध न केवल पराजित के लिए, बल्कि विजेता के लिए भी हानिकारक है।
-लुडविग वॉन माइस

अमेरिका इस्राइल और ईरान के बीच जारी युद्ध अगर जल्द नहीं रुका, तो यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए तो घातक होगा ही, इसकी गूंज भारत के लिए भी कूटनीतिक एवं आर्थिक असमंजस का कारण बन सकती है।

युद्ध की गूंज

अमेरिका और इस्राइल के संयुक्त सैन्य हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामनेई की मौत के बाद ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड की इतिहास का सबसे खतरनाक हमला करने की धमकी और फिर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की पलटवार की चेतावनी से साफ है कि यह युद्ध तुरंत खत्म नहीं होने वाला है। इससे दुनिया भर की अर्थव्यवस्था पर तो असर पड़ेगा ही, इसने भारत के लिए भी कूटनीतिक एवं आर्थिक चुनौती पैदा कर दी है। हमलों की वजह से होर्मुज जलडमरूमध्य को ईरान ने बंद कर दिया है, जिससे दुनिया भर की तेल व गैस आपूर्ति का करीब 20 फीसदी हिस्सा गुजरता है। अगर यह लड़ाई लंबी चलती है, तो वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की आपूर्ति घट जाएगी और उसकी कीमतें आसमान छूने लगेंगी। यही नहीं, इस जंग की वजह से वैश्विक शेयर बाजार में भी उथल-पुथल की आशंका है, जो इस साल ट्रंप के टैरिफ और तकनीकी क्षेत्र में भारी बिकवाली की वजह से पहले ही बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव देख चुका है। इससे वित्तीय बाजार पर भी भारी असर पड़ सकता है, क्योंकि शेयर बाजार के अस्थिर होने पर निवेशक सोने-चांदी की तरफ रुख करेंगे, जिसकी कीमत रिकॉर्ड स्तर पर रही है। ईरान ब्रिक्स का एक महत्वपूर्ण सदस्य है, जिसकी अध्यक्षता अभी भारत के पास है, ऐसे में इस युद्ध से भारत के लिए असमंजस की स्थिति पैदा हो गई है। इसलिए हमेशा से शांति और संवाद के समर्थक भारत ने उचित ही कहा है कि 'तनाव कम करने और संबंधित मुद्दों को सुलझाने के लिए बातचीत और कूटनीति को आगे बढ़ाया जाना चाहिए तथा सभी देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान किया जाना चाहिए।' चूंकि खाड़ी क्षेत्र में बहुत से भारतीय रहते हैं और खाड़ी देशों से हमारे व्यापारिक रिश्ते भी हैं, इसलिए भारत की चिंता स्वाभाविक है। खाड़ी देशों में अस्थिरता बढ़ने से उस क्षेत्र में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा और उनके द्वारा भेजे जाने वाले धन के प्रवाह पर भी असर पड़ सकता है। विदेश मंत्रालय ने एक एडवाइजरी जारी करके उस क्षेत्र में रहने वाले भारतीय नागरिकों को सतर्क रहने और स्थानीय सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की सलाह दी है। हालांकि भारत ईरान से तेल आयात नहीं करता, लेकिन भारत में तेल होर्मुज स्ट्रेट से ही होकर आता है, जिसके बाधित होने पर देश में ऊर्जा आपूर्ति पर असर पड़ने के साथ पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ेंगी और उससे राजकोषीय दबाव बढ़ सकता है। भारत की प्राथमिकता अपने नागरिकों की रक्षा, ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना और दोनों पक्षों के साथ अपने हितों को संतुलित रखना है। इस चुनौतीपूर्ण घड़ी में भारत ने सभी पक्षों से संयम, संवाद और कूटनीति की राह पर लौटने की जो अपील की है, उसकी गंभीरता समझी जा सकती है।

ईरान का भविष्य अंधकारमय ही है

इस युद्ध का नतीजा चाहे जो भी हो, ईरानियों को निकट भविष्य में शांति और स्थिरता मिलने वाली नहीं है। ईरान के एक अधिक स्वतंत्र समाज के रूप में उभरने, और करोड़ों ईरानियों के रहने के लिए सही जगह बनने की संभावना अब भी कम ही है।

अमेरिका और इस्राइल के संयुक्त हमले के चलते ईरान पर लगातार बम गिराए जा रहे हैं। जैसा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, शनिवार को शुरू हुए हमलों के घोषित उद्देश्य ईरानी शासन को पलटना, उसकी सेना को नष्ट करना और उसकी परमाणु क्षमता को समाप्त करना है। लेकिन यह समझना मुश्किल नहीं है कि भले ही अमेरिका और इस्राइल इन घोषित लक्ष्यों को हासिल कर लें, फिर भी ईरानियों को निकट भविष्य में शांति और स्थिरता मिलने वाली नहीं है। एक वीडियो संदेश में, ट्रंप ने ईरानियों से कहा कि 'आपकी आजादी की घड़ी आ गई है,' और जब अमेरिका अपना काम पूरा कर लेगा, तो 'सरकार आपकी होगी।' लेकिन ईरान के एक अधिक स्वतंत्र समाज के रूप में उभरने, और करोड़ों ईरानियों के रहने के लिए सही जगह बनने की संभावना कम ही है।

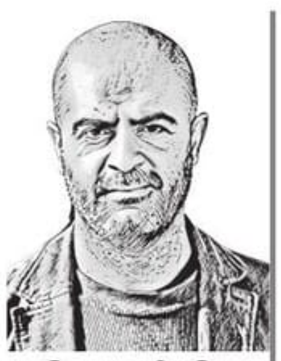

आमिर अहमदी एरियन
ईरानी-अमेरिकी लेखक व पत्रकार

आगे क्या होगा, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। लेकिन, इतिहास बताता है कि सैन्य अभियान के बाद जिन देशों पर हमला हुआ, उनके साथ क्या हुआ, और हम उनसे सबक ले सकते हैं। वर्ष 2019 में, रैंड कॉरपोरेशन ने एक अध्ययन प्रकाशित किया, जिसमें दुनिया भर में अमेरिकी सैन्य दखल के सैकड़ों मामलों की पड़ताल की गई। लेखकों ने तीन बड़े कारकों की पहचान की, जो यह तय करते हैं कि जिस देश पर हमला किया जाता है, वह अंततः बेहतर स्थिति में रहता है या नहीं।

पहली वजह थी पहले से मौजूद जातीय और धार्मिक तनाव। अमेरिकी हमले के बाद इराक में अफरा-तफरी की एक बड़ी वजह यह थी, और इसी वजह से जापान को दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सामाजिक एकता वापस लाने में मदद मिली। पश्चिम एशिया के ज्यादातर देशों के मुकाबले, ईरान लंबे समय से काफी हद तक एकजुट समाज रहा है, जिसका एक कारण सदियों से स्थिर रही सीमाएं हैं। पर इस्लामी गणराज्य द्वारा जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ 47 साल की सरकारी हिंसा ने लंबे समय से दबी हुई दरारों को जगा दिया है, जिससे हमले के बाद सांप्रदायिक खून-खराबे का खतरा काफी बढ़ गया है। दूसरी वजह थी भरोसेमंद राजनीतिक संस्थाओं का होना, खासकर सक्रिय सरकारी एजेंसियां जो देश को स्थिर कर सकें या युद्ध के समय मानवीय राहत का संचालन कर सकें। ईरान में, बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुनियोजित तरीके से खोखला करना और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली वर्ग पर लोगों के गहरे अविश्वास ने उन ढांचों को काफी हद तक बेअसर बना दिया है। तीसरी वजह थी-आर्थिक मजबूती। आज ईरान की अर्थव्यवस्था बहुत नाजुक है। महंगाई 70 फीसदी से ज्यादा हो गई है। अकेले 2025 में ही मुद्रा की कीमत 84 फीसदी कम हो गई। यह सब बिगड़ते पर्यावरण संकट से और बढ़ गया है। हर तरह से, ईरानी अर्थव्यवस्था तबाही के कगार पर है।

रैंड रिपोर्ट के लेखकों ने जर्मनी और जापान जैसी जगहों पर दखल के उदाहरणों की तुलना लीबिया, इराक और सीरिया में दखल से की, ताकि यह दिखाया जा सके कि इन वजहों ने नतीजों को कैसे प्रभावित किया। आज ईरान दूसरे समूह में आ सकता है, जिसने अमेरिकी सैन्य कार्रवाई के बाद अफरा-तफरी, संघर्ष और नागरिक ढांचों को टूटते हुए देखा। बहुत संभव है कि ट्रंप शायद सरकार के शीर्ष पर बैठे खास सैन्य व राजनीतिक नेतृत्व को हटाने में कामयाब हो जाएं, जीत की घोषणा कर दें और फिर फैली अफरा-तफरी का इल्जाम ईरानियों पर डाल दें। शायद वह अपने अगले एजेंडे की तरफ बढ़ जाएंगे और ईरानियों को एक बर्बाद देश में जिंदा रहने के लिए छोड़ दिया जाएगा।

ईरान में सैन्य दखल के बारे में मेरे नकारात्मक नजरिये को, हर तरह के विदेशी दखल के विरोध के रूप में नहीं समझना चाहिए। कुछ आकलनों से पता चलता है कि जनवरी में प्रदर्शनों के दौरान दो दिनों में सरकार ने हजारों निहत्थे लोगों को मार डाला होगा, और हिंसा फिर भी खत्म नहीं हुई। इसके अलावा हजारों आम लोगों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें से ज्यादातर बच्चे थे। कई लोगों को लंबी जेल की सजा हो सकती है। कुछ को मौत की सजा हो सकती है।

यह हिंसा इस्लामी गणराज्य के बुनियादी नियमों से उतनी अलग नहीं है, जितनी कि उन्हीं की ओर वापसी है। 1980 के दशक में, जब सरकार को अपने वजूद पर खतरा महसूस हुआ, तो उसने भी इसी तरह सख्ती से जवाब दिया। लगभग आधी सदी से, ईरान के नेता अपने वजूद पर आए खतरों का जवाब ईरानी लोगों के खिलाफ भारी हिंसा से देते रहे हैं।

इतनी बड़ी लड़ाई शुरू या खत्म करने का फैसला करना आम लोगों के हाथ में नहीं होता, और इराक से लेकर गाजा तक का हालिया इतिहास बताता है कि ऐसे समय में सड़कों पर होने वाले विरोध प्रदर्शन वाशिंगटन और दूसरी जगहों पर फैसला लेने वालों पर कोई असर नहीं डालते। ऐसी निराशा की स्थिति में ईरानियों और दुनिया को ईरानी लोगों की भलाई और सुरक्षा को विचारधारा से ज्यादा जरूरी बनाना चाहिए, और उसके लिए मिलकर ठोस कदम उठाने चाहिए।

विपक्षी पार्टियों और निर्वासित समूहों को ईरान वापस लौटने के लिए अभियान चलाने चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे फलस्तीनी लोगों ने चलाया है। जैसे ही बमबारी बंद हो, निर्वासित लोगों की वापसी के लिए अभियान चलाने चाहिए। देश से निकाले गए कई ईरानी बहुत काबिल डॉक्टर, इंजीनियर और दूसरे पेशेवर हैं, जो सरकारी एजेंसियों के काम न करने पर, देश को स्थिर करने और दुख कम करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। उनके लौटने से बचे हुए सरकारी सुरक्षा बलों के लिए सत्ता पर अपनी पकड़ फिर से मजबूत करना मुश्किल हो जाएगा। यह ईरानी लोगों के लिए भी एक बड़ा मौका होगा, जो खुद गुस्से और आपसी संघर्ष में बंटे हुए हैं, ताकि वे देश के लिए काम कर सकें।

इस युद्ध का नतीजा चाहे जो भी हो, देशों को आर्थिक पाबंदियों को तेजी से हटाने के लिए एक वैश्विक अभियान का समर्थन करना चाहिए, जिसने ईरान को वैश्विक अर्थव्यवस्था से अलग कर दिया था। इन पाबंदियों ने सरकार को कमजोर करने के बजाय मजबूत ही किया। इन्हें हटाने से कम से कम आम ईरानियों पर इस नई लड़ाई के बुरे असर को कम करने में मदद मिलेगी, जिन्हें इसका सबसे ज्यादा खामियाजा भुगतना पड़ेगा, और आने वाले दिनों में नष्ट होने वाले जरूरी बुनियादी ढांचे को फिर से बनाने में मदद मिलेगी। ईरानियों को एक नए तरह के अंतरराष्ट्रीयतावाद की जरूरत है। आम ईरानियों की वैश्विक मामलों में ज्यादा दखल होनी चाहिए। शुरुआत करने के लिए ईरान किसी भी दूसरी जगह जितना ही अच्छा है।

©The New York Times 2026

अंतरराष्ट्रीय

उम्मीदें अब भी कायम हैं

अगर यह युद्ध लंबा खिंचता है, तो मुमकिन है कि भारत को ऊर्जा आपूर्ति में कुछ बाधाओं का सामना करना पड़े, पर यदि ईरान में एक प्रगतिशील सरकार सत्ता में आती है, तो पश्चिम एशिया में हमारी परियोजनाएं और तेजी से आगे बढ़ सकेंगी।

सुशांत सरीन

भारत के लिए यह बहुत बड़ी चिंता का विषय है कि अमेरिका-इस्राइल और ईरान युद्ध का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा। खासकर ऐसे समय में, जब हमने रूस से तेल लेना कम कर दिया है, ऊर्जा आपूर्ति में बाधा का आर्थिक प्रभाव गहरा हो सकता है। हम ज्यादातर तेल आयात खाड़ी देशों से करते हैं। होर्मुज स्ट्रेट के बंद होने से तेल की आपूर्ति बाधित होगी और आशंका है कि कच्चे तेल की कीमत सत्तर डॉलर से बढ़कर 90-100 डॉलर प्रति बैरल तक हो सकती है। अभी लगभग चार करोड़ बैरल रूसी तेल समुद्र में जहाजों पर घूम रहा है। ऐसे में जरूरी है कि तेल बाजार को स्थिर करने के लिए अमेरिका और यूरोप कम से कम कुछ समय के लिए रूस पर से प्रतिबंध हटा ले।

तेल के अलावा भी खाड़ी देशों के साथ हमारा बहुत-सा व्यापार होता है। ईरान के साथ उतना व्यापार नहीं होता, लेकिन यूएई, सऊदी अरब, कुवैत, कतर इन सारे देशों के साथ व्यापार बहुत होता है। अब उस पर भी असर पड़ेगा, क्योंकि व्यापार मार्ग भी बंद है। यही नहीं, अगर हूती लड़ाकों ने दोबारा से लाल सागर या स्वेज नहर वाले रूट पर मिसाइल दागना शुरू कर दिया, तो फिर मुश्किलें और बढ़ जाएंगी। वैश्विक बाजार अमेरिकी टैरिफ को लेकर पहले ही उथल-पुथल की स्थिति में है, ऐसे में इस युद्ध से आर्थिक चुनौती और बढ़ेगी ही।

तीसरी चीज यह है कि हवाई मार्ग भी बंद हो गए हैं। चूंकि ईरान की हवाई सीमा का इस्तेमाल नहीं कर सकते, और पाकिस्तानी हवाई मार्ग पहले से ही बंद है। ऐसे में अन्य मार्ग अपनाने से हवाई मार्ग लंबा होने पर एयरलाइन इंडस्ट्री को बहुत बड़ी चपत लगेगी।

अब तक तो सिर्फ ईरान में रहने वाले छात्रों और भारतीय नागरिकों की चिंता थी, लेकिन पूरा खाड़ी क्षेत्र जिस तरह से युद्ध से प्रभावित हो रहा है, ऐसे में पूरे खाड़ी क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों को निकालना असंभव होगा। बेशक उनकी सुरक्षा की चिंता सरकार को होगी, लेकिन इतने लोगों को निकालकर भारत लाना संभव नहीं है। जब सरकार ने एडवाइजरी जारी कर दी कि आप निकल जाएं, तो फिर लोगों को निकल जाना चाहिए, क्योंकि युद्ध शुरू हो जाने के बाद निकालना मुश्किल होता है। जहां तक कूटनीति की बात है, तो मुझे लगता है कि अब भारत के लिए पेचीदगी कुछ कम होगी, क्योंकि ईरान ने बाकी अरब देशों पर हमला करके उन्हें अमेरिका के पाले में धकेल दिया है। अरब देशों से ईरान के खिलाफ बहुत तीव्र बयान आ रहे हैं।

अगर ईरान में इस्लामी शासन खत्म हो जाता है और एक उदारवादी, प्रगतिशील सरकार सत्ता में आती है, तो भारत के लिए यह बेहतर ही होगा। फिर ईरान के ऊपर जो बहुत से प्रतिबंध लगे थे, वे हट जाएंगे और चाबहार बंदरगाह का काम आगे बढ़ सकता है। इससे हमारी कनेक्टिविटी की परियोजनाएं भी ईरान के माध्यम से आगे बढ़ सकती हैं और हम ईरान का तेल भी ले सकते हैं। मगर ऐसा तब होगा, जब ईरान में दुनिया के साथ चलने वाली नई सरकार सत्ता में आएगी। ऐसे में अमेरिका भी चाहेगा कि भारत जैसा देश, जो वहां निवेश करने को तैयार है, वह ईरान में ज्यादा सक्रिय हो।

सामरिक तौर पर भारत के लिए दो बहुत बड़े दुश्मन उभर कर आ रहे हैं। पाकिस्तान तो नासूर बना ही हुआ है, तुर्किये भी एक बड़ी चुनौती बन रहा है। तुर्किये और पाकिस्तान के बीच जो गठजोड़ है, उस पर भी ऐसी स्थिति में लगाम लग सकती है, जो भारत के लिए अच्छा ही होगा। इसलिए ईरान में नई सरकार आने से भारत को कूटनीतिक तौर पर ज्यादा फायदे होंगे।

मगर यदि युद्ध लंबा चला और वहां के हालात बहुत खराब रहे, तो फिर समस्याएं बढ़ सकती हैं। लेकिन अभी जिस तरह के आक्रमण हो रहे हैं और बाकी अरब देश भी ईरान से नाराज हैं, इसकी बहुत संभावना है कि जो कुछ अरब देश अब तक अब्राहम अकॉर्ड्स में शामिल होने को तैयार नहीं थे, वे शायद इन बदली परिस्थितियों में इस्राइल के साथ आ जाएं। इससे भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप गलियारे की समस्या खत्म हो जाएगी। इससे न केवल भारत के व्यापार को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि हमारे लिए ऊर्जा (स्वच्छ हाइड्रोजन) और डिजिटल कनेक्टिविटी भी सुदृढ़ होगी। उम्मीद है कि भारत के लिए आगे अच्छी खबरें ही आएंगी।

- लेखक ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन में सीनियर फेलो हैं।

दूसरा पहलू

हिमाचल प्रदेश का टोरु गांव अपने सामूहिक व ऐतिहासिक सामाजिक सुधारों की वजह से आज देश भर में एक अलग पहचान बना चुका है।

सामाजिक सुधार की मिसाल बनता एक गांव

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले का टोरू गांव आज देश भर में एक अलग पहचान बना चुका है। 100 प्रतिशत साक्षरता, गांव के एक निवासी का सांविधानिक पद तक पहुंचना, और सामाजिक संरचना जैसी उपलब्धियां इसे खास बनाती हैं। लेकिन टोरू की असली पहचान किसी एक व्यक्ति की सफलता नहीं, बल्कि सामूहिक और ऐतिहासिक सामाजिक सुधार का साहसिक निर्णय है।

11 जनवरी, 2026 को टोरू गांव ने वह कदम उठाया, जिसे अक्सर सरकारें टालती हैं। सबसे प्रभावशाली निर्णयों में से एक था-भव्य दावतों और पाल्टोज पार्टियों पर लगाम लगाना। ये आयोजन एक तरह की प्रतिस्पर्धी प्रदर्शनी बन गए थे, जो परिवारों को अपनी हैसियत से कहीं अधिक खर्च करने पर मजबूर करते थे। एक बड़ा सुधार 'दशउठान' समारोह के पुनर्गठन में भी दिखता है। इस रस्म को केवल पहले बच्चे के जन्म तक सीमित करना और चाहे वह लड़का हो या लड़की, दोनों को समान सम्मान देना, सदियों पुरानी पितृसत्तात्मक सोच पर एक कड़ा प्रहार है। शादियों में शराब पर पूर्ण प्रतिबंध और गांव के भीतर इसकी बिक्री पर रोक लगाई गई है।

टोरू ने एक समिति बनाने का संकल्प भी लिया है, जो परामर्श देने, सचेत करने व आवश्यकता पड़ने पर दंड लगाने के लिए अधिकृत है।

खास बात यह है कि इन सुधारों के लिए किसी वित्तीय बजट, विधायी समर्थन या प्रशासनिक मशीनरी की आवश्यकता नहीं है। ये पूरी तरह से आपसी सहमति, नैतिक साहस और सामूहिक जवाबदेही पर टिके हैं।

टोरू ने एक प्रतिनिधि कार्यान्वयन समिति बनाने का संकल्प भी लिया है, जिसमें बुजुर्ग, युवा और महिलाएं शामिल हैं। यह समिति परामर्श देने, सचेत करने और आवश्यकता पड़ने पर उचित सामाजिक दंड लगाने के लिए अधिकृत है। हालांकि, इसकी भूमिका दंडात्मक होने के बजाय सुधारात्मक अधिक है। यह नैतिक इरादों को एक लागू होने वाले सामाजिक अनुशासन में बदल देता है, जिससे सुधारों को दीर्घायु मिलती है। टोरू के इस प्रयोग को जो बात सबसे ज्यादा प्रभावशाली बनाती है, वह है इसका 'स्केलेबिलिटी', यानी बड़े स्तर पर लागू होने की क्षमता। इन सुधारों के लिए किसी वित्तीय बजट, विधायी समर्थन या प्रशासनिक मशीनरी की आवश्यकता नहीं है। ये पूरी तरह से आपसी सहमति, नैतिक साहस और सामूहिक जवाबदेही पर टिके हैं। यदि सरकारी संस्थानों से इन्हें मान्यता और प्रोत्साहन मिले, तो ऐसे मॉडलों को पूरे हिमाचल और उससे आगे भी लागू किया जा सकता है और यह वहां भी सफल हो सकते हैं, जहां ऊपर से थोपे गए सामाजिक सुधार अक्सर विफल हो जाते हैं। टोरू का अनुभव हमें याद दिलाता है कि स्थायी सामाजिक सुधार न तो केवल कानूनों से पैदा होते हैं और न ही नीतिगत निर्देशों से। इसकी शुरुआत तब होती है, जब समुदाय अपनी स्वयं की प्रथाओं पर सवाल उठाने का साहस जुटाते हैं। यदि टोरू का यह संकल्प अडिग रहता है, तो इसे एक ऐसी मिसाल के रूप में देखा जाएगा, जिसने दिखाया कि समाज या गांव जब चाहे, तब राज्य (सत्ता) को भी परिवर्तन की दिशा दिखा सकता है।

- केएस तोमर

आंकड़े

ऑनलाइन ग्रॉसरी

डिजिटल युग में अब हर चीज बस एक क्लिक दूर है। घर बैठे ग्रॉसरी मंगवाना अब आम बात हो गई है, और इस मामले में भारतीय उपभोक्ता सबसे आगे हैं।

भारत	58
दक्षिण कोरिया	51
ब्राजील	42
अमेरिका	38
चीन	26

आंकड़े ऑनलाइन ग्रॉसरी खरीदने वाले देशों के, प्रतिशत में।

स्रोत : स्टैटिस्टा कंज्यूमर इनसाइट्स

नियमों के पक्के राजा हंसध्वज ने पुत्र को दंड स्वरूप उबलते तेल के पात्र में डालने का आदेश दिया। पर पुत्र का शरीर जलने के बजाय कुंदन की भांति चमकने लगा।

ईश्वर पर पूर्ण विश्वास

अंतर्यात्रा
संकलित

पौराणिक आख्यानों में भक्त सुधन्वा की कथा अटूट श्रद्धा और ईश्वर पर पूर्ण विश्वास का अनुपम उदाहरण है। जब चंपकपुरी के राजा हंसध्वज ने अर्जुन के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को रोक लिया था।

राजा ने आदेश दिया कि सेना का प्रत्येक सैनिक और उनके पुत्र युद्ध क्षेत्र में उपस्थित हों। जो भी निश्चित समय तक नहीं पहुंचेगा, उसे खौलते हुए तेल के कड़ाह में डाल दिया जाएगा। राजा का पुत्र सुधन्वा भी भगवान का परम भक्त था। युद्ध के लिए प्रस्थान करने से पूर्व वह अपनी माता से आज्ञा लेने गया, जिसमें उसे किंचित विलंब हो गया। नियमों के पक्के राजा हंसध्वज ने अपने ही पुत्र को दंड स्वरूप उबलते तेल के पात्र में डालने का आदेश दिया। जब सुधन्वा को तेल के पास लाया गया, तो उनके मुख पर भय के स्थान पर मुस्कान थी। उसने ऊंचे स्वर में श्रीकृष्ण के नाम का संकीर्तन प्रारंभ किया।

जैसे ही सुधन्वा को खौलते तेल में डाला गया, भगवान की कृपा से वह खौलता हुआ तेल शीतल जल के समान ठंडा हो गया। सुधन्वा का शरीर जलने के बजाय कुंदन की भांति चमकने लगा। यह देख राजा और प्रजा चकित रह गए। सुधन्वा ने सिद्ध किया कि यदि भक्ति निश्छल हो, तो प्रकृति के नियम भी भक्त के लिए बदल जाते हैं। स्वयं भगवान ने अपने भक्त के प्राणों और मान की रक्षा की।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 2 मार्च, 1955

मिस्र व इस्राइल की सेनाओं में अचानक मुठभेड़

मिश्र व इसरायली सेनाओं में गाजा के निकट अचानक मुठभेड़
मिस्री सेना का १ अफसर व २५ सैनिक मारे गये

आज मिस्र व इस्राइल की सीमा के क्षेत्र गाजा के निकट इस्राइली व मिस्र की सेनाओं की एक टुकड़ी में मुठभेड़ हो गई, जिससे मिस्र की सेना का एक अफसर व कई सैनिक मारे गए और 30 घायल हो गए। इस्राइली सैनिक मिस्र के इलाके में घुस गए हैं।

डॉक्टर मिलते नहीं, मिलते हैं तो टिकते नहीं

प्रदेश में डॉक्टर अक्सर खराब कार्य स्थितियों, कम वेतन और अवसरों की कमी के कारण सरकारी नौकरी करने से कतराते हैं।

विजय त्रिपाठी

मुद्दा

उत्तर प्रदेश में सरकारी डॉक्टरों की बहुत कमी है। जितने हैं, करीब-करीब उतने ही और चाहिए। सरकार डॉक्टरों की भर्ती की कोशिशें भी कर रही हैं, फिर भी कमी पूरी नहीं हो रही है। मिल भी जाते हैं, तो टिकते नहीं हैं। डॉक्टरों के पास इसकी कई वजहें हैं। प्रदेश में डॉक्टर खराब कार्य स्थितियों, निजी क्षेत्र की तुलना में कम वेतन और कॅरिअर के अवसरों की कमी के कारण सरकारी नौकरी करने से कतराते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों की भारी कमी, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और नौकरशाही के दबाव के कारण निजी प्रैक्टिस ज्यादा आकर्षक लगती है। कॉरपोरेट अस्पतालों के मोटे पैकेज हैं, तो सरकारी नौकरी में कामकाज का स्वस्थ माहौल न होना भी एक बड़ा कारण है।

प्रांतीय चिकित्सा सेवा संवर्ग के स्वीकृत 19,700 पदों में से करीब सात हजार पद खाली हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) में से ज्यादातर को फर्स्ट रेफरल यूनिट (एफआरयू) का दर्जा दे दिया गया है।

यहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की तैनाती की जाती है। लोक सेवा आयोग से चयनित स्त्री रोग विशेषज्ञ, एनेस्थेटिस्ट, बाल रोग विशेषज्ञ, सर्जन नहीं हैं, इसलिए पांच लाख रुपये प्रतिमाह तक के पैकेज पर विशेषज्ञ चिकित्सकों की तैनाती की गई। फिर भी डॉक्टर यहां रुकते नहीं हैं। पिछले दो वर्षों का आंकड़ा देखें, तो 50 फीसदी डॉक्टर साल बीतते-बीतते नौकरी छोड़ देते हैं।

कन्नौज की एक सीएचसी में साल भर काम करने के बाद नौकरी छोड़ने वाले एक बाल रोग विशेषज्ञ बताते हैं कि नौकरी इसलिए ज्वाइन की थी कि ग्रामीण इलाके के गरीब बच्चों की जान बचा सकेंगे। कुछ समय तक तो सब ठीक चला, पर धीरे-धीरे मन बदलने लगा। ग्रामीण परिवारों के लिए जरूरी सुविधाएं दुश्वार हैं। गाहे-बगाहे काम में नेताओं का भी हस्तक्षेप रहता है। अस्पताल अधीक्षक ने दूसरे कार्यक्रमों और जिला स्तर की बैठकों में ड्यूटी लगानी शुरू कर दी। छुट्टियां भी बमुश्किल मिलने लगीं। आजिज आकर नौकरी छोड़ दी। सीतापुर के जिला अस्पताल में बतौर सर्जन रहे एक चिकित्सक ने भी बताया कि उन्होंने साल भर रात-दिन मेहनत की, तो अस्पताल में मरीजों की संख्या बढ़ गई। संसाधनों की जरूरत पड़ने लगी। किसी तरह ऑपरेशन थिएटर बना। उपकरणों के लिए मुंह ताकना पड़ता है। फिर राजनीति शुरू हो गई और दूसरे जिले में तबादला कर दिया गया। अंततः उन्होंने निजी अस्पताल की नौकरी पकड़ ली।

चिकित्सा शिक्षा विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ. बद्री विशाल कहते हैं कि ग्रामीण इलाके के अस्पतालों में विशेषज्ञ चिकित्सकों को रोकना है, तो संसाधनों का विकास करना होगा। उन्हें कुछ अतिरिक्त सुविधाएं देनी होंगी। निजी प्रैक्टिस जैसी बाध्यता खत्म करके नया मॉडल विकसित करना होगा, ताकि जिनके पास शहरी विकल्प न हों, वे ग्रामीण इलाकों में जाने की सोचें। प्रदेश में मेडिकल कॉलेज तो धड़ाधड़ खुलते जा रहे हैं, पर मेडिकल कॉलेजों में औसतन 30 फीसदी तक पद खाली हैं। एक पूर्व संकाय सदस्य की मानें, तो आपसी प्रतिस्पर्धा में राजनीति और एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश भी एक वजह है। इस विशेषज्ञ ने जिस संस्थान से पढ़ाई की, वहीं असिस्टेंट प्रोफेसर बने। कुछ वक्त बाद चिकित्सा में नवाचार शुरू किए, तो वरिष्ठों को यह अखर गया। नतीजतन, इस्तीफा देकर उन्हें निजी प्रैक्टिस करनी पड़ी। दो साल में खुद का अस्पताल बना कर करीब 35 लोगों को रोजगार दे रहे हैं। ऐसे तमाम वाकये भरे पड़े हैं।

चिकित्सा शिक्षा महानिदेशक रह चुके प्रोफेसर एनसी प्रजापति बताते हैं कि सरकारी कॉलेजों में कई बार चिकित्सा विशेषज्ञ के साथ संबंधित जिलों के प्रशासनिक अधिकारियों का व्यवहार ठीक नहीं होता है। मेडिकल कॉलेजों में असिस्टेंट प्रोफेसर से लेकर प्रोफेसर तक के नौकरी छोड़ने के पीछे यह भी बड़ी वजह है। उनका मानना है कि शहरी व ग्रामीण कॉलेजों की फैकल्टी व रेजिडेंट डॉक्टरों के बीच वेतन से लेकर सुविधाओं के मानकों में बदलाव की जरूरत है। प्रदेश के सबसे बड़े चिकित्सा विश्वविद्यालय केजीएमयू में पढ़ने व शिक्षक बनने के लिए डॉक्टर लालायित रहते हैं, पर पिछले कुछ समय से यहां के प्रोफेसर नौकरी छोड़कर कॉरपोरेट अस्पतालों का रुख कर रहे हैं। इस्तीफा देते वक्त ज्यादातर प्रोफेसर व्यक्तिगत कारण बताते हैं, पर असल वजह संस्थान के प्रशासन से तालमेल न बैठ पाना होती है।

इस तरह राजधानी लखनऊ में चल रहे कॉरपोरेट अस्पतालों के सुपर स्पेशलिस्टों की टीम पर गौर करें, तो 90 फीसदी से ज्यादा केजीएमयू, डा. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, संजय गांधी पीजीआई की फैकल्टी है। सवाल यह उठता है कि सरकारी संस्थानों के प्रोफेसरों को ऐसी कौन-सी बात खटकी कि उन्होंने अचानक रास्ता बदल दिया। इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार कर कोई सम्मानजनक रास्ता न निकाला गया, तो डॉक्टरों के सरकारी सेवाओं में आने-जाने का सिलसिला रुकने वाला नहीं।

संवाद में संयम जरूरी है

खुलकर बात करना अच्छा है, लेकिन कार्यस्थल पर पेशेवर माहौल में कुछ मर्यादाओं का ध्यान तो रखना ही पड़ता है

लेस्ली के. जॉन
हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू

कार्यस्थल पर लोगों के सामने यह दुविधा रहती है कि वे अपनी निजी जानकारी किस हद तक साझा करें। निजी जानकारी से टीम में विश्वास और जुड़ाव बढ़ता है, लेकिन जरूरत से ज्यादा खुलापन पेशेवर छवि को प्रभावित कर सकता है। इसलिए खुला संवाद जरूरी है, पर संतुलन बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। निजी बातें सोच-समझकर और सीमित रूप में साझा करनी चाहिए, ताकि विश्वास भी बना रहे और पेशेवर विश्वसनीयता भी सुरक्षित रहे।

■ पेशेवर सीमाओं का ध्यान रखें

कार्यस्थल पर बातचीत करते समय यह आवश्यक है कि आप अपनी पेशेवर सीमाओं का ध्यान रखें। अत्यधिक व्यक्तिगत, वित्तीय या पारिवारिक समस्याओं को साझा करने से बचना चाहिए, विशेषकर तब जब वे सीधे आपके कार्य से संबंधित न हों। ऐसे विषय न केवल सहकर्मियों को असहज कर सकते हैं, बल्कि आपकी पेशेवर छवि को भी प्रभावित कर सकते हैं। संतुलित और मर्यादित संवाद बनाए रखना बेहतर कार्य-संबंधों के निर्माण में सहायक होता है। व्यक्तिगत जीवन और पेशेवर वातावरण के बीच उचित दूरी बनाए रखने से आप अधिक परिपक्व, विश्वसनीय और जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में देखे जाते हैं।

■ शिकायत और गपशप से बचें

कार्यालय की गुटबाजी, गपशप या अनावश्यक शिकायतों से दूर रहना बेहतर होता है, क्योंकि इससे आपकी पेशेवर विश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है। बार-बार नकारात्मक चर्चा में शामिल होने से सहकर्मियों के बीच गलत संदेश जाता है। यदि कोई वास्तविक समस्या हो, तो उसे शांत और सम्मानजनक तरीके से उचित मंच पर रखें। समाधान-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने से आप अधिक परिपक्व और जिम्मेदार कर्मचारी के रूप में पहचाने जाते हैं।

■ नई नौकरी हो तो

नई भूमिका में या ऐसे सहकर्मियों के साथ जिन पर अभी पूर्ण विश्वास स्थापित नहीं हुआ है, सतर्क रहना समझदारी है। शुरुआत में जल्दबाजी में अत्यधिक जानकारी साझा करने के बजाय पहले परिस्थितियों को समझें, लोगों की

कार्यशैली को परखें और आवश्यक जानकारी एकत्र करें। सोच-समझकर संवाद करने से आप अनावश्यक जोखिम से बचते हैं।

■ कार्य संबंधित जानकारी ही साझा करें

कार्यस्थल पर पारदर्शिता महत्वपूर्ण है, लेकिन हर बात हर व्यक्ति के साथ साझा करना आवश्यक नहीं होता। अत्यधिक जानकारी देने से न केवल आपका समय और ऊर्जा व्यर्थ हो सकते हैं, बल्कि इससे भ्रम, गलतफहमी या अनावश्यक हस्तक्षेप की स्थिति भी पैदा हो सकती है। संतुलित और उद्देश्यपूर्ण संवाद बनाए रखें। केवल वही जानकारी साझा करें, जो कार्य से संबंधित, उपयोगी और आवश्यक हो। इससे आप अपने काम पर बेहतर ध्यान केंद्रित कर पाएंगे और आपकी पेशेवर दक्षता भी बनी रहेगी।

खुद को परखें

1. हाल ही में खबरों में आई 'इम्पेटीन्स नागोरम' क्या है?
   (a) एक नई पुष्पीय पौधे की प्रजाति
   (b) आक्रामक खरपतवार
   (c) पारंपरिक औषधि
   (d) मछली की नई खोजी गई प्रजाति
2. रैंप कार्यक्रम किस मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जाता है?
   (a) कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय
   (b) वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय
   (c) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय
   (d) वित्त मंत्रालय
3. हाल ही में खबरों में आई माई न्डोम्बे और तुम्बा झीलें किस देश में स्थित हैं?
   (a) कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य
   (b) केन्या
   (c) इंडोनेशिया
   (d) रूस

उत्तर- 1.a, 2.c, 3.a

सामान्य ज्ञान

एलसीएच प्रचंड

- **क्या है**
  हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) ने एलसीएच के तहत प्रचंड बनाया, जो भारत का पहला स्वदेशी लड़ाकू हेलिकॉप्टर है।
- **चर्चा में क्यों**
  द्रौपदी मुर्मू ने जैसलमेर में एलसीएच 'प्रचंड' से 25 मिनट की उड़ान भरी। यह उनकी तीसरी बड़ी सैन्य उड़ान थी।
- **इसका इस्तेमाल**
  यह हल्का हमलावर हेलिकॉप्टर है, जो हवा से हवा और हवा से जमीन पर हमला कर सकता है। आतंकवाद विरोधी अभियानों में इसका इस्तेमाल होता है।
- **ऊंचे इलाकों और युद्ध के लिए खास**
  इसे हिमालय के ऊंचे और कठिन इलाकों, जैसे सियाचिन ग्लेशियर और लेह में बेहतर काम करने के लिए बनाया गया है, जहां भारी हेलिकॉप्टरों को दिक्कत होती है।
- **आधुनिक तकनीक से भरपूर**
  प्रचंड 5,000 मीटर से ऊपर उड़ सकता है। इसकी गति 268 किमी/घंटा और मारक क्षमता 550 किमी तक है। इसमें तोप, रॉकेट व मिसाइलों के साथ आधुनिक सुरक्षा तकनीक लगी है।

एसएंडपी ग्लोबल समर इंटर्नशिप-2026

इंटर्नशिप अलर्ट

एसएंडपी ग्लोबल द्वारा समर इंटर्नशिप-2026 के लिए छात्रों से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत एसडीईटी (सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट इंजीनियर इन टेस्ट)/ क्वालिटी एश्योरेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डाटा साइंस, एजेंटिक एआई के साथ आईटी सर्विस मैनेजमेंट तथा बिजनेस टेक्निकल सपोर्ट जैसे क्षेत्रों में इंटर्न की भर्ती की जा रही है। इंटर्नशिप में भाग लेने के लिए चयनित छात्रों को गुरुग्राम, हैदराबाद या नोएडा स्थित कंपनी के कार्यालयों में उपस्थित होना होगा। उम्मीदवारों का चयन उनके कौशल और साक्षात्कार के आधार पर किया जाएगा। चयनित छात्रों को स्टाइपेंड व अन्य लाभ भी दिए जाएंगे। इच्छुक उम्मीदवार अपनी अर्हता की जांच करते हुए आधिकारिक लिंक tinyurl.com/3rpsece8 पर जाकर इस इंटर्नशिप प्रोग्राम में ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

स्मॉल वंडर्स इंटरनेशनल फोटोग्राफी एग्जीबिशन

आवेदन आमंत्रित

एलोरा गैलरी स्मॉल वंडर्स एग्जीबिशन दुनिया भर के फोटोग्राफरों को अपनी रचनाएं प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करती है। यह एग्जीबिशन सभी स्तरों और पृष्ठभूमि के फोटोग्राफरों से प्रविष्टियां स्वीकार करती है।

■ अधिकतम पांच चित्र जमा करें

प्रतिभागी अधिकतम पांच चित्र (जेपीईजी, 2000पीएक्स चौड़ाई, प्रत्येक चार एमबी या कम) जमा कर सकते हैं। साथ में अपना नाम, देश, वेबसाइट/इंस्टाग्राम, संक्षिप्त परिचय (100 शब्द तक) और कलाकार विवरण (100 शब्द तक) भेजें।

■ अंतरराष्ट्रीय समुदाय का हिस्सा बनें

इस प्रदर्शनी के लिए चयनित कृतियां एलोरा गैलरी की आधिकारिक वेबसाइट पर प्रदर्शित की जाएंगी। चयनित फोटोग्राफरों को डिजिटल प्रमाण-पत्र मिलेगा और वे अंतरराष्ट्रीय समुदाय का हिस्सा बनेंगे। सभी कृतियां ऑनलाइन संग्रह में दीर्घकालिक दृश्यता के साथ उपलब्ध रहेंगी।

■ आवेदन प्रक्रिया

प्रतिभागी आधिकारिक लिंक alloragallery.com/open-call-small-wonders पर जाकर 03 मई, 2026 तक आवेदन कर सकते हैं।

एग्जाम अलर्ट / हफ्ते की परीक्षाएं

जीपीएटी परीक्षा-2026

- **परीक्षा की तिथि :** 07 मार्च, 2026
- इस परीक्षा में फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री, फार्माकोग्नोसी, फार्माकोलॉजी तथा उनसे संबंधित विषयों से कुल 500 अंकों के लिए वस्तुनिष्ठ प्रकार के 125 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक गलत उत्तर पर एक अंक की कटौती की जाएगी।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें** natboard.edu.in

मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टेस्ट-2026

- **परीक्षा की तिथि :** 08 मार्च, 2026
- इस परीक्षा में लैंग्वेज कॉम्प्रिहेंशन, इंटेलिजेंस एवं क्रिटिकल रीजनिंग, मैथमेटिकल स्किल्स, डाटा एनालिसिस एवं एफिशिएंसी तथा इकनॉमिक और बिजनेस एन्वॉयरन्मेंट से कुल 150 प्रश्न पूछे जाएंगे। इन प्रश्नों को हल करने के लिए अभ्यर्थियों को दो घंटे का समय दिया जाएगा।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें** mat.aima.in

यहां भी रोजगार की संभावनाएं ...

- **अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली :** जूनियर रिसर्च फेलो का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 15 मार्च, 2026
- **aiims.edu**
- **भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली :** प्रिंसिपल प्रोजेक्ट साइंटिस्ट का पद रिक्त।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 10 मार्च, 2026
- **ird.iitd.ac.in/rec**

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

Job Alert अमर उजाला
Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल, भोपाल
वन रक्षक, जेल प्रहरी व अन्य पदों पर नौकरी के अवसर

1679 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 14 मार्च, 2026
योग्यताएं : दसवीं, बारहवीं व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : esb.mp.gov.in

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में रिक्तियां ■ 275 पद
सॉफ्टवेयर डेवलपर, मोबाइल डेवलपर आदि के पद रिक्त
आवेदन की अंतिम तिथि 23 मार्च, 2026
योग्यताएं बीई, बीटेक व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें centralbank.bank.in

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड ■ 144 पद
अप्रेंटिसशिप के लिए योग्य अभ्यर्थी करें आवेदन
आवेदन की अंतिम तिथि 09 मार्च, 2026
आयु-सीमा न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 24 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें iocl.com

बैंक ऑफ बड़ौदा में निकली भर्ती ■ 419 पद
असिस्टेंट मैनेजर, मैनेजर व अन्य पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि : 08 मार्च, 2026
योग्यताएं : ग्रेजुएशन, एमबीए, सीए व अन्य पद खाली
यहां आवेदन करें : bankofbaroda.in

भारत संचार निगम लिमिटेड ■ 120 पद
वरिष्ठ कार्यकारी प्रशिक्षु के पदों पर मौके
आवेदन की अंतिम तिथि 07 मार्च, 2026
आयु-सीमा न्यूनतम 21 वर्ष व अधिकतम 30 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें bsnl.co.in

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में मौके ■ 116 पद
सहायक उपाध्यक्ष व अन्य पदों पर आवेदन आमंत्रित
आवेदन की अंतिम तिथि 15 मार्च, 2026
पात्रताएं बीई, बीटेक, बीएससी व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें sbi.co.in

रोशनी यहां है

इस बार : विजय सुब्रमण्यम
क्यों : साधारण शुरुआत से बनाया करोड़ों रुपये का फर्नीचर ब्रांड

विजय सुब्रमण्यम ने एक छोटे-से गांव से निकलकर महज 28,000 रुपये की पूंजी से अपने सपनों की शुरुआत की। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और निरंतर मेहनत के बल पर अपने छोटे-से व्यवसाय को आगे बढ़ाया। आज वह करोड़ों रुपये के टर्नओवर वाली कंपनी के मालिक हैं।

पूंजी हो या ना हो, सपने बड़े होने चाहिए

तमिलनाडु के एक छोटे-से गांव से निकलकर विजय सुब्रमण्यम ने सफलता की ऐसी मिसाल पेश की है, जो किसी प्रेरणादायक कहानी से कम नहीं है। साधारण परिवार में जन्मे विजय ने बचपन में आर्थिक कठिनाइयों और अभावों का सामना किया, लेकिन उन्होंने कभी अपने सपनों को छोटा नहीं होने दिया। मामूली पूंजी से उन्होंने अपने व्यवसाय की शुरुआत की। कड़ी मेहनत के बल पर उनका यह छोटा प्रयास आगे चलकर रॉयलोक फर्नीचर जैसे बड़े फर्नीचर ब्रांड में बदल गया। विजय सुब्रमण्यम ने केवल फर्नीचर नहीं बेचा, बल्कि ग्राहकों के लिए बेहतर अनुभव गढ़े। एक छोटे से शोरूम से शुरू हुआ उनका सफर आज पूरे भारत में एक स्थापित नाम बन चुका है। उन्होंने डिजाइन को केवल सजावट नहीं, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा माना और गुणवत्ता को अपनी पहचान बनाया। आज यह कंपनी लगभग 1000 करोड़ रुपये के टर्नओवर तक पहुंच चुकी है। उनकी कहानी यह सिखाती है कि संसाधन भले ही सीमित हों, लेकिन यदि इरादे मजबूत हों, तो सफलता की ऊंचाइयों को छूना संभव है।

बचपन आर्थिक संघर्षों में बीता

विजय सुब्रमण्यम की प्रेरक यात्रा तमिलनाडु के तंजावुर के पास स्थित रंगनाथपुरम गांव से शुरू होती है। उनका बचपन आर्थिक संघर्षों के बीच बीता। पिता स्थायी रोजगार में नहीं थे और अक्सर छोटे-मोटे काम बदलते रहते थे, जबकि मां घर का खर्च चलाने के लिए एक छोटी किराने की दुकान संभालती थीं। बाद में, परिवार केरल के मुन्नार चला गया, जहां उन्हें सीधे दूसरी कक्षा में प्रवेश मिला। भाषा भी उनके लिए एक बड़ी चुनौती बनी, क्योंकि वे तमिल बोलते थे, जबकि आसपास के लोग मलयालम बोलते थे। सरकारी छात्रावास में रहने के दौरान भी उन्हें बुनियादी सुविधाओं की कमी झेलनी पड़ी। इन कठिन परिस्थितियों ने उन्हें कमजोर नहीं, बल्कि और मजबूत बनाया। संघर्षों के बावजूद उन्होंने अपनी 12वीं कक्षा उत्तीर्ण की। यही वह दौर था, जब उनके मन में कुछ बड़ा करने और जीवन में बदलाव लाने का दृढ़ संकल्प जन्मा।

पढ़ाई का खर्च खुद उठाया

कॉलेज के समय ही विजय ने तय कर लिया था कि वे अपनी पढ़ाई का खर्च खुद उठाएंगे। उन्होंने अपनी मां से 5,000 रुपये लिए और साइकिल पर चाय पत्ती बेचने का छोटा-सा काम शुरू किया। वे सप्ताह में दो-तीन दिन कॉलेज जाते और बाकी समय काम करके अपनी जरूरतें पूरी करते। 1995 में स्नातक करने के बाद वे नौकरी की तलाश में कोयंबटूर पहुंचे। वहां उन्हें स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक में क्रेडिट कार्ड बेचने की नौकरी मिली, जहां उनका मासिक वेतन 1,500 रुपये था। सीमित वेतन के बावजूद उन्होंने अपने काम में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और बिक्री में अच्छा नाम कमाया। इसी दौरान एक प्रदर्शनी में उन्हें 28,000 रुपये में स्टॉल लेने का अवसर मिला। पैसे की कमी के बावजूद उन्होंने जोखिम उठाया और अपना स्कूटर 7,000 रुपये में गिरवी रखा और 5,000 रुपये दोस्तों से उधार लिए। यह साहसिक फैसला ही उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बना और आगे की सफलता की नींव साबित हुआ।

प्रदर्शनी में बेचा सामान

प्रदर्शनी में कपड़े और रसोई का सामान बेचकर विजय ने अच्छा मुनाफा कमाया और बैंक की नौकरी छोड़ अपने भाई के साथ प्रदर्शनियों का व्यवसाय शुरू किया। बाद में उन्होंने टीवी स्टैंड के कारोबार में अवसर देखा। 1999 में बंगलूरू में 200 वर्ग फीट की दुकान लेकर 'फैशन डेकोर' के नाम से बिक्री शुरू की। बढ़ती मांग और अनुभव के साथ उन्होंने 2007 में चीन से फर्नीचर आयात करना शुरू किया, जिससे उनके कारोबार को नई गति मिली। अंततः 2010 में बंगलूरू के बनसवाड़ी क्षेत्र में उन्होंने अपना पहला फ्लैगशिप स्टोर 'रॉयलओक' लॉन्च किया। यही कदम आगे चलकर उनके बड़े फर्नीचर ब्रांड की मजबूत नींव बना।

ऑनलाइन बिक्री पर ध्यान

साल 2020 में कोरोना महामारी के दौरान जब कई कंपनियां छंटनी कर रही थीं, तब विजय ने संकट को अवसर में बदलते हुए ऑनलाइन बिक्री पर जोर दिया। यह कदम कंपनी के लिए गेम-चेंजर साबित हुआ और आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। महामारी के बाद ब्रांड ने तेजी से विस्तार करते हुए अपने आउटलेट्स की संख्या लगभग 50 से बढ़ाकर 150 से अधिक कर ली। इनमें आधे कंपनी के स्वामित्व वाले हैं और बाकी फ्रेंचाइजी मॉडल पर चलते हैं। अधिक कर्मचारियों के साथ यह ब्रांड आज लगभग 1000 करोड़ रुपये का टर्नओवर हासिल कर चुका है और भारत के संगठित फर्नीचर बाजार में एक प्रमुख नाम बन गया है।

युवाओं को सीख

- कम पूंजी से शुरू किया गया प्रयास भी मेहनत से बड़ी सफलता बन सकता है।
- कठिन परिस्थितियां हमें मजबूत और आत्मनिर्भर बनाती हैं।
- सही समय पर लिया गया साहसिक निर्णय जीवन बदल सकता है।
- बाजार को समझना और नए अवसरों को अपनाना ही विकास की कुंजी है।

आज का दिन

2 मार्च, 1933

ऐतिहासिक मॉन्स्टर मूवी 'किंग कॉन्ग' का विश्व प्रीमियर हुआ था। यह पहली ऐसी फिल्म थी, जिसमें विलिस ओब्रायन द्वारा किए गए विशेष प्रभावों और एनिमेटेड चरित्र को दिखाया गया था।

- 1956 : मोरक्को को फ्रांस से स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी।
- 1968 : जेम्स बॉन्ड की भूमिका निभाने वाले अभिनेता डेनियल क्रेग का जन्म हुआ था।
- 1995 : इलिनोइस के बटाविया स्थित फर्मीलैब के शोधकर्ताओं ने टॉप क्वार्क की खोज की थी।
- 1999 : ब्रिटिश गायिका डस्टी स्प्रिंगफील्ड का निधन हुआ था।

डेली हेल्थ कैप्सूल

खसखस वाला दूध रखेगा आपको तंदुरुस्त

दूध में खसखस मिलाकर पीने से शरीर को कई लाभ मिलते हैं। इससे पाचन, हड्डियों और दिल की सेहत सुधरती है।

दूध पीना सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। अगर इसमें खसखस मिलाकर सेवन किया जाए तो इससे दूध का स्वाद और पोषक तत्व दोनों बढ़ जाते हैं। नियमित रूप से इस दूध का सेवन करने से शरीर की कई समस्याएं दूर होती हैं। खसखस में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है, जो पाचन क्रिया को बेहतर बनाकर कब्ज, अपच और गैस

दूर करता है। दूध और खसखस दोनों में मौजूद कैल्शियम हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करता है। इससे जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है। खसखस में मैग्नीशियम और ट्रिप्टोफैन पाया जाता है, जो नींद की गुणवत्ता में सुधार करने में मददगार साबित होता है। साथ ही तनाव को कम करने में मदद करता है। खसखस और दूध में प्रोटीन होता है, जो मांसपेशियों की मरम्मत करने में मदद करता है। इस दूध के सेवन से शरीर की कमजोरी और थकान दूर होती है। खसखस में फाइबर, पोटैशियम और ओमेगा-3 फैटी एसिड होते हैं, जो ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं। खसखस वाले दूध का नियमित सेवन से दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

खसखस वाले दूध का सेवन सीमित मात्रा में ही करें, क्योंकि अधिक सेवन से आंत में रुकावट और एलर्जी हो सकती है। गर्भवती महिलाएं और दवा लेने वाले लोग चिकित्सक से सलाह लें।

-डॉ. नवीन चंद्र जोशी
वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक

व्रत त्योहार

आज : फाल्गुन शुक्ल पक्ष चतुर्दशी। **कल :** धुलैंडी, खग्रास चंद्रग्रहण 15.20 से 18.47 तक, वसंत ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले। **राहुकाल :** दिन में 15.00 से 16.30 तक।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 12 फाल्गुन मास शक 1947, फाल्गुन मास 20 प्रविष्टे, 13 रमजान हिजरी 1447, फाल्गुन पूर्णिमा 17.07 तक उपरांत चैत्र कृष्ण पक्ष प्रतिपदा, मघा नक्षत्र 07.31 तक उपरांत पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, सुकर्मा योग 10.23 तक उपरांत धृति योग, बव करण 17.07 तक उपरांत बालव करण, चंद्रमा सिंह राशि में दिन-रात।

सूर्योदय : 06.48
सूर्यास्त : 18.18
(भारतीय मानक समयानुसार)

amarujala.com/astrology

राशिफल

पं. विनोद त्यागी

मेष : मानसिक उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। नौकरी में नई जिम्मेदारी आ सकती है। व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा।

वृष : कार्यक्षेत्र में सम्मान बना रहेगा। श्रम की अधिकता रहेगी। व्यवसाय में लाभ होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन : दिनमान अनुकूल रहेगा। लोकप्रियता में वृद्धि होगी। अचानक व्यय संभव है। नौकरी में सम्मान बढ़ेगा।

कर्क : भविष्य की चिंता रहेगी। नौकरी में मन नहीं लगेगा। व्यवसाय में अल्प लाभ होगा। स्वजनों से मनमुटाव रहेगा।

सिंह : आत्मबल बना रहेगा। कार्य विशेष में अनुकूल सफलता मिल सकती है। परिवार में आनंद रहेगा।

कन्या : दिनमान प्रतिकूल रहेगा। नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी। व्यावसायिक स्थिति से चिंतित रहेंगे।

तुला : सामाजिक मान सम्मान बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यवसाय में लाभ के अवसर मिल सकते हैं।

वृश्चिक : पूर्व में किए श्रम का लाभ मिलेगा। नौकरी में वर्चस्व बढ़ेगा। व्यवसाय में यथेष्ट धन लाभ होगा।

धनु : कार्य विशेष में सफलता मिलेगी। नौकरी में अधिकारी अनुकूल रहेंगे। व्यवसाय में विस्तार हो सकता है।

मकर : मानसिक उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। योजना में अवरोध आएंगे। व्यावसायिक निर्णय सोच-समझकर लें।

कुंभ : स्वजन सहयोग मिलेगा। नौकरी में उन्नति के संकेत मिल सकते हैं। आर्थिक स्थिति सुखद रहेगी।

मीन : कार्यक्षेत्र में व्यस्त रहेंगे। रचनात्मक क्षेत्र में रुचि रहेगी। व्यवसाय में जोखिम जमानत से बचें।

जन्मदिन

टाइगर श्रॉफ, अभिनेता

इस वर्ष आत्मविश्वास बढ़ेगा। अटके कार्यों में गति आएगी। भौतिक सुख साधनों पर व्यय होगा। सरकारी या अर्द्ध सरकारी क्षेत्र में सेवारत जातकों को पदोन्नति या अनुकूल स्थानांतरण का लाभ मिल सकता है। विदेश यात्रा की इच्छापूर्ति के योग बनेंगे। अविवाहितों के विवाह प्रस्ताव आएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा।

सुडोकू

	8			4		7		
						9		
7			1	6	2		5	
	9		3		7			6
6			4		9		8	
	3		5	7	8			1
		4						
		8		3			2	

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

1	8	5	9	4	3	7	6	2
3	6	2	7	8	5	9	1	4
7	4	9	1	6	2	8	5	3
8	9	1	3	5	7	2	4	6
4	5	3	8	2	6	1	7	9
6	2	7	4	1	9	3	8	5
2	3	6	5	7	8	4	9	1
5	7	4	2	9	1	6	3	8
9	1	8	6	3	4	5	2	7

तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय की तरफ से जारी ताजा आंकड़ों के मुताबिक, वित्त वर्ष 2025-26 की तीसरी तिमाही में देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 7.8 प्रतिशत की दर से बढ़ा. यह बड़ी बात इसलिए भी है, क्योंकि यह उपलब्धि ट्रंप प्रशासन द्वारा लागू 50 प्रतिशत टैरिफ के पहले पूरे तीन महीनों के दौरान हासिल हुई है. आंकड़ों में वित्त वर्ष 2025-26 की समूची अवधि में देश की अर्थव्यवस्था के 7.6 फीसदी बढ़ने का अनुमान है जबकि पहले इसका अनुमान 7.1 प्रतिशत लगाया गया था. सांख्यिकी मंत्रालय ने इस बार जीडीपी की गणना के तरीके में कई बदलाव किये हैं. गौरतलब है कि पिछले वर्ष आइएमएफ ने भारत के राष्ट्रीय लेखा डाटा को 'सी' श्रेणी में रखा था, जो पुराने आधार वर्ष को दर्शाता है. इसी को देखते हुए बेस ईयर में बदलाव किया गया है. यानी 2011-12 को आधार वर्ष मानने वाली पुरानी श्रृंखला की जगह अब 2022-23 को नया आधार वर्ष बनाया गया है. बेस ईयर दरअसल वह अवधि होता है, जिसके दाम और उत्पादन स्तर को मानक मानकर आगे की वृद्धि दर की तुलना की जाती है. आधार वर्ष में बदलाव से आर्थिक गतिविधियों के आकलन का दायरा व्यापक होता है और इससे अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की वास्तविक स्थिति को बेहतर तरीके से दर्शाया जा सकता है. बेस ईयर में बदलाव करने के अलावा पहली बार जीएसटी पोर्टल के वास्तविक डाटा का उपयोग कॉरपोरेट सेक्टर की ग्रोथ मापने के लिए किया गया है. इसके अतिरिक्त वाहनों के रजिस्ट्रेशन के लिए ई-वाहन डाटा का इस्तेमाल निजी खर्च को समझने के लिए किया जा रहा है. उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि जीडीपी के नये आकलन में अनौपचारिक क्षेत्र और गिग इकोनॉमी से जुड़े घरेलू नियोक्ताओं के योगदान को भी शामिल किया गया है, जिससे अर्थव्यवस्था का दायरा बढ़ गया है. इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाते हुए डबल डिफ्लेशन को लागू किया गया है. यानी अब इनपुट (कच्चा माल) और आउटपुट (तैयार माल) की कीमतों को अलग-अलग एडजस्ट किया जायेगा. इससे मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के असली वैल्यू एडिशन का पता चल सकेगा. हालांकि जीडीपी और सकल लाभ वृद्धि अनुमानों में अंतर के मामले में यह पुरानी श्रृंखला के अनुरूप ही है. लेकिन नयी श्रृंखला के तहत जारी किये गये जीडीपी आंकड़ों से व्यापक स्तर पर विकास की झलक मिलती है और विभिन्न क्षेत्रों में वास्तविक आर्थिक गतिविधियों का सटीक आकलन संभव हो पाया है.

सिर्फ यही नहीं कि 50 फीसदी ट्रंप टैरिफ के दौरान तीसरी तिमाही में भारत की आर्थिक विकास 7.8 फीसदी रही, बल्कि जीडीपी को मापने के नये पैमाने पर भी भारतीय अर्थव्यवस्था सबसे आगे बनी हुई है.

ईरान पर हमले से बढ़ी वैश्विक अनिश्चितता

शशांक
पूर्व विदेश सचिव
shashank1944@yahoo.co.in

ईरान पर इस्राइल-अमेरिका के हमले से पश्चिम एशिया की शांति और स्थिरता दांव पर लगी है. इस जंग पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाएं आश्वस्त तो करती हैं, पर देखने की बात यह है कि इनका कितना दबाव दोनों पक्षों पर पड़ता है और संयुक्त राष्ट्र इस पर क्या कदम उठाता है. भारत के लिए पश्चिम एशिया का पूरा इलाका बेहद महत्वपूर्ण है. भारत ने इस जंग पर चिंता तो जतायी ही है, ईरान पर हमले से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने इस्राइल में कहा था कि मध्य एशिया की स्थिरता और शांति से भारत के हित जुड़े हैं.

इस्राइल ने अमेरिका की मदद से शनिवार की सुबह ईरान की राजधानी तेहरान समेत कई शहरों पर ताबड़तोड़ हमले कर जिस तरह उसके सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह खामेनेई को निशाना बनाया, उसके बाद ईरान समेत पूरे पश्चिम एशिया में अस्थिरता फैल गयी है. इस्राइल ने हमले की शुरुआत ही ईरान के खुफिया मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, सुप्रीम लीडर खामेनेई और ईरान के परमाणु ऊर्जा संगठन को निशाना बनाकर की. खामेनेई के मारे जाने पर ईरान में 40 दिन के राजकीय शोक और सात दिन की छुट्टी घोषित की गयी है. ईरान ने अपने सुप्रीम लीडर की मौत का भीषण बदला लेने की बात भी कही है. खामेनेई को खत्म कर इस्राइल और अमेरिका फौरी तौर पर अपने उद्देश्य में सफल हुए हैं, क्योंकि उनका लक्ष्य ईरान में सत्ता परिवर्तन करना है. पिछले साल ईरान की जनता जब सड़कों पर उतर गयी थी, तब अमेरिका ने उसका समर्थन किया था. ट्रंप प्रशासन ने तब कहा भी था कि अगर आंदोलनरत नागरिकों को निशाना बनाने की कोशिश की गयी, तो तेहरान को उसका अंजाम भुगतना पड़ सकता है. ईरान पर हमले के दौरान नेतन्याहू की यह टिप्पणी, कि ईरानियों को भाग्य बदलने का मौका मिलेगा, इस्राइल-अमेरिका के इसी उद्देश्य के बारे में बताती है.

ईरान पर यह हमला ओमान की मदद से ईरान और अमेरिका के बीच जिनेवा में परमाणु हथियारों को लेकर चली बातचीत के बेनतीजा रहने के दो दिन बाद हुआ है. वार्ता में बैलेस्टिक मिसाइल प्रोजेक्ट विवाद का सबसे बड़ा मुद्दा बन गया था और ईरान इस पर समझौता करने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं है. उसका कहना था कि बातचीत केवल परमाणु कार्यक्रम तक सीमित रहेगी, मिसाइल या क्षेत्रीय समूहों पर नहीं. ईरान का यह भी मानना था कि पिछले साल जून में जब इस्राइल और अमेरिका ने ईरान के परमाणु संयंत्रों पर हमला किया था, तब ईरान की मिसाइलों ने उसकी रक्षा की थी. ईरानी अधिकारियों ने बार-बार यह कहा है कि मिसाइल कार्यक्रम पर कोई बात नहीं होगी. यह ईरान की रक्षात्मक क्षमता है और इसे छोड़ने का अर्थ खुद को कमजोर करना होगा. जबकि ट्रंप ने कहा है कि इस कार्रवाई का मकसद अमेरिका और उसके लोगों को खतरे से बचाना है. अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने पहले ही ईरान पर हमले की धमकी दी थी. अमेरिकी सेना ईरान को घेर चुकी थी. हमले से पहले अमेरिका ने अपने नागरिकों से तुरंत इस्राइल छोड़ने के लिए कहा था. इस्राइली हमले के जवाब में ईरान ने भी पलटवार करते हुए मिसाइलें दागी हैं. उसने इस्राइल के अलावा कुवैत, कतर, बहरीन और सऊदी अरब में मौजूद अमेरिकी ठिकानों के साथ-साथ संयुक्त अरब अमीरात के सबसे ज्यादा आबादी वाले शहर दुबई को भी निशाना बनाया है. उसने चेतावनी दी है कि इस्राइल-अमेरिकी हमलों का पूरी मजबूती से जवाब दिया जायेगा. उसने यह भी धमकी दी है कि हमला बेशक इस्राइल ने शुरू किया हो, लेकिन इसे खत्म ईरान करेगा. ईरान को हूती विद्रोहियों के अलावा हिजबुल्लाह का साथ मिल गया है. ईरान ने पहली बार सैकड़ों किलोमीटर दूर तक हमला कर अपनी सैन्य ताकत का प्रदर्शन किया है. खाड़ी देशों में सुरक्षित माने जाने वाले संयुक्त अरब अमीरात में ईरानी मिसाइलों का गिरना बड़ी बात है.

अमेरिका और ईरान के बीच तनातनी दशकों पुरानी है. वर्ष 1953 में ईरान के प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसद्दिक के तख्तापलट के साथ ईरान में अमेरिका-विरोध की बुनियाद पड़ी थी. दरअसल मोसद्दिक ने ईरान के हितों की रक्षा के लिए ब्रिटिश स्वामित्व वाली ऑयल कंपनी का राष्ट्रीयकरण कर दिया था. अमेरिका-ब्रिटेन ने उसे अपने रणनीतिक हितों के विरुद्ध माना और मोसद्दिक का तख्तापलट कर दिया. उसके बाद रजा पहलवी की सत्ता बहाल हुई. पहलवी के दौर में ईरान अमेरिका समर्थक और उसके हितों का संरक्षक बना रहा. लेकिन दो दशक बाद ईरान में पहलवी और अमेरिका का तीखा विरोध शुरू हुआ. फरवरी, 1979 में पहलवी ने जान बचाने के लिए ईरान छोड़ दिया. अयातुल्लाह खुमैनी की वापसी हुई और एक अप्रैल, 1979 से ईरान इस्लामी गणतंत्र घोषित हो गया. फिर तो ईरान और अमेरिका के रिश्ते बिगड़ते ही गये. इस बीच ताकतवर अमेरिका से मुकाबले के लिए ईरान अपनी सैन्य क्षमता के विस्तार के साथ ही परमाणु ताकत विकसित करने की कोशिश में लगा रहा. दूसरी ओर, अमेरिका किसी भी तरीके से ईरान को परमाणु संपन्न होने से रोकने के लिए कमर कसे हुए है. इस जंग पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाएं आश्वस्त तो करती हैं, पर देखने की चीज यह है कि इनका कितना दबाव दोनों पक्षों पर पड़ता है और संयुक्त राष्ट्र इस पर क्या कदम उठाता है. फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों ने इस्राइल और ईरान, दोनों से हमले रोकने के लिए कहा है, तो रूस ने ईरान पर हमले रोकने की आलोचना की है, जबकि ब्रिटेन ने वार्ता से हल निकालने की बात कही है.

जहां तक भारत की बात है, तो हमारे लिए ईरान और इस्राइल, दोनों महत्वपूर्ण हैं. इस्राइल के साथ हमने अपनी साझेदारी को हाल ही में और मजबूत किया, तो ईरान के साथ हमारे गहरे आर्थिक रिश्ते हैं. ईरान का अशांत रहना भारत की ऊर्जा जरूरतों के हित को बाधित कर सकता है. इस जंग से पश्चिम एशिया की शांति और स्थिरता दांव पर लगी है.

जबकि भारत के लिए पश्चिम एशिया का पूरा इलाका बेहद महत्वपूर्ण है, जहां लगभग एक करोड़ भारतीय रहते हैं. ईरान पर हमले से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने इस्राइल में कहा था कि मध्य एशिया की स्थिरता और शांति से भारत के हित जुड़े हैं. इस जंग पर भारतीय विदेश मंत्रालय ने चिंता जतायी है और यह प्रतिक्रिया जतायी है कि हम सभी पक्षों से संयम बरतने, तनाव बढ़ने से बचने और आम लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने का आग्रह करते हैं. इसमें दोनों पक्षों को सुझाव देते हुए कहा गया है कि तनाव कम करने और अंदरूनी मुद्दों को सुलझाने के लिए बातचीत और डिप्लोमेसी को आगे बढ़ाया जाना चाहिए. गौरतलब है कि शनिवार को ही भारत ने ईरान और इस्राइल में रहने वाले अपने नागरिकों को अत्यधिक सावधानी बरतने और सतर्क रहने की सलाह दी थी. ईरान स्थित भारतीय दूतावास ने भी अपने नागरिकों से सावधानी बरतने, आसपास की स्थितियों के प्रति जागरूक रहने और दूतावास से आगे मिलने वाले निर्देशों का इंतजार करने के लिए कहा है. जाहिर है, इस संकट से वैश्विक अनिश्चितता और बढ़ी ही है.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

पश्चिम एशिया में गहराते संकट से पैदा हुईं आर्थिक चिंताएं

डॉ जयंतीलाल भंडारी
अर्थशास्त्री
article@jlbhandari.com

इस युद्ध का असर वैश्विक शिपिंग रूट्स खासकर होर्मुज जलडमरूमध्य पर भी पड़ सकता है, क्योंकि ईरान ने यह जलमार्ग रोक दिया है. दुनिया को मिलने वाला करीब एक तिहाई तेल और खाद्य व कृषि उत्पादों का अधिकांश यातायात इसी मार्ग से होता है.

इस्राइल-अमेरिका के ईरान पर हमले और उसके जवाब में ईरान के हमले से दुनिया की चिंताएं बढ़ा दी हैं. खासतौर से इस युद्ध में ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामेनेई के मारे जाने के बाद ईरान द्वारा इसका बदला लेने की बात कहे जाने से साफ है कि युद्ध लंबा चलेगा. ऐसे भारत की भी चिंता बढ़ सकती है. यह चिंता कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों, शेयर बाजार में गिरावट, माल ढुलाई की लागत बढ़ने, खाद्य वस्तुओं की महंगाई, भारत से बासमती चावल, चाय, मशीनरी, इस्पात तथा फुटवियर जैसे क्षेत्रों में निर्यात, निर्यात के लिए बीमा लागत में वृद्धि, पश्चिम एशिया में रहने वाले भारतीयों की सुरक्षा की चिंता तथा इस्राइल और ईरान सहित पश्चिम एशिया के अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार में कमी की आशंकाओं से संबंधित हैं.

इस युद्ध का असर वैश्विक शिपिंग रूट्स खासकर होर्मुज जलडमरूमध्य पर भी पड़ सकता है, क्योंकि ईरान ने 33 किलोमीटर चौड़ा यह जलमार्ग रोक दिया है. यह वैश्विक यातायात का एक अत्यंत महत्वपूर्ण मार्ग है. दुनिया को मिलने वाला करीब एक तिहाई तेल और खाद्य व कृषि उत्पादों का अधिकांश यातायात इसी मार्ग से होता है. ऐसे में इस क्षेत्र में शिपिंग बाधित होने से कच्चे तेल की ग्लोबल सप्लाई चेन प्रभावित हो सकती है. साथ ही इससे खाद्य पदार्थों की कीमत बढ़ने के आसार हैं. चूंकि ईरान भारत का पड़ोसी क्षेत्र है और भारत का करीब आधा कच्चा तेल इसी रास्ते से होकर आता है, ऐसे में यह युद्ध भारत के लिए कच्चे तेल संबंधी चिंता निर्मित करते हुए दिखाई दे रहा है. युद्ध के तनाव के बीच 28 फरवरी को कच्चे तेल की कीमत 73 डॉलर प्रति बैरल के मूल्य स्तर पर पहुंच गयी, जो सात माह का रिकॉर्ड मूल्य स्तर था. युद्ध के लंबा खिंचने पर कच्चे तेल की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल के पार जा सकती है. ईरान चूंकि दुनिया के सबसे बड़े कच्चे तेल उत्पादकों में से एक है, लिहाजा ईरान के तेल बाजार में अस्थिरता से पेट्रोल, डीजल और अन्य पेट्रोलियम उत्पाद महंगे होने लगेंगे. इसका असर भारत पर भी पड़ सकता है.

इस युद्ध से भारतीय शेयर बाजार में बड़ी संख्या में विदेशी निवेशकों द्वारा जोखिम वाली संपत्तियां बेची जाने और बड़ी संख्या में निवेश निकालने की स्थिति दिखाई दे सकती है. सेंसेक्स और निफ्टी के लिए यह महीना बड़ी गिरावट का माह हो सकता है. ऐसे में, सुरक्षित निवेश के तौर पर सोने की मांग बढ़ने से सोने की खपत और कीमत बढ़ सकती है. भारत के वित्तीय बाजार पर भी इसका असर पड़ सकता है और रुपया कमजोर हो सकता है. युद्ध के लंबा खिंच जाने पर पश्चिम एशिया में रहने वाले करीब 90 लाख भारतीयों की सुरक्षा भी भारत के लिए चिंता का कारण बन सकती है. हालांकि आंतरिक रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है, इस कारण युद्ध के लंबा खिंचने का सीधा असर देश पर बहुत ज्यादा नहीं भी दिखाई दे सकता है.

उदाहरण के लिए, देश में महंगाई नियंत्रित है, महंगाई दर चार प्रतिशत के लक्ष्य से नीचे है, थोक मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई दर जनवरी में 1.81 फीसदी पर, तो उपभोक्ता महंगाई दर 2.75 फीसदी रही है. यदि युद्ध से जरूरी दवाओं की आपूर्ति में कोई कमी आती है, तो सरकार पीएलआइ योजना के तहत दवा उद्योग में काम आने वाले 35 प्रमुख कच्चे मालों (एपीआइ) का उत्पादन देश में ही तेजी से बढ़ायेगी. इससे दवाओं के दामों पर नियंत्रण रखा जा सकेगा. जहां तक कच्चे तेल की कमी की बात है, तो देश के पास 74 दिनों का रणनीतिक कच्चा तेल भंडार उपलब्ध है. पहले भारत 27 देशों से कच्चा तेल खरीदता था, अब ऐसे देशों की संख्या बढ़कर 39 हो गयी है. इससे तेल खरीद संबंधी जोखिम कम हो गया है.

यह बात भी महत्वपूर्ण है कि आगामी वित्त वर्ष के बजट के तहत शीघ्र खराब होने वाले सामान की बाजार में समुचित आपूर्ति सुनिश्चित करने, महंगाई नियंत्रण और जरूरी दवाइयों की किफायती दाम पर आपूर्ति के लिए जो प्रभावी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गयी हैं, वे युद्ध की चुनौती के बीच देश के आम आदमी को राहत देते हुए दिखाई दे सकेंगी. यह बात भी महत्वपूर्ण है कि इस समय भारत पूरी दुनिया में मुक्त व्यापार की तरफ तेजी से आगे बढ़ा है. पिछले कुछ वर्षों में भारत द्विपक्षीय व्यापार और मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) से दुनिया के कई विकसित देशों में निर्यात बढ़ाने की राह पर आगे बढ़ा है और इस वर्ष यूरोपीय संघ, ब्रिटेन सहित कई देशों के साथ एफटीए क्रियान्वित करते हुए दिखाई देगा. इससे भारतीय सामान की दुनिया के बाजारों में पहुंच और बढ़ेगी तथा युद्ध की चुनौती के बीच भी भारत निर्यात के मोर्चे पर मजबूत दिखाई देगा. फरवरी तक भारत के पास रिकॉर्ड स्तर पर 723 अरब डॉलर से अधिक का विदेशी मुद्रा भंडार है. इससे भारत किसी भी आर्थिक जोखिम का आसानी से सामना करने में सक्षम है. हम उम्मीद करें कि सरकार इस युद्ध से निर्मित आर्थिक चुनौतियों की आशंका के मद्देनजर ऐसी बहुआयामी रणनीति के साथ आगे बढ़ेगी, जिससे देश के आमजन व अर्थव्यवस्था को युद्ध के दुष्प्रभावों से बचाया जा सकेगा.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

देश दुनिया

चीन-जर्मनी के बीच सहयोग पारस्परिक और वैश्विक विकास को बढ़ावा देने में सक्षम

चीन और जर्मनी क्रमशः विश्व की दूसरी और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं. उनके संबंध न केवल दोनों देशों के हितों से जुड़े हैं, बल्कि यूरोप और व्यापक विश्व पर भी इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है. यह संबंध सही दिशा में आगे बढ़े, इसे सुनिश्चित करने के लिए समग्र रणनीति बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है. बीते वर्ष मई में, चांसलर फ्रेडरिक मर्ज के पदभार संभालने के बाद, राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने उनसे फोन पर बात की. हाल ही में जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज अपनी पहली चीन यात्रा (25-26 फरवरी) पर बीजिंग पहुंचे. बीते कई वर्षों में चीन और जर्मनी ने आपसी सम्मान, विश्वास और खुले सहयोग के सिद्धांतों का पालन करते हुए, अपनी-अपनी राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप विकास किया है और पारस्परिक सहयोग को मजबूत किया है. चीन के सुधार और खुलेपन के शुरुआती दौर से, जब जर्मन कंपनियों ने चीन के ऑटोमोबाइल उद्योग के विकास में योगदान दिया, से लेकर आज तक, जब चीन के हरित और डिजिटल तकनीकी नवाचार वैश्विक ऑटोमोबाइल उद्योग को बढ़ावा दे रहे हैं, चीन-जर्मनी ऑटोमोबाइल क्षेत्र का एकीकृत विकास पारस्परिक लाभप्रद सहयोग का एक छोटा-सा उदाहरण है. दोनों देशों के बीच का सहयोग एक नये चरण में प्रवेश कर चुका है. द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद से वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य सबसे गहरे बदलाव से गुजर रहा है. मौजूदा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था पर भारी दबाव है और बहुपक्षवाद गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है. ऐसे में कई लोग चीन को एक स्थिर आधार के रूप में पहचान रहे हैं. चीन शांतिपूर्ण विकास के मार्ग पर चलने के लिए प्रतिबद्ध है और उसमें चीनी आधुनिकीकरण हासिल करने की क्षमता और आत्मविश्वास है. वह जर्मनी और दुनिया के अन्य देशों के साथ विकास के अवसर साझा करना जारी रखेगा. भविष्य में, जब तक चीन और जर्मनी एक-दूसरे के विश्वसनीय सहयोगी बने रहेंगे, तब तक वे उथल-पुथल भरी इस दुनिया में स्थिरता, विकास और सहयोग लाने में योगदान देते रहेंगे.

GLOBAL TIMES

-हे यिन

विशेष

स्त्री सशक्तीकरण की मिसाल है होली

क्षमा शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार और लेखिका
kshamasharma1@gmail.com

फागुन चल रहा है. फागुन माने वसंत का आगमन. वसंती हवा का चलना. सर्दी का कुछ कम होना. चारों ओर फूल ही फूल. हर तरफ पेड़-पौधे, फूल, पत्तियों की मुस्कराहट. भंवरों और तितलियों की धमा-चौकड़ी. फागुन और उत्तर भारत का बड़ा संग-साथ है. ब्रज प्रदेश की होली तो वैसे भी बहुत मशहूर है. आज से पचास-पचपन साल पहले ब्रज प्रदेश के ही अपने गांव और अन्य गांवों में होली एक महीने तक चलती. यानी होली तक बस राग-रंग, गाना बजाना ही चलता. उन दिनों घर का आंगन लीपकर, शाम के वक्त आटे का चौक पूरा जाता. उस पर सत्यानाशी के पौधे के पीले फूल सजाये जाते. महिलाएं ढोलक लेकर गाने-बजाने लगतीं. नाचने लगतीं. कई दिन पहले से घरों में पकवानों के बनने की गंध से पूरा वातावरण महकने लगता. हर घर के आंगन में एक छोटी होली बनायी जाती. बड़ी होली बाहर ऐसी किसी जगह, जहां होली जलने पर कहीं आग न लग जाये. इतनी जगह भी हो जहां बहुत से लोग खड़े हो सकें.

होली के दिन दोपहर के वक्त घर में बने पकवानों को लेकर महिलायें जातीं और पूजा करतीं. उसके बाद ही गुझिया, नमकीन, कांजी, दही बड़े आदि का स्वाद परिवार वालों को मिलता. शाम को घर में बनी होली जलाकर सब परिवार वाले आसपास बैठ जाते. लोगों का आना-जाना शुरू होता. वे अपने हाथों में गेहूं की बालियां लिये होते, जो वे भेंट में देते. उन्हें उसी होली में भूनकर खाया जाता. एक दिलचस्प बात यह है कि होली से पहले कोई भी अपनी खाट या लकड़ी से बने किसी भी ऐसे सामान को बाहर न छोड़ता, जिसे होली में समर्पित किया जा सके. अगर ऐसा होता, तो घर के सामने से वह सामान उठा लिया जाता और कोई शिकायत भी नहीं कर पाता. ऐसे हंसी-मजाक खूब चलते. 'बुरा न मानो होली है' गूंजता ही रहता.

मथुरा- वृंदावन में तो आज भी सात दिन तक तरह-तरह से होली मनायी जाती है. वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में होली से पहले एकादशी के दिन रंगों की जगह फूलों की पंखुड़ियों से होली खेली जाती है. बरसाने के श्रीजी मंदिर में लड्डुओं की होली मनती है. वहां की लठमार होली देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं. स्त्रियां हाथों में लट्ठ या डंडा पकड़े उन लोगों को पीटती हैं, जो उन पर रंग डालने आते हैं. गांव में जलाने वाली होली के अगले दिन की होली को गांव में धूल कहा जाता था. इसे कहीं-कहीं धुलंडी भी कहते हैं. इस दिन सवेरे कुछ भी नहीं पकाया जाता था. पिछले दिन ही अगले दिन के खाने के लिए बना लिया जाता. धूल वाले दिन तो जो भी बर्तन दिखता, उसमें लाल-पीले रंग घोल लिये जाते. पलाश के सूखे फूलों को, जिन्हें टेसू कहा जाता, कई दिन पहले भिगोकर रंग तैयार किया जाता. महिलाएं अपने पुराने कपड़ों से कोड़े तैयार करतीं. इसके बाद दरवाजे पर जैसे-जैसे होली खेलने वाले हुरियारों का आना-जाना बढ़ता, स्त्रियां हाथों में कोड़े और डंडे पकड़े दरवाजों पर दिखायी देतीं. जैसे ही कोई उन पर रंग डालने की कोशिश करता, वे उसे पीटने लगतीं. यह भी लठमार होली का ही एक रूप था. घर-घर में ये दृश्य दिखाई देते. लोग जबरिया रंग फेंकने की कोशिश करते, स्त्रियों से पिटते और हंसते. इस दौरान तरह-तरह के हंसी-मजाक चलते रहते. महिलाएं खूब गालियां भी देतीं.

तब तो यह सब आनंददायक और हंसने के लायक लगता. लेकिन अब अगर सोचती हूं, तो ऐसा महसूस होता है कि जो स्त्रियां समाज में पुरुषों के सामने तभी बोल नहीं सकती थीं, उन्हें इतनी ताकत मिलती कि वे कम से कम साल में एक बार उन्हें पीट सकें और होली के कारण इसका कोई बुरा भी न माने. चाहे यह सब एक त्योहार के कारण हो, लेकिन यह है तो अनोखी बात. स्त्रियों को ताकत सौंपने का यह एक तरीका भी था. यह चेतावनी भी है कि स्त्रियों के बाजुओं में भी इतनी ताकत है कि वे किसी को पीट सकती हैं. यह स्त्री सशक्तीकरण की ऐसी अनोखी मिसाल है, जिस पर किसी का ध्यान नहीं जाता.

दोपहर तक इस तरह होली खेलने के बाद सब लोग रंग छुड़ाने और नहाने में लग जाते, क्योंकि शाम तक अड़ोसी-पड़ोसी होली मिलन के लिए आना शुरू हो जाते. उन्हें घर में बने पकवान परोसे जाते. कोई आपके घर आता, आप किसी के घर जाते. बुजुर्ग कहते थे कि होली एक ऐसा त्योहार है, जिसमें गले मिलकर दुश्मनियां तक भुला दी जाती हैं. इसीलिए अगर किसी से लड़ाई है, तो उसके घर भी होली मिलन के लिए जरूर जाया जाता. और इस तरह बिना किसी कोर्ट-कचहरी के दुश्मनियां खत्म भी हो जातीं. जिनके घर कोई शोक हुआ होता, वहां इस दिन दूसरों के घर से पकवान पहुंचाये जाते. इसे शोक उठाना कहते. अब गांव में यह सब कितना बचा हुआ है, मैं नहीं कह सकती. वक्त के साथ हम बदल जाते हैं, तो परंपरायें भी लुप्त होती जाती हैं. लेकिन जो परंपरायें अच्छी हैं, वैमनस्य मिटाती हैं, वे अगर बनी रहें, तो वे समाज के हित में ही हैं. वक्त के साथ जैसे हम बदलते हैं, उसी तरह परंपरायें भी बदलती हैं. अब शायद गांवों में भी महीने भर ऐसे उत्सव न चलते हों.

(ये लेखिका के निजी विचार हैं.)

आपके पत्र

खिलाड़ियों की समस्याएं दूर हों

झारखंड में प्रतिभा की कमी नहीं है. शिक्षा से लेकर खेल के मैदान तक हम अपनी पहचान बना रहे हैं. जिस तरह हॉकी महिला लीग में राज्य की महिला हॉकी खिलाड़ियों ने राज्य का मान बढ़ाया है, उसी तरह अन्य खेल में भी हमारा राज्य राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पहचान बना सकता है. परंतु कुछ प्रतिभा अपनी मंजिल तक पहुंचने से पहले ही दम तोड़ देती है, क्योंकि उनके सामने खेल के अलावा कई चुनौतियां होती हैं. सरकार से अनुरोध है कि वह झारखंड की प्रतिभा को आगे बढ़ने के लिए सुविधा उपलब्ध करवाये.

श्वेता बड़ाईक, रांची

कर्ज के जाल से अपराध तक

आज कल बहुत से व्यक्ति कर्ज के जाल में फंस रहे हैं. कर्ज के जाल भी दो तरह के होते हैं- एक जाल वह है जिसमें लोग कर्ज लेकर फंस जाते हैं और दूसरा है जिसमें लोग कर्ज देकर फंस जाते हैं. कर्ज लौटाने में असमर्थता या कर्ज न लौटाने की प्रवृत्ति कई बार व्यक्ति को अपराध के रास्ते पर चलने के लिए विवश कर देती है. ऐसे में कोशिश यही होनी चाहिए कि बहुत जरूरी हो हम तभी कर्ज लें और उसे लौटाने की नीयत भी रखें.

उत्तम कुमार कवि, जमशेदपुर

मार्केट कैप | भारती एयरटेल ↓ ₹55,852.12 करोड़ | एचडीएफसी बैंक ↓ ₹37,580.1 करोड़ | रिलायंस इंडस्ट्रीज ↑ ₹34,846.12 करोड़

क्विक बाइट्स

एयर इंडिया बोइंग 787 विमानों के एफसीएम में कर रही है बदलाव

नयी दिल्ली. एयर इंडिया अपने अधिकांश ड्रीमलाइनर विमानों के फॉसेट कंट्रोल मॉड्यूल में बदलाव कर रही है. सूत्रों ने बताया कि यह कदम अमेरिका के संघीय विमानन प्रशासन (एफएए) के उस संशोधित निर्देश के बाद उठाया गया, जिसमें पानी के रिसाव की आशंका वाले मॉड्यूल को बदलने के लिए कहा गया था. इस रिसाव से विमान के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर बुरा असर पड़ सकता था.

दीपक गुप्ता ने संभाला गेल के चेयरमैन का पद

नयी दिल्ली. ऊर्जा क्षेत्र के अनुभवी कार्यकारी दीपक गुप्ता ने देश की सबसे बड़ी गैस पारेषण और विपणन कंपनी गेल (इंडिया) लिमिटेड के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) का पद संभाल लिया है. दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से मैकेनिकल इंजीनियर गुप्ता को प्राकृतिक गैस पारेषण, विपणन और बुनियादी ढांचा विकास का व्यापक अनुभव है. उन्होंने संदीप कुमार गुप्ता का स्थान लिया है, जो 28 फरवरी को सेवानिवृत्त हुए. उनका कार्यकाल 28 फरवरी, 2029 तक होगा.

एनसीएलएटी का धूत भाइयों के खिलाफ दिवाला कार्यवाही पर रोक से इनकार

नयी दिल्ली. एनसीएलएटी ने वीडियोकॉन इंडस्ट्रीज द्वारा कर्ज अदायगी में की गयी चूक के मामले में धूत भाइयों - राजकुमार नंदलाल धूत और प्रदीप नंदलाल धूत की याचिकाओं को खारिज कर दिया है, जिसमें उनके खिलाफ व्यक्तिगत दिवाला कार्यवाही शुरू करने को चुनौती दी गयी थी. भारतीय स्टेट बैंक ने वीडियोकॉन इंडस्ट्रीज द्वारा ऋण चूक पर धूत भाइयों पर 5,353.78 करोड़ रुपये का मांग का नोटिस जारी किया था.

इकोनॉमी. चालू वित्त वर्ष में कुल जीएसटी संग्रह ₹20.27 लाख करोड़ पर पहुंचा

जीएसटी संग्रह फरवरी में 8.1% बढ़कर 1.83 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा

एजेंसियां, नयी दिल्ली

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी खुशखबरी है. देश का कुल वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह फरवरी में सालाना आधार पर 8.1 प्रतिशत बढ़कर 1.83 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया. पिछले वर्ष की समान अवधि में जीएसटी संग्रह 1.69 लाख करोड़ रुपये था. यह जानकारी सरकार की ओर से रविवार को दी गयी. इससे पहले जनवरी में जीएसटी संग्रह 1.71 लाख करोड़ रुपये रहा था. चालू वित्त वर्ष में अब तक का कुल सकल जीएसटी संग्रह 20.27 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया है. इसमें 8.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है. यह देश की आर्थिक गतिविधियों में तेजी का स्पष्ट संकेत देता है. इसके साथ ही आयात से प्राप्त राजस्व में उच्च वृद्धि और घरेलू बिक्री में सुधार का इस बढ़ोतरी में मुख्य योगदान रहा.

रिफंड में 10.2% की हुई वृद्धि

फरवरी के जीएसटी कलेक्शन में सेंट्रल जीएसटी (सीजीएसटी) 37,473 करोड़ रुपये रहा है, जबकि स्टेट जीएसटी (एसजीएसटी) 45,900 करोड़ रुपये रहा है. वहीं, इंटीग्रेटेड जीएसटी (आइजीएसटी) 1,00,236 करोड़ रुपये था. फरवरी में सरकार ने 22,595 करोड़ रुपये का रिफंड जारी किया है. इसमें सालाना आधार 10.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है.

आयात से राजस्व रिकॉर्ड 17.2 प्रतिशत बढ़ा

फरवरी में सकल घरेलू राजस्व 5.3 प्रतिशत बढ़कर लगभग 1.36 लाख करोड़ रुपये रहा, जबकि आयात से सकल राजस्व रिकॉर्ड 17.2 प्रतिशत बढ़कर 47,837 करोड़ रुपये पर पहुंच गया. कुल शुद्ध जीएसटी संग्रह 1.61 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा, जो पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में 7.9 प्रतिशत अधिक है. कुल रिफंड 10.2 प्रतिशत बढ़कर 22,595 करोड़ रुपये रहा. शुद्ध उपकर राजस्व 5,063 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल फरवरी में 13,481 करोड़ रुपये था.

सितंबर, 2025 से लगभग 375 वस्तुओं पर जीएसटी दरों में कटौती की गयी थी. साथ ही पांच, 12, 18 और 28 प्रतिशत के चार कर स्लैब को मिलाकर पांच और 18 प्रतिशत के दो स्लैब बनाये गये थे. इसके अलावा कुछ चुनिंदा अति-विलासिता की वस्तुओं और तंबाकू उत्पादों के लिए अधिकतम 40 प्रतिशत का स्लैब रखा गया था.

एक्सपर्ट व्यू

जीएसटी दरों में की गयी कटौती की हुई भरपाई

डेलॉयट इंडिया के भागीदार एमएस मणि ने कहा कि जीएसटी संग्रह के आंकड़े दर्शाते हैं कि उपभोग में हुई बढ़ोतरी ने कर दरों में की गयी कटौती की भरपाई कर दी है. सितंबर, 2025 से लगभग 375 वस्तुओं पर जीएसटी दरों में कटौती की गयी थी. कर कटौती लागू होने के पहले महीने में जीएसटी संग्रह में शुरुआती गिरावट देखी गयी थी. नवंबर में राजस्व घटकर 1.70 लाख करोड़ रुपये रह गया था. इसके बाद दिसंबर में संग्रह बढ़कर 1.74 लाख करोड़ रुपये और जनवरी में 1.93 लाख करोड़ रुपये हो गया. ग्रांट थॉर्नटन भारत के भागीदार मनोज मिश्रा ने कहा कि चालू वर्ष में अब तक कुल संग्रह 8.3 प्रतिशत की वृद्धि बताते हैं कि उच्च आधार के बावजूद जीएसटी राजस्व मजबूत बना हुआ है.

देश में गाड़ियों की बिक्री की रफ्तार फरवरी में भी कायम

एजेंसियां, नयी दिल्ली

जीएसटी दरों में सितंबर 2025 में की गयी कटौती के बाद देश में शुरु हुई गाड़ियों की बिक्री में दमदार तेजी फरवरी में भी जारी रही. मारुति सुजुकी से लेकर महिंद्रा, टाटा मोटर्स, टोयोटा किर्लोस्कर, हुंडई, किआ सहित कई कंपनियों ने दहाई अंकों में वृद्धि दर्ज की है. ग्रामीण मांग और इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग में तेजी इस वृद्धि के मुख्य कारण रहे.

मारुति सुजुकी ने कुल 2,13,995 यूनिट कारों की बिक्री की है, जो पिछले साल फरवरी में हुई 1,99,400 यूनिट बिक्री के मुकाबले काफी ज्यादा है. यूटिलिटी व्हीकल श्रेणी में कंपनी ने 72,756 ईकाई की बिक्री की जो पिछले साल से 7000 यूनिट ज्यादा है.

महिंद्रा एंड महिंद्रा की बिक्री में 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की है. कंपनी ने कुल 97,177 वाहन बेचे. यूटिलिटी व्हीकल सेगमेंट की घरेलू बिक्री 19 प्रतिशत बढ़कर 60,018 यूनिट्स तक पहुंच गयी. महिंद्रा के ट्रैक्टरों की बिक्री में 34 प्रतिशत का भारी उछाल आया.

टाटा मोटर्स के पैसेंजर व्हीकल सेगमेंट ने 35 प्रतिशत की जबरदस्त सालाना वृद्धि दर्ज की. कंपनी की कुल बिक्री पिछले साल के 46,811 यूनिट्स से बढ़कर 63,331 यूनिट्स हो गयी है. इसके इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री में 57 प्रतिशत की जबर्दस्त वृद्धि देखी गयी.

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने 34,034 वाहनों की बिक्री की, जो पिछले साल की तुलना में 20 प्रतिशत अधिक है. घरेलू बाजार में कंपनी की बिक्री 16 प्रतिशत बढ़ी.

हुंडई मोटर्स ने फरवरी में 66,134 यूनिट की कुल बिक्री के साथ 12.6% की सालाना वृद्धि दर्ज की. घरेलू बिक्री 52,407 यूनिट और निर्यात 13,727 यूनिट रहा.

किआ, रेनो व एमजी मोटर की बिक्री में भी उछाल

किआ इंडिया ने 27,610 यूनिट बेचकर 10.3% की वृद्धि दर्ज की. वहीं रेनो इंडिया की बिक्री 31% बढ़कर 3,495 यूनिट हो गयी. जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर्स इंडिया ने 24% की बढ़त के साथ 4,957 यूनिट की बिक्री दर्ज की.

'कैफे-3' नियमों को लागू करने से पूर्व ली जायेगी आम सहमति

एजेंसियां, नयी दिल्ली

केंद्रीय बिजली मंत्री मनोहर लाल ने रविवार को कहा कि सरकार वाहन विनिर्माताओं के लिए 'कैफे-3' नियमों को लागू करने से पहले सभी पक्षों के साथ आम सहमति बनायेगी. ये नियम किसी वाहन निर्माता के सभी मॉडल में औसत ईंधन खपत और कार्बन उत्सर्जन को सीमित करने के लिए तैयार किये गये हैं. ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीइइ) द्वारा प्रस्तावित 'कॉरपोरेट एवरेज फ्यूल एफिशिएंसी-3' (कैफे-3) नियमों को एक अप्रैल, 2027 से 31 मार्च, 2032 तक प्रभावी बनाने का प्रस्ताव है. सरकार ने इस मसौदे पर संबंधित पक्षों से राय मांगी है. इन नियमों को लागू करने के ढांचे पर वाहन विनिर्माताओं के विचार बंटे हुए हैं. कुछ कंपनियां वजन और कम कीमत के आधार पर छोटी कारों के लिए उत्सर्जन मानकों में ढील की मांग कर रही हैं. वहीं, इस ढील का विरोध करने वालों का तर्क है कि इससे सुरक्षा मानकों से समझौता होगा और देश के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में बाधा आयेगी.

पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ने से सोना- चांदी में आ सकती है तेजी

एजेंसियां, नयी दिल्ली

पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के कारण वैश्विक अनिश्चितता के बीच निवेशकों द्वारा सुरक्षित निवेश के रूप में कीमती धातुओं का रुख करने से सोमवार को बाजार खुलने पर सोना और चांदी की कीमतों में भारी तेजी आने की संभावना है. विश्लेषकों ने यह जानकारी दी. अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा तेहरान पर इजराइली हमलों के बाद ईरान में बड़े सैन्य अभियान की घोषणा और ईरानी सर्वोच्च नेता खामेनेई के निधन की पुष्टि के बाद क्षेत्र में तनाव चरम पर है. इसके जवाब में ईरान द्वारा अमेरिकी सैन्य ठिकानों और इजराइली लक्ष्यों पर जवाबी कार्रवाई से वैश्विक बाजार सहमे हुए हैं. विश्लेषकों का कहना है कि घरेलू बाजार में सोना और चांदी की कीमतों पर इसका कितना असर पड़ेगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि यह संघर्ष कितने समय तक चलता है. इस सप्ताह आने वाले विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के पीएमआइ आंकड़े भी बाजार की दिशा तय करेंगे.

विदेशी निवेशकों ने फरवरी में डाले ₹22,615 करोड़, 17 माह का टूटा रिकॉर्ड

एजेंसियां, नयी दिल्ली

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआइ) ने फरवरी में भारतीय शेयर बाजार में 22,615 करोड़ रुपये डाले हैं, जो 17 माह में सबसे अधिक रहा है. यह सितंबर, 2024 के बाद का सबसे ज्यादा मासिक निवेश है. उस समय एफपीआइ ने शेयरों में 57,724 करोड़ रुपये डाले थे. इसकी वजह अंतरिम भारत-अमेरिका व्यापार करार, घरेलू बाजार के मूल्यांकन में कमी और कंपनियों के तीसरी तिमाही के बेहतर नतीजे हैं. डिपॉजिटरी के आंकड़ों के अनुसार, फरवरी में लिवाली से पहले लगातार तीन माह तक एफपीआइ बिकवाल रहे थे. एफपीआइ ने जनवरी में 35,962 करोड़ रुपये, दिसंबर में 22,611 करोड़ रुपये और नवंबर में 3,765 करोड़ रुपये की निकासी की थी. कुल मिलाकर, एफपीआइ ने 2025 में भारतीय शेयर बाजार से शुद्ध रूप से 1.66 लाख करोड़ रुपये निकाले थे.

वेंचुरा के शोध प्रमुख विनीत बोलिंजकर ने कहा कि यह प्रवाह द्वितीयक बाजार में खरीदारी से बढ़ा, जो 2025 की निकासी के बाद नये विदेशी भरोसे का संकेत है.

...पहले पेज से

ईरान-दुबई में झारखंड के 5000...

प्रवासी कंट्रोल रूम को अब तक किसी मजदूर की परेशानी या नुकसान की कोई सूचना नहीं मिली है. प्रवासी मजदूरों ने बताया कि राज्य कंट्रोल रूम ने उनसे संपर्क कर हालचाल लिया है. प्रभात खबर ने गिरिडीह के प्रवासी मजदूरों से संपर्क कर हालात जानने का प्रयास किया है. प्रवासी मजदूरों ने बताया कि आसमान में फाइटर प्लेन गरज रहे हैं. सुबह के समय लड़ाकू विमानों ने कई राउंड चक्कर लगाये.

खाने और रहने की पूरी व्यवस्था की गयी है : केदारनाथ केदारनाथ महतो बगोदर के मुंडरो गांव के रहने वाले हैं. वे ट्रांसमिशन कंपनी में हाइवा ऑपरेटर हैं और पिछले सात वर्षों से दुबई में काम कर रहे हैं. उन्होंने बताया कि फिलहाल किसी तरह की परेशानी नहीं है. दुबई प्रशासन पूरी तरह अलर्ट है. पर्यटकों और बाहर से आये लोगों का विशेष ख्याल रखा जा रहा है. कंपनी के लोग भी लगातार संपर्क में हैं. खाने और रहने की पूरी व्यवस्था की गयी है. जब तक माहौल सामान्य नहीं होगा, कंपनी काम शुरू नहीं करेगी.

औद्योगिक इकाइयों को...

मैन्युफैक्चरिंग से जुड़ी औद्योगिक इकाइयों को स्पष्ट रूप से कॉमर्शियल उपभोक्ताओं से अलग रखने का प्रस्ताव है, ताकि दोनों की लोड प्रोफाइल और लागत संरचना के अनुसार अलग-अलग टैरिफ तय किये जा सकें. प्रस्ताव का एक अहम बिंदु औद्योगिक इकाइयों के लिए अलग फीडर का निर्माण है. जेबीवीएनएल के अधिकारियों के अनुसार इंडस्ट्रियल उपभोक्ताओं को कॉमर्शियल लोड से अलग रखने पर उनके लिए समर्पित फीडर विकसित किये जा सकेंगे. इससे औद्योगिक इकाइयों को अधिक स्थिर और निर्बाध बिजली आपूर्ति मिल सकेगी. नयी कैटेगरी के साथ-साथ जेबीवीएनएल ने टैरिफ स्ट्रक्चर में संशोधन का भी प्रस्ताव दिया है. औद्योगिक इकाइयों के लिए पहले की तुलना में कम कीमत पर बिजली उपलब्ध कराने की बात कही गयी है.

सरकार ने कसी नकेल...

फरवरी-मार्च में भारी निकासी से कैश फ्लो पर असर : वित्त विभाग के तत्कालीन प्रधान सचिव अमित खरे के मूल आदेश में उल्लेखित है कि कई विभाग बजट राशि का समानुपातिक खर्च नहीं करते हैं. फरवरी और मार्च में भारी निकासी से राजकोष का नकदी प्रवाह (कैश फ्लो) प्रभावित होता है. परियोजनाओं की भौतिक उपलब्धि भी समय पर नहीं हो पाती है. राज्य के कई विभागों ने बजट का 50% से भी कम खर्च किया है. मार्च महीने में ऐसे विभागों को पूरी राशि खर्च करने के लिए विभागीय सचिव की अनुमति से वित्त विभाग से अनुमोदन लेना होगा. इसमें एक-एक स्कीम के कुल आवंटन की 15 फीसदी राशि ही निकल पायेगी.

रांची से बिजनेस टूर...

रांची निवासी कृष्णाकांत गिरी, जो अपनी पत्नी के साथ इस टूर में शामिल हैं, ने फोन पर बताया कि यहां रांची, जमशेदपुर, पलामू और गिरिडीह समेत आसपास के इलाकों से करीब 100 से अधिक लोग हैं. यह फैमिली टूर था. उन्होंने बताया कि फिलहाल कंपनी की ओर से होटल और भोजन की समुचित व्यवस्था की गयी है और अभी तक किसी तरह की तत्काल परेशानी नहीं है. हालांकि, सभी की सबसे बड़ी चिंता सुरक्षित वापसी को लेकर है.

:::::::::::: :::::::::::::: ::::::::::::

हम होटल में सुरक्षित हैं, लेकिन धमाकों की आवाज सुनाई दे रही है : रांची के एक व्यक्ति ने सुरक्षा कारणों से अपनी पहचान गुप्त रखने की शर्त पर एक वीडियो साझा किया है. इस वीडियो में होटल की बालकनी से दूर तक धमाकों की आवाजें सुनाई दे रही हैं. उन्होंने बताया कि, हम लोग रांची से दुबई आये थे. 28 तारीख को अबू धाबी एयरपोर्ट से रांची लौटना था. तभी यहां धमाके शुरू हो गये. एयरपोर्ट बंद कर दिया गया. किसी तरह हमें दुबई लाकर होटल में ठहराया गया है. होटल में हम सुरक्षित हैं, लेकिन आसपास धमाकों की आवाजें आ रही हैं. भारत सरकार से अपील है कि हमें सुरक्षित बाहर निकाला जाये.

बाबाधाम में आज से...

मंगलवार तीन मार्च की शाम 5:47 बजे से 6:48 बजे तक चंद्रग्रहण का संयोग बन रहा है.इसके चलते मंदिर की पूजा व्यवस्था में आंशिक बदलाव किया गया है. मंदिर प्रशासन के अनुसार, एहतियातन शाम चार बजे ही बाबा मंदिर का पट बंद कर दिया जायेगा. इस्टेट पुरोहित ने स्पष्ट किया कि बाबा बैद्यनाथ के मस्तक पर चंद्रमा विराजमान हैं, इसलिए यहां सूतक काल का प्रभाव मान्य नहीं है. चंद्रग्रहण समाप्ति के बाद विधिवत स्नान, शुद्धिकरण और वैदिक मंत्रोच्चार के पश्चात करीब साढ़े सात बजे श्रृंगार पूजा के लिए कपाट दोबारा खोला जायेगा. इसके बाद श्रद्धालु पुनः दर्शन कर सकेंगे.

जैनामोड़ : वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार की मौत, विरोध में जाम

जैनामोड़. जरीडीह के फुसरो-जैनामोड़ मुख्य सड़क तांतरी स्थित पेट्रोल पंप के पास सड़क हादसा हो गया. यहां शनिवार की देर रात में 407 छड़ लदे वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार की मौत हो गयी. मृतक की पहचान ओपी थाना क्षेत्र मानगो निवासी कारु रजक के 21 वर्षीय पुत्र मिथलेश रजक के रूप में की गयी है. घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने रात 12 बजे से लेकर सुबह 11 बजे तक सड़क जाम कर दी. घटना के संदर्भ में बताया जाता है कि युवक मिथिलेश अपनी बाइक से वापस घर लौट रहा था. इसी दौरान विपरीत दिशा की ओर से आ रहे सरिया लदे वाहन संख्या जेएच 09 बी 9038 ने उसे अपनी चपेट में ले लिया. हादसे में घटनास्थल पर ही मिथिलेश ने दम तोड़ दिया.जब इसकी सूचना परिजनों को मिली, तो चीख-पुकार मच गयी. दूसरी ओर घटना स्थल पर आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क को पूरी तरह से जाम कर दिया. जाम होने से छोटी -बड़ी गाड़ियों की कतार लग गयी.

वृद्ध को हाथियों ने कुचला

चलकुशा.(हजारीबाग). प्रखंड के चौबे गांव के समीप कमला फाटक के पास जंगली हाथियों ने एक व्यक्ति को कुचल कर मार डाला. घटना रविवार की सुबह करीब पांच बजे की है. बताया जा रहा है कि बद्री चौधरी (65 वर्ष, पिता मेघलाल चौधरी) सुबह टहलने के लिए निकले थे. इसी दौरान झुंड से बिछड़े दो हाथियों ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया. जिससे घटनास्थल पर ही उनकी मौत हो गयी. घटना की सूचना मिलते ही जिप सदस्य सविता सिंह, प्रमुख प्रतिनिधि दीपक चौधरी, मुखिया कुमार अंशु आदि लोग मौके पर पहुंचे और वन विभाग के प्रति रोष जताया.

ट्रक के धक्के से व्यक्ति घायल, रिम्स रेफर

धनबाद. पुटकी के गोपालीचक में रविवार की दोपहर में हुए सड़क हादसे में हजारीबाग के इचाक निवासी महेंद्र सिंह (56 वर्ष) गंभीर रूप से घायल हो गये. महेंद्र सिंह अपने रिश्तेदार के घर पुटकी आये थे. उन्हें वापस लौटने के क्रम में गोपालीचक के पास एक ट्रक ने टक्कर मार दिया. उन्हें इलाज के लिए रिम्स किया गया है,.

झारखंड

बाबा मंदिर इलाके की गलियों में नो एंट्री, गूगल मैप अब बनेगा पथप्रदर्शक

वरीय संवाददाता, देवघर

बाबा मंदिर में दर्शन को पहुंचने वाले श्रद्धालुओं को अब संकरी गलियों में जाम से नहीं जूझना पड़ेगा. देवघर एसपी सौरभ के निर्देश पर यातायात पुलिस ने बड़ा निर्णय लेते हुए मंदिर की ओर जाने वाले 17 से अधिक प्रमुख संकीर्ण मार्गों पर चार पहिया वाहनों का प्रवेश पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया है. इन मार्गों को गूगल मैप पर भी 'रोड क्लोज्ड' के रूप में अपडेट कर दिया गया है, ताकि श्रद्धालु सुरक्षित और सुगम मार्ग का चयन कर सकें.

प्रायः देखा गया है कि बाबा मंदिर में दर्शन के लिए बाहर से आने वाले श्रद्धालु गूगल मैप का सहारा लेकर मंदिर पहुंचने का प्रयास करते हैं. कई बार लाइव ट्रैफिक के आधार पर वे संकरी एवं तंग गलियों में प्रवेश कर जाते हैं. इससे यातायात बाधित होती है और श्रद्धालुओं सहित स्थानीय लोगों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है. कई बार वाहन घंटों जाम में फंसे रहते हैं.इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए देवघर एसपी सौरभ के निर्देश पर देवघर यातायात पुलिस ने यह नयी पहल की है. पुलिस मीडिया सेल द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार, मंदिर के आसपास स्थित तंग गलियों में अक्सर श्रद्धालु अपने चार पहिया वाहन लेकर प्रवेश कर जाते थे, जिससे जाम की स्थिति बन जाती थी. इसी समस्या से निजात दिलाने के लिए यह निर्णय लिया गया है.

- मंदिर क्षेत्र की 17 से अधिक संकरी सड़कों पर चार पहिया वाहनों की नो-एंट्री
- गूगल मैप पर बंद मार्ग दिखेंगे 'रोड क्लोज्ड' के रूप में
- जाम की समस्या से मिलेगी राहत

पहले मोबाइल पर आया संदिग्ध मैसेज बाद में ठगों ने उड़ा दिये 64 हजार रुपये

गिरिडीह. जमुआ थाना क्षेत्र अंतर्गत खरगडीहा निवासी अमरदीप साव के बैंक खाते से साइबर ठगों ने 64 हजार रुपये की निकासी कर ली. इस मामले को लेकर पीड़ित ने गिरिडीह साइबर थाना में आवेदन देकर जांच और कार्रवाई की मांग की है. अमरदीप ने कहा है कि 24 फरवरी को उनके मोबाइल नंबर पर एक संदिग्ध मैसेज आया. मैसेज के जरिये ठगों ने पहले 3600 रुपये का ट्रांजेक्शन दिखाया. मैसेज देखने के कुछ देर बाद ही उनके खाते से 60,000 व फिर 4,000 रुपये, कुल 64,000 रुपये की निकासी कर ली गयी. उन्होंने बताया कि वह अपनी बेटी की शादी के लिए बैंक ऑफ इंडिया की खरगडीहा शाखा में लगातार पैसे जमा कर रहे थे. इसी दौरान अज्ञात व्यक्ति ने मैसेज भेजकर ठगी कर ली. वह परिवार के एकमात्र कमानेवाले सदस्य हैं. इस घटना के बाद वह गंभीर आर्थिक संकट में फंस गये हैं. आवेदन के साथ संदिग्ध मैसेज की फोटो कॉपी भी संलग्न की है. उन्होंने पुलिस से राशि वापस दिलाने की मांग की है.

औद्योगिक क्षेत्र में जमीन घेराबंदी का विरोध, टेंट जलाया

जसीडीह. जसीडीह औद्योगिक क्षेत्र अंतर्गत बाबूडीह गांव में जमीन घेराबंदी को लेकर ग्रामीणों का आक्रोश खुलकर सामने आ गया. आरोप है कि आक्रोशित ग्रामीणों ने बैठक के बाद एक कंपनी की ओर से लगाये गये टेंट में आग लगा दी. इलाके में तनाव की स्थिति बनी हुई है. इस संबंध में पुलिस कुछ भी कहने से इनकार कर रही है. इससे पूर्व रविवार को बोरियो के पूर्व विधायक लोबिन हेंब्रम ग्रामीणों के समर्थन में गांव पहुंचे और बैठक कर आंदोलन की रणनीति बनायी. इधर, कंपनी के निदेशक शंकर सिंह और अजीत सिंह ने कहा कि बैठक के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने विराज एग्रीकोन प्राइवेट लिमिटेड की ओर से लगाये गये टेंट में आग लगा दी. ग्रामीण छड़, जेनरेटर समेत लाखों रुपये की सामग्री उठा ले गयी है. इस संबंध में जसीडीह थाने को सूचना दी गयी है. वहीं जसीडीह पुलिस का कहना है कि इस संबंध में कोई लिखित आवेदन नहीं दिया गया है.

बिहार सरकार

समाहरणालय, गया
(विभागीय जाँच)
ई-मेल :- admdpgaya@gmail.com

बिहार मद्य निषेध उत्पाद अधिनियम 2016 एवं संशोधित अधिनियम 2022 एवं नये संशोधित नियमावली 2022 के अन्तर्गत जप्त वाहनों के मालिको के लिए नोटिस

अल्पकालीन आम सूचना

बजरीये नोटिस द्वारा सूचित किया जाता है कि बिहार मद्यनिषेध एवं उत्पाद अधिनियम 2016 की धारा 56(घ) अवैध रूप से देशी / विदेशी शराब का परिवहन करने के आरोप में निम्नलिखित वाहन विभिन्न थाना काडों में जप्त कर अधिहरण प्रस्ताव जिला पदाधिकारी, गया एवं सहायक आयुक्त मद्यनिशेध, गया के माध्यम से प्राप्त होने के फलस्वरूप अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में उत्पाद अधिहरण वाद संधारित है।

नये संशोधित नियमावली 2022 के नियम 12 (क) एवं मद्यनिषेध उत्पाद एवं निबंधन विभाग के अधिसूचना सं0 पटना 449 दिनांक- 31.05.2023 में निहित उपबंधों के आधार पर नवीनतम बीमाकृत मूल राशि का निर्धारित शास्ति / जुर्माना (Penalty) एवं जुर्माना के राशि का 03% रख-रखाव आदि की राशि जमा कर वाहन मुक्त कराना चाहते हैं तो स्तम्भ-7 में अंकित तिथि को या इसके पूर्व कार्यालय कार्य दिवस में निर्धारित प्रपत्र-IV में आवेदन पत्र अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में समर्पित करें। जिसकी सुनवाई की तिथि स्तम्भ 07 में निर्धारित की गई है। वाहनों की विवरणी निम्नवत है :-

क्र0 सं0	थाना का नाम / थाना कांड सं0	उत्पाद अधिहरण वाद सं0	जप्त वाहन का प्रकार	जप्त वाहन का निबंधन सं0	परिवहन कार्यालय से प्राप्त सूचना के अनुसार वाहन मालिको का नाम व पता	सुनवाई तिथि
1	2	3	4	5	6	7
1	769 / 25 सदर	36 / 2025	हुण्डई i10 कार	Reg No- JH01AB2694 Engine No. G4HG9M82770 Chassis No. MALAM51BR9M392839G	SURAJ KUMAR, S/O- VINOD CHAUDHARY, AT - HAWAI NAGAR ROAD DPS SCHOOL,BIRSA, PS-HATIYA, PO -HATIA, DIST-RANCHI, STATE -JHARKHAND, PIN CODE-834003	09.03.2026 एवं 13.03.2026
2	184 / 25 शेरघाटी	43 / 2025	हिरो स्पलेण्डर प्रो मोटरसाईकिल	Reg No- JH10AR8641 Engine No. HA10EREHJ12537 Chassis No. MBLHA10BFEHJ77227	Ramashis Prasad Yadav, S/o - Shyam lal prasad Yadav, At-Police Line, hirapur, Ps+Dist - Dhanbad, State-Jharkhand, pincode-826001	09.03.2026 एवं 13.03.2026
3	192 / 25 शेरघाटी	44 / 2025	हिरो पैशन प्रो मोटरसाईकिल	Reg No- JH13B3801 Engine No. HA10ENCHM30439 Chassis No. MBLHA10AWCHM50045	Rinki Kumari, D/O-Sri Vilas Yadav, At - Mohanpur, Po-Chanri,Ps-Pratappur, Dist - Chatra, State-Jharkhand, pincode-825404	09.03.2026 एवं 13.03.2026
4	227 / 25 शेरघाटी	45 / 2025	मारुति सुजुकी स्वीफ्ट कार	Reg No- JH05AD0740 Engine No. D13A1408756 Chassis No. MA3FSEB1S00263191	Sabuddin Ansary, At- Simuliya Damda Purul, Vill-C/O-AK DAS, AT-Road no Ps- Dimna Road, Mango, Dist-Purbi Singhbhum State-Jharkhand, pincode-831012	09.03.2026 एवं 13.03.2026
5	190 / 25 शेरघाटी	74 / 2025	हिरो स्पलेण्डर	Reg No- JH02A0168 Engine No. अस्पष्ट Chassis No. 01B20C13779	अप्राप्त	09.03.2026 एवं 13.03.2026
6	144 / 25 शेरघाटी	41 / 2025	हिरो स्पलेण्डर प्लस	Reg No- JH02BU9552 Engine No. HAJ11E7SHC57657 Chassis No. MBLHAW22XSHC66361	Predeep Ravidas, S/o- kailash Ravidas, AT-Chorya, Po +Ps-Mohanpur, Dist-Gaya State- Bihar, Pincode-824232	09.03.2026 एवं 13.03.2026
7	184 / 25 शेरघाटी	42 / 2025	हिरो होण्डा पैशन प्रो मोटरसाईकिल	Reg No- JH10N7096 Engine No. 07H05M29815 Chassis No. 07H05C04658	Ravi kumar, S/o-Shree Rakesh kumar, AT- Mishti Pada Hirapur, Dist-Dhanbad State-Jharkhand, Pincode-826001	09.03.2026 एवं 13.03.2026

अतः सभी संबंधित व्यक्तियों को आग्रह किया जाता हैं कि कॉलम 07 में निर्धारित तिथि को आप स्वयं अथवा अपने प्राधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में उपस्थित होकर अपना वाहन कागजात, पहचान पत्र एवं वाहन का अद्यतन बीमाकृत राशि का कागजात आदि के साथ पक्ष प्रस्तुत करें, अन्यथा आपकी अनुपस्थिति में एक पक्षीय कार्रवाई करते हुए विधिसम्मत आदेश पारित किया जायेगा।

इसे सख्त ताकीद जाने।

अपर समाहर्त्ता,
विभागीय जाँच, गया।

उक्त सूचना www.state.bihar.gov.in/prdbihar पर भी देखी जा सकती है।

PR. No. 25385 (District) 25-26

नशामुक्त हो जाए बिहार, सुरक्षित रहे घर परिवार।

रंगों के त्योहार में आपके घर-आंगन में खुशियों की बारिश हो।

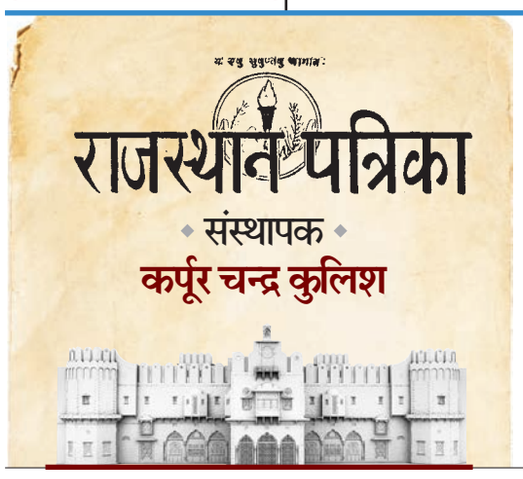

विश्व शांति के लिए अब नया जिम्मेदार तंत्र जरूरी

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एक ऐसे अराजक मोड़ पर खड़ा है, जहां 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय कायदों पर भारी पड़ रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए जो नियम बनाए गए थे और जिन संस्थाओं को प्रहरी का दायित्व सौंपा गया था, वे आज असहाय और पंगु नजर आ रही हैं। विशेषकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की प्रासंगिकता पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े हो गए हैं। यह गिरावट अचानक नहीं आई, बल्कि एक क्रमिक विफलता का परिणाम है।

ईरान पर इजरायल और अमरीका का हालिया हमला 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' की कहावत को चरितार्थ करता है। परमाणु संधि के नाम पर दबाव बनाने में विफल रहने के बाद सैन्य बल का प्रयोग एक खतरनाक परिपाटी है। पहले वेनेजुएला के राष्ट्रपति की गिरफ्तारी और अब ईरान के सर्वोच्च नेता को निशाना बनाना दुनिया को डराने वाला संदेश है। विडंबना देखिए कि यह हमला केवल इस आशंका के आधार पर किया गया कि ईरान परमाणु हथियार विकसित कर रहा है। यह ठीक वैसा ही तर्क है जैसा इराक के मामले में दिया गया था, जहां बाद में कोई रासायनिक हथियार नहीं मिले। ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद अमरीका और इजराइल जिस 'सत्ता परिवर्तन' की उम्मीद कर रहे हैं, उसकी राह कांटों भरी है। ऐतिहासिक अनुभव बताते हैं कि केवल हवाई बमबारी से किसी देश की सत्ता और जनमानस को नहीं बदला जा सकता। अमरीका ने फिलहाल अपनी थल सेना भेजने में कोई रुचि नहीं दिखाई है, जो उसकी हिचकिचाहट को दर्शाता है। ईरानी नागरिक अपनी समृद्ध सभ्यता और संप्रभुता के प्रति अत्यंत स्वाभिमानी हैं। वे विदेशी ताकतों द्वारा थोपी गई किसी भी 'कठपुतली सरकार' को शायद ही स्वीकार करें। हालांकि अमरीका ने ईरान के अंतिम शाह पहलवी वंश के उत्तराधिकारी रजा पहलवी को संरक्षण दे रखा है, किंतु इस भीषण हमले से हुए राष्ट्रीय मान-मर्दन के बाद उनके लिए स्वीकार्यता पाना सरल नहीं होगा।

ईरान ने जिस तरह से क्षेत्र के अमरीका समर्थक देशों पर जवाबी हमले किए हैं, उससे संघर्ष के कई नए मोर्चे खुल गए हैं। ईरान के पास भले ही पश्चिम जैसी अत्याधुनिक तकनीक न हो, लेकिन उसकी प्रभावी मिसाइल प्रणाली और घातक ड्रोन अमरीकी ठिकानों के लिए बड़ा खतरा हैं। यदि यह युद्ध लंबा खिंचता है, तो वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला छिन्न-भिन्न हो जाएगी और कच्चे तेल की कीमतों में लगी आग पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को झुलसा देगी। भारत के लिए यह संकट दोहरी चुनौती है। पश्चिम एशिया में लगभग 90 लाख भारतीय कार्यरत हैं। उनकी जान-माल का खतरा है। ईरान के साथ हमारे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध भी हैं। अब यह जरूरी है कि विश्व शक्तियां दादागीरी को छोड़कर कूटनीति का मार्ग अपनाएं और एक ऐसे नए वैश्विक तंत्र का विकास हो जो वास्तव में न्यायसंगत और उत्तरदायी हो।

वर्चस्व की लड़ाई : यह भ्रम फिर से टूटा कि महाशक्तियों के आचरण में शांति और न्याय का कोई स्थायी आधार मौजूद है

ईरान पर हमला : शक्ति, शांति और विडंबना

विनय कौड़ा
अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार
@patrika.com

जब कोई महाशक्ति यह निर्णय करती है कि किसे हटाया जाना चाहिए और किसे संरक्षित किया जाना चाहिए, तब वह अंतरराष्ट्रीय नियमों की परिभाषा स्वयं लिखती है। यह प्रसंग हमें एक असुविधाजनक निष्कर्ष की ओर ले जाता है।

इतिहास के पृष्ठों पर कुछ क्षण ऐसे अंकित होते हैं जब शक्ति अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट होती है- निर्वसन और निर्दय। अमरीका और इजरायल का ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई पर किया गया लक्षित प्रहार ऐसा ही क्षण है। यह केवल एक राजनीतिक हत्या नहीं, बल्कि उस वैश्विक व्यवस्था की उद्घोषणा है, जिसमें नैतिकता का आवरण हटते ही सामर्थ्य का कठोर सत्य सामने आ खड़ा होता है। तेहरान के धुएं से भरे आकाश के नीचे केवल कुछ व्यक्तियों का अंत नहीं हुआ। वहां उस भ्रम का एक बार फिर से अंत हुआ कि महाशक्तियों के आचरण में शांति और न्याय का कोई स्थायी आधार मौजूद है।

बेशक ईरानी शासन दूध का धुला नहीं है। उसने अपने ही लोगों के खिलाफ असहिष्णुता और भयंकर दमन का चक्र चलाया है। कुछ समय पहले देशभर में विरोध प्रदर्शनों पर सुरक्षाबलों ने बेरहमी से जवाब दिया, जिसमें हजारों लोगों की मौतें हुईं, जबकि गिरफ्तारियों और यातनाओं की संख्या और भी अधिक है। लेकिन यह भी तो विडंबना है कि अमरीकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप बार-बार स्वयं को शांति का प्रेमी बताते हैं। ट्रंप का दावा है कि उनका लक्ष्य युद्ध नहीं, बल्कि ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोककर क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखना है। किंतु जब वही नेतृत्व इजरायल के साथ मिलकर किसी संप्रभु राष्ट्र के सर्वोच्च पदाधिकारी को लक्षित आक्रमण में समाप्त कर देता है, तब शब्दों और आचरण के बीच की दूरी उजागर हो जाती है। ट्रंप का यह कथन कि वे युद्ध नहीं चाहते, उसी क्षण अपनी नैतिक आभा खो देता है जब युद्ध की ज्वाला उन्हीं के निर्णय से प्रज्वलित होती है और उसे 'अनिवार्य सुरक्षा' का नाम दे दिया जाता है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने इस अभियान को अस्तित्व की रक्षा की संज्ञा दी है। उनके लिए ईरान केवल एक प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि दीर्घकालिक वैचारिक और सैन्य चुनौती है। किंतु इस गठबंधन में खोखली नैतिकता जितनी मुखर है, राजनीतिक हित उतने ही मौन परंतु निर्णायक हैं। अमरीका और इजरायल की यह संयुक्त कार्रवाई केवल सुरक्षा-रणनीति नहीं, बल्कि क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को अपने पक्ष में निर्णायक रूप से मोड़ने का प्रयास भी है।

तेहरान पर हुए आक्रमण में केवल सर्वोच्च नेता ही नहीं, बल्कि कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारी और रणनीतिक सलाहकार भी मारे गए। ईरानी रक्षा प्रतिष्ठान के प्रमुख पदों पर बैठे अधिकारियों की मौत ने सत्ता-संरचना को झकझोर दिया है। इस रक्तपात ने ईरान के भीतर शोक और क्रोध दोनों को जन्म दिया है। कुछ स्थानों पर शासन-विरोधी स्वर भी सुनाई दिए, किंतु प्रतिशोध की भावना अधिक प्रबल दिखाई देती है। हालांकि, ईरान के पास सीधे सैन्य विकल्प सीमित हैं। खुले युद्ध का सामना अमरीकी और इजरायली बलों की आधुनिक तकनीक और व्यापक खुफिया निगरानी के सामने जोखिमपूर्ण और कठिन है। यही कारण है कि प्रतिशोधी रुख प्रायः प्रतीकात्मक, ड्रोन्स और मिसाइलों तक सीमित रह सकता है, बजाय पूर्ण सैन्य संघर्ष के। खाड़ी क्षेत्र के कई देशों में वायु-रक्षा प्रणालियां सक्रिय हैं। संयुक्त अरब अमीरात ने सैकड़ों प्रक्षेपास्त्रों को निष्क्रिय करने का दावा किया, यद्यपि कुछ ड्रोन लक्षित क्षेत्रों तक पहुंचे। बहरीन में स्थित अमरीकी नौसैनिक अड्डे के निकट विस्फोटों की पुष्टि हुई। ओमान के तट के पास तेल-टैंकर पर हमले की सूचना ने समुद्री व्यापार को अस्थिर कर दिया है। होर्मुज जलडमरूमध्य पुनः वैश्विक चिंता का केंद्र बन गया है। कई मुस्लिम देशों में शिया जनता ने प्रदर्शन किए हैं। खाड़ी देशों में अमरीकी राजनयिकों की आवाजाही सीमित कर दी गई है और अनेक स्थानों पर नागरिकों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है। स्पष्ट है कि यह संघर्ष केवल दो या तीन राष्ट्रों के बीच सीमित नहीं, बल्कि व्यापक धार्मिक और राजनीतिक संवेदनाओं को उद्वेलित कर सकता है।

दूसरी ओर, निर्वासित नेता रजा पहलवी परिवर्तन का आह्वान कर रहे हैं। इस समूचे परिदृश्य में ट्रंप की कथित शांति-प्रिय छवि सबसे अधिक प्रश्नों के घेरे में है। ठीक उस समय जब जिनेवा में अमरीका और ईरान के प्रतिनिधि कूटनीतिक बातचीत की मेज पर बड़े समझौते की राह तलाश रहे थे, ठीक उसी समय संयुक्त सैन्य हमले का निर्णय लिया गया। यदि शांति का अर्थ केवल अपने सहयोगी की सुरक्षा और प्रतिद्वंद्वी की संप्रभुता की अवहेलना है, तो वह सामर्थ्य का चयनात्मक प्रयोग है। यह कहना सरल है कि यह कदम भविष्य के बड़े युद्ध को रोकने के लिए था, किंतु वर्तमान में फैलती हिंसा उस तर्क की सीमाएं उजागर कर रही है। जब कोई महाशक्ति यह निर्णय करती है कि किसे हटाया जाना चाहिए और किसे संरक्षित किया जाना चाहिए, तब वह अंतरराष्ट्रीय नियमों की परिभाषा स्वयं लिखती है। यह प्रसंग हमें एक असुविधाजनक निष्कर्ष की ओर ले जाता है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में न्याय की अंतिम व्याख्या आदर्शों से नहीं, सामर्थ्य से होती है। ट्रंप का यह कहना कि वे शांति चाहते हैं, उस समय विडंबना में बदल जाता है जब उनके नेतृत्व में लिया गया निर्णय युद्ध की सीमाओं में विस्तार कर देता है। इजरायल के साथ अमरीका का गठबंधन केवल रणनीतिक समीकरण नहीं, शक्ति की साझा समझ का प्रतीक है जहां नैतिकता की भाषा उपयोगी है, परंतु निर्णायक नहीं।

तेहरान का धुआं जल्द ही छंटेगा, पर यह स्मृति शेष रहेगी कि इस युग में निर्णय का केंद्र वही है जहां शक्ति संचित है। शांति के भाषण, कूटनीति की अपीलें और नैतिक तर्क - ये सब तब तक प्रभावी हैं जब तक उनके पीछे बल का समर्थन हो। अन्यथा वे इतिहास की हाशिए पर अंकित टिप्पणियां बनकर रह जाते हैं। जब शक्ति स्वयं को न्याय का पर्याय घोषित कर देती है, तब विश्व-व्यवस्था की दिशा वही निर्धारित करती है जिसके हाथ में सामर्थ्य का दंड है।

बुक इनसाइट

एवरी एग्जिट ब्रिंग्स यू होम

एवरी एग्जिट ब्रिंग्स यू होम उपन्यास समकालीन प्रवासी अनुभव और पहचान की जटिलताओं पर लिखी गई लेखक नईम मुर्र की एक गहरी और संवेदनशील रचना है। कहानी का केंद्र जैक है, जो असल में जमाल है, एक फिलिस्तीनी मूल का व्यक्ति, जो शिकागो में दोहरी जिंदगी जी रहा है। घर में वह एक समर्पित पति है, जो अपनी पत्नी के साथ संतान की उम्मीद में संघर्ष कर रहा है, जबकि काम पर वह अपनी पहचान को छिपाकर एक अलग व्यक्तित्व ओढ़ लेता है। आर्थिक मंदी, टूटती इमारत और तनावपूर्ण पड़ोस के बीच उसकी निजी उलझनें और गहरी हो जाती हैं। उपन्यास की सबसे बड़ी ताकत इसका भावनात्मक संतुलन है। लेखक ने घरेलू जीवन, प्रवासी असुरक्षा और गाजा की हिंसक स्मृतियों को बेहद सधे हुए ढंग से जोड़ा है। यह किताब किसी एक पक्ष का राजनीतिक बयान नहीं देती, बल्कि इंसानी पीड़ा, अपराधबोध और प्रेम की जटिलता को सामने लाती है। भाषा संवेदनशील है और कई दृश्य लंबे समय तक मन में रह जाते हैं।

व्यंग्य के रंग | कुछ दशक पूर्व 'हरबोला' लोकपात्र मशहूर होता था

फागुनी उमंग, हास्य और लोकजीवन की जीवंत परंपरा

होली आनंद और आह्लाद का त्योहार है। अंतस की इस खुशी का कारण फागुनी बयारों की संगत से अंतस में उपजी प्रेमिल अनुभूतियां भी हो सकती हैं और खेतों की नई उपज भी। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है और खेतों की नई फसल के दिन किसी भी कृषि प्रधान देश के लिए उत्सव का हैतुक होते हैं। जब आनंद को फागुनी अनुभूतियों का स्पर्श मिलता है तो उल्लास प्रतिबंधों के सब तटबंध तोड़कर उन्मुक्तता से बहना चाहता है। सामान्य तौर पर उच्छृंखलता प्रतीत होने वाला व्यवहार भी ऐसे अवसर पर सहज स्वीकार्य हो जाता है। होली एक ऐसा ही अवसर होता है, जब उल्लास उन्मुक्त होकर चेतन मन चिन्ता, भय, क्रोध या तनाव के सब तटबंध तोड़कर सहज हास्य के तौर पर जीवन में बहना चाहता है। होली से हास्य का संबंध कैसे जुड़ा, इस बारे में कोई शास्त्रीय जानकारी नहीं मिलती। वेदों में कहा गया है कि जब हम हंसते हैं तो हमारे साथ परमात्मा भी हंसता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में हंसी के तीस से अधिक भेद बताए गए हैं। विद्वानों ने हास्य को आंतरिक ऊर्जा का उद्वेलन माना है। यह सात्विक भी हो सकता है और तामसी भी। वेदों में सात्विक हास्य को देविक हास्य कहा गया है, जबकि जो हास्य किसी को आत्मिक या मानसिक पीड़ा पहुंचाने वाला होता है, उसे दानवीय हास्य बताया गया है। ऐसे में सवाल है कि क्या व्यंग्य को दानवीय हास्य माना जाएगा? भारतीय वांग्मय में हंसी के जो प्रकार बताए गए हैं, उनमें व्यंग्य भी शामिल है। जो हास्य विकृतियों से पनपता है और चुटीले तरीके से विसंगतियों और विकृतियों पर प्रहार करता है, वह व्यंग्य है। हालांकि व्यंग्य की धार प्रहारात्मक होती है, लेकिन उसे दानवीय इसलिए नहीं माना जाता क्योंकि वो बहुजन हिताय होता है। जो प्रवृत्तियां बुरी हैं, उन पर प्रहार करने में संकोच कैसा?

भारतीय लोक हास्य और व्यंग्य की इस ताकत को हमेशा सामुदायिक अभिव्यक्ति की ताकत बनाने का पक्षधर रहा है। इसलिए रामायण जैसी देवकथाओं के मंचन में भी विदूषक जैसे पात्रों के माध्यम से 'खड्ग सिंह के खड़कने से खड़कती हैं खिड़कियां/ खिड़कियों के खड़कने से खड़कता है खड्ग सिंह' जैसे संवाद बुलवाए जाते हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में हरबोला नामक एक लोकपात्र आज से कुछ दशक पहले लोकप्रिय होता था। हरबोला गांव के बाहर किसी सार्वजनिक स्थान पर आकर खड़ा होता और प्रभावशाली लोगों के व्यक्तित्व की कमजोरियों पर तुकबंदियां प्रस्तुत करता था। सब लोग इसका आनंद लेते थे। जहां तक कि वो व्यक्ति भी बुरा नहीं मानता था, जिसे व्यंग्य का विषय बनाया गया हो। हरबोला को सम्मान सहित गांव से विदा किया जाता था। भारतीय लोक हास्य और व्यंग्य के प्रति हमेशा सदाशय रहा है। होली और हास्य का संबंध इसलिए है कि होली हमें विकृतियों से दूर जाने की प्रेरणा देती है और हास्य-व्यंग्य भी अपनी चुलबुलाहट के साथ अंतस में यही प्रेरणा जागृत करता है।

जो जीवन को सकारात्मकता की तरफ जाने की प्रेरणा देता है और अंतस के समस्त विकारों को तिरोहित करके नए उल्लास को हृदय में सिंचित करता है, उस हास्य से अधिक वरेण्य जीवन में क्या हो सकता है। तभी तो होली पर व्यंग्य करके भी प्रेम से कहा जाता है- बुरा न मानो, होली है।

अतुल कनक
स्वतंत्र लेखक एवं स्तंभकार
@patrika.com

सीखें तीन महत्वपूर्ण बातें

प्रकृति, श्रम और संतुलन का उत्सव : वेदों की दृष्टि से होली

सूर्य प्रसाद सूरज बीरे

होली नई ऊर्जा, क्षमा और मिल-जुलकर आगे बढ़ने का संदेश देती है। वेदों में जो 31 विशेष होली संबंधी मंत्र मिलते हैं, वे हमें याद दिलाते हैं कि मनुष्य, प्रकृति और पूरा ब्रह्मांड, सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। वेद के ये 31 मंत्र हमें तीन बड़ी बातें सिखाते हैं। पहली, प्रकृति का सम्मान- धरती, बारिश, फसल, पेड़-पौधे, ये सब हमारे साथी हैं। दूसरी, मेहनत की पवित्रता-हल चलाना, बीज बोना, फसल काटना, जानवरों की देखभाल करना ये केवल काम नहीं, पूजा के बराबर हैं। तीसरी, जीवन का चक्र- सर्दी के बाद गर्मी, अंधेरे के बाद प्रकाश, दुख के बाद सुख हर चीज बदलती है।

विस्तार से पढ़ने के लिए **क्यूआर कोड स्कैन करें**

आओ हिल मिल खेलें फाग | यह व्यष्टि को समष्टि बनाने वाला अवसर

वसंत की उद्दाम मस्ती में नई शुरुआत का उत्सव

यह विश्वात्मा की एक से अनेक होने -एकोहं बहुस्याम्- की उद्दाम आकांक्षा ही थी, जो सृष्टि में सृजन का व्याज बनी। कहते हैं अन्य को रच कर विश्वात्मा ने उस रचना में स्वयं उपस्थित होकर उसे अनन्य बना दिया। आज भी दूसरों के साथ जुड़ाव जीवन के स्पंदन का आधार बना हुआ है। प्रगाढ़ रिश्तों की उदार विशालता से व्यक्ति, समुदाय और देश सकारात्मक रूप से सक्रिय होते हैं और उसके अभाव में बिखरकर टूट जाते हैं। इस सत्य को भारतीय समाज ने बहुत पहले ही आत्मसात् किया था और संगच्छध्वम् संवधध्वम् संवो मनांसि जानताम् का उद्घोष किया था। इस भाव को अपने जीवन में उतारने के लिए वर्षभर अनेक उत्सवों और पर्वों की संकल्पना की गई जिसमें व्यक्ति अपने सीमित स्व से ऊपर उठकर अपने को सबमें और सबको अपने में देखने की चेष्टा करता है। ऐसा करते हुए मनुष्य न केवल समाज बल्कि प्रकृति के साथ भी एकाकार होने की संभावना को तलाशता रहता है। इसी में आनंद मिलता है जो जीवन का प्रयोजन है। होली का उत्सव इसी लौकिक तलाश का एक मूर्त रूप है। होली वसंत में मनाई जाती है जब पूरी सृष्टि में एक साथ उल्लास के बीज का विस्फोट दिखता है। प्रसिद्ध है कि नया रमणीय होता है इसलिए सबके मन को भाता है। नए के लिए मन में उत्सुकता और उमंग होती है। अज्ञात और अनागत का आकर्षण वसंत के आगमन में चतुर्दिक दिखता है। उत्साह के साथ होली में एक किस्म का उन्माद का भाव आता है जब हम अपने को भुलाकर आनंद का अनुभव करते हैं। प्रकृति में परिवर्तन का संदेश राग और अनुराग के कोमल भावों को जीवित करता है। वह यही कहता है कि साल भर जिन सफलताओं और विफलताओं का मीठा कड़वा अनुभव करते रहे हैं उन सबसे आगे बढ़कर या परे जाकर जीवन क्रम के नाटक का नया अंक शुरू करें। होली का उत्सव पुराने का आतंक भूल नए चित्र कैनवास पर उकेरने की पुकार लगाता है।

भारत में ऋतुराज वसंत इस दृष्टि से अनोखा और समृद्ध होता है कि इसके आगमन के साथ ही ठंड को किनारे कर प्रकृति अपने सौंदर्य की ऊष्मा का सारा संचित खजाना लुटाने के लिए व्यग्र हो उठती है। वसंत के निजी दूत बने पशु-पक्षी गाकर, तरु, लता, गुल्म और पादप नव किसलय और पुष्प के साथ सज-धजकर बड़ी मुस्तैदी से इस मस्ती भरी असीम व्यग्रता का डंका बजाते हैं। नवलता वसंत में उमग पड़ती है- नवल कुसुम नव पल्लव साखा, कूजत नवल मधुर पिक कीर। वायुमंडल में भी बदलाव आता है और फागुन की मदमाती बयार हर किसी के चित्त को उन्मथित किए देती है। यह सब कमोबेश एक व्यवस्थित क्रम में काल चक्र की निश्चित गति से आयोजित होता है। कुल मिलाकर प्रकृति नटी इस बीच कोमल और आकर्षक नया परिधान धारण कर सजती है। खेतों और बाग-बगीचों में विभिन्न रंगों की अद्भुत चित्रकारी देखते बनती है। बिना किसी व्यतिक्रम के एक सहज स्वाभाविक संगति में ये विविधता भरा जादुई परिवर्तन एक नया आकर्षक और उत्साहवर्धक परिदृश्य रच देता है ।

संक्रामक वसंत सार्वभौमिक-सा है कुछ उसी तरह जैसे जीवन-विस्तार में यौवन की अवस्था स्वाभाविक रूप से आती है। इसी समय बुलबुल और कोयल की मीठी बोली भी आमंत्रण देती है। वसंत की दस्तक के साथ आंतरिक और बाह्य अस्तित्व में बदलाव की शृंखला शुरू होती है। ऊधमी वसंत के साथ झांझ, मृदंग, ढोल और मंजीरा के साथ फाग की उमंग अनूठी होती है। वसंतोत्सव सालभर मनाए जाने वाले विभिन्न उत्सवों का सिरमौर है। कहते हैं काम का सेनापति है वसंत। आता है और थोड़े समय में ही ओझल हो जाता है। यह सचमुच में एक लोक उत्सव है- लोक यानी वह जगत, जिसमें सभी शामिल होते हैं। मनुष्य और प्रकृति सभी इस लोक के अंश और भागीदार होते हैं। वृक्ष और जंगल सृष्टि के नएपन के संकल्प को जीवित रखते हैं। होली के साथ ही भारतीय नया वर्ष और संवत्सर का आरंभ भी होता है। यह जीवन के नए ऋतुचक्र की शुरुआत होती है । फागुन के बाद चैत के महीने में आम के बौर में कैरियां आती हैं मानों उत्कंठा के बाद तृप्ति का आस्वाद आता है। प्रिय पास न हों तो यह वसंत बड़ा दुःख देता है, मन बिलखता छटपटाता है। साहित्य की चेतना में दर्द, आकुलता, विरह, प्रेमातिशय, उन्माद और माधुर्य की प्रखर अनुभूतियों के साथ वासंती कविताएं रची गई हैं। फाग और मधुर चैती के गीतों में साथ ले चलने की पुकार तीव्र होती है। ब्रज क्षेत्र में वृंदावन और बरसाने की होली का सौंदर्य गौर वर्ण की श्रीराधा और श्याम वर्ण घनश्याम श्रीकृष्ण की स्मृति और अनुभूति से सराबोर होता है। यहां के लोकगीतों में यह सहज अभिव्यक्ति कुछ इस तरह जीवंत होती है-

आज बिरज में होरी रे रसिया।
इत ते आए कुंअर कन्हैया, उत ते राधा गोरी रे रसिया।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया।
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।
उड़त गुलाल लाल भए बादल, मारत भर भर झोरी रे सखिया।
अबीर गुलाल के बादल छाए, धूम मचाई रे सब मिल सखिया।
चंद्रसखी भज बाल कृष्ण छवि, चीर जीवो यह जोड़ी रे रसिया।

होली की पिछली रात होलिका दहन होता है और सम्मत जलाई जाती है। जो घट चुका उससे आगे बढ़ने का साहस देता नया संवत्सर आरम्भ होता है। होली सामूहिक उल्लास की ताजगी के साथ व्यष्टि को समष्टि बनाने वाला अवसर है। इस सांस्कृतिक आयोजन पर बाजार हावी होता जा रहा है। होली उद्घोष करती है कि वास्तविक आनंद दूसरे को सुखी करने में ही होता है।

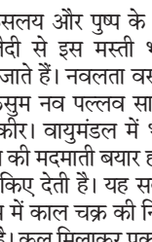

गिरीश्वर मिश्र
पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा
@patrika.com

नेतृत्व

त्याग की नैतिकता और नवसृजन का साहस

भारतीय परंपरा में होलिका दहन केवल असत्य पर सत्य की विजय का उत्सव नहीं है, यह एक गहन आंतरिक प्रक्रिया का प्रतीक है। यहां अग्नि दंड नहीं शुद्धि की शक्ति है और उन आवरणों को भस्म करती है जो जीवन और समाज की स्वाभाविक वृद्धि को रोकते हैं। नेतृत्व के संदर्भ में यह त्योहार हमें एक विरल किंतु अत्यंत आवश्यक पाठ सिखाता है कि कभी-कभी आगे बढ़ने के लिए त्याग करना पड़ता है। जो लीडर त्याग की नैतिकता को समझता है, वही वास्तविक नवसृजन का मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रो. हिमांशु राय
निदेशक, आइआइएम इंदौर
@patrika.com

■ **अहं का करें दहन:** नेतृत्व की सबसे बड़ी बाधा बाहरी विरोध नहीं, आंतरिक अहं होता है। पद, उपलब्धियां और प्रशंसा धीरे-धीरे एक ऐसी पहचान बना देते हैं जो परिवर्तन को अस्वीकार करती है। होलिका दहन हमें स्मरण कराता है कि जो स्वयं को बचाने में लगा रहता है, वह संगठन को आगे नहीं ले जा सकता। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि कर्ता का त्याग ही योग है। जब लीडर अपनी छवि के मोह से मुक्त होता है, तभी वह ऐसे निर्णय ले पाता है जो व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के नहीं, सामूहिक कल्याण के लिए होते हैं। अहं का यह दहन नेतृत्व को अधिकार से सेवा की ओर ले जाता है।

■ **पुरानी सफलताओं का विसर्जन:** अनेक संस्थाएं विफलता से नहीं, अपनी पुरानी सफलताओं से जकड़ जाती हैं। होलिका की अग्नि हमें यह सिखाती है कि अतीत की उपलब्धियों को सम्मान के साथ विदा देना भी उतना ही आवश्यक है जितना नई संभावनाओं का स्वागत करना। नेतृत्व का धर्म यह नहीं कि वह हर पुरानी व्यवस्था को बचाए रखे, बल्कि यह कि वह पहचान सके कि कौन-सी संरचना अब प्रगति में बाधा बन रही है। जो लीडर समय पर त्याग कर सकता है, वही संस्था को भविष्य के लिए तैयार करता है।

■ **विषाक्त मापदंडों का परित्याग:** आज की संस्थागत दुनिया में सफलता को प्रायः केवल संख्याओं, पदों और दृश्य उपलब्धियों से मापा जाता है। यह दृष्टि धीरे-धीरे संस्कृति को प्रतिस्पर्धी, भयग्रस्त और मानवीय संवेदना से रिक्त बना देती है। होलिका दहन इस बात का प्रतीक है कि विकास के लिए उन मापदंडों को भी छोड़ना पड़ता है जो बाहर से आकर्षक दिखते हैं, पर भीतर से संगठन को खोखला कर देते हैं। एक लीडर जब केवल परिणाम नहीं, प्रक्रिया की शुचिता, संबंधों की गुणवत्ता और सामूहिक विकास को महत्व देता है, तब संस्था में विश्वास का वातावरण बनता है। यह त्याग ही दीर्घकालीन स्थिरता का आधार बनता है।

■ **सृजनात्मकता व विश्वास:** होलिका दहन के अगले दिन रंगों का उत्सव होता है। यह बताता है कि शुद्धि के बिना उत्सव संभव नहीं। जब अनावश्यक का दहन होता है, तभी नवीन ऊर्जा के लिए स्थान बनता है। नेतृत्व में भी यह सत्य है कि जो लीडर पुराने भय, विफलताओं और जड़ संरचनाओं को त्याग देता है, वही संगठन में सृजनात्मकता, विश्वास और सहयोग के रंग भर सकता है।

लोक-रंग | यह पर्व सामूहिक एकता और सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक माना जाता है

उल्लास और वीरता का संगम : आदिवासी संस्कृति में होली का त्योहार

गोपेन्द्र नाथ भट्ट
स्वतंत्र लेखक एवं राजस्थान विधानसभाध्यक्ष के सलाहकार
@patrika.com

दक्षिणी राजस्थान के बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सलूम्बर, प्रतापगढ़ और उदयपुर जिलों के आदिवासी अंचल में फाल्गुन मास की पूर्णिमा के साथ ही ढोल-मांदल की थाप गूंजने लगती है और गांव-गांव में पारंपरिक 'गैर' नृत्य की धूम मच जाती है। भील, गरासिया, डामोर और अन्य आदिवासी समुदायों के लिए गैर नृत्य होली का अभिन्न अंग है, जो पीढ़ियों से उनकी लोक संस्कृति को संजोए हुए है। होली का पर्व केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि परंपरा, सामूहिक एकता और सांस्कृतिक अस्मिता का जीवंत प्रतीक है।

गैर नृत्य मूलतः एक सामूहिक लोकनृत्य है, जिसमें पुरुष गोल घेरे में लयबद्ध तरीके से नृत्य करते हैं। हालांकि अब कई स्थानों पर महिलाएं भी इसमें उत्साहपूर्वक भाग लेने लगी हैं। नर्तक रंग-बिरंगी पगड़ियां, सफेद या केसरिया धोती, कमर पर फेंटा और पारंपरिक आभूषण धारण करते हैं। उनके हाथों में लकड़ी की छड़ियां या डंडे होते हैं, जिन्हें वे ताल के साथ आपस में टकराते हैं। डंडों की यह टकराहट और पैरों की सामूहिक थाप एक अनूठा दृश्य प्रस्तुत करती है, जिसमें वीरता और उत्साह का समावेश दिखाई देता है। गैर नृत्य की शुरुआत प्रायः होलिका दहन के बाद होती है। जैसे ही अग्नि की लपटें आकाश को छूती हैं, गांव के चौक या खुले मैदान में युवक-युवतियां इकट्ठा हो जाते हैं। मांदल, ढोल, नगाड़ा और थाली जैसे वाद्य यंत्रों की गूंज के बीच नृत्य प्रारंभ होता है। प्रारंभ में लय धीमी होती है, किंतु धीरे-धीरे ताल तेज हो जाती है और पूरा वातावरण उल्लास से भर उठता है। नर्तक गोल घेरे में घूमते हुए कदम मिलाते हैं और गीतों के माध्यम से प्रकृति, प्रेम, वीरता तथा सामाजिक जीवन के प्रसंगों को अभिव्यक्त करते हैं। दक्षिणी राजस्थान के वागड़ अंचल की गैर विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहां के गैर में आदिवासी जीवन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। गैर नृत्य में वीरता का भाव भी प्रमुखता से उभरता है। डंडों की लयबद्ध टकराहट युद्धाभ्यास की स्मृति दिलाती है। माना जाता है कि प्राचीन काल में यह नृत्य युवाओं को संगठित करने और उनमें साहस का संचार करने का माध्यम था। यह सांस्कृतिक उत्सव में परिवर्तित हो गया, किंतु इसकी मूल भावना आज भी कायम है।

पत्थरों की होली: वांगड़ अंचल के डूंगरपुर जिले का भीलुड़ा गांव अपनी अनूठी परंपरा 'पत्थरों की होली' के लिए प्रसिद्ध है। यह परंपरा सदियों पुरानी मानी जाती है और हर वर्ष होली के अवसर पर यहां एक ऐसा दृश्य देखने को मिलता है, जो रोमांच, साहस और आस्था का अद्भुत मिश्रण होता है। रंगों की होली से एक दिन पहले या धुलंडी के अवसर पर गांव के लोग दो दलों में बंट जाते हैं। गांव के बीच स्थित किसी ऐतिहासिक स्थल, मंदिर या चबूतरे के आसपास दोनों पक्ष आमने-सामने खड़े होकर एक-दूसरे पर पत्थर फेंकते हैं। यह परंपरा सुनने में भले ही खतरनाक लगे, लेकिन स्थानीय लोग इसे उत्सव और वीरता का प्रतीक मानते हैं। स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार यह परंपरा बुराई पर अच्छाई की विजय और गांव की रक्षा की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। कुछ लोग इसे पुराने समय में हुए किसी आपसी संघर्ष या वीरगाथा से जोड़ते हैं। आदिवासी समाज में इसे साहस, एकजुटता और परंपरागत रीति-रिवाजों के निर्वहन के रूप में देखा जाता है। यह परंपरा रोमांचक है, पर इससे चोट लगने की आशंका भी रहती है। पिछले कुछ वर्षों से प्रशासन और पुलिस की उपस्थिति में यह आयोजन कराया जाता है। भीलुड़ा की पत्थरों की होली केवल एक खेल या रोमांच नहीं, बल्कि स्थानीय संस्कृति, परंपरा और सामुदायिक एकता का प्रतीक है।

भास्कर इन्वेस्टिगेशन सांठगांठ कर 3.85 करोड़ का बीज छत्तीसगढ़ में खपाया गया

जो बीज छत्तीसगढ़ की जलवायु के अनुकूल नहीं, वही सप्लाई, जहां ऑफिस बताया वहां पर गैरेज

अमिताभ अरुण दुबे | रायपुर

छत्तीसगढ़ में उद्यानिकी विभाग में किसानों के लिए सब्जियों के मुफ्त बीज योजना में बड़ा फर्जीवाड़ा सामने आया है। जिसमें किसानों को ऐसे बीज दिए गए जो प्रदेश की जलवायु के अनुकूल नहीं थे। जबकि टेंडर की शर्त में बीज की ऐसी किस्म मांगी गई थी, जो केवल छत्तीसगढ़ की जलवायु के लिए अनुकूल हों। लेकिन इस शर्त का सीधा उल्लंघन हुआ। जानकारों के मुताबिक राजपत्र में राज्यवार बीज की किस्में उल्लेखित होती हैं। जलवायु के अनुकूल बीज का निर्धारण किया जाता है। जेम पोर्टल के जरिए विभिन्न जिलों में करीब 3.85 करोड़ रुपए के भिंडी, करेला और लौकी के बीज एक ही फर्म से खरीदे गए। भास्कर इन्वेस्टिगेशन टीम ने जब इससे जुड़े दस्तावेजों की जांच की तो बड़ी गड़बड़ी सामने आई।

पड़ताल में पता चला कि किसानों को करेले के बीज की हाइब्रिड किस्म एचकेएच-56 की सप्लाई की गई। जो कि केवल हरियाणा राज्य के लिए विकसित की गई। इसी तरह लौकी की अनुराग किस्म केवल पंजाब, यूपी, बिहार और झारखंड की जलवायु के अनुकूल ही है। वो यहां दे दिया गया। इसी तरह, भिंडी की जिस किस्म गुजरात ओकरा 2 का बीज खरीदी हुई। वो भी भारत के राजपत्र में दर्ज ही नहीं है।

भास्कर ग्राउंड रिपोर्ट ऑफिस की जगह ट्रांसपोर्ट का कारोबार

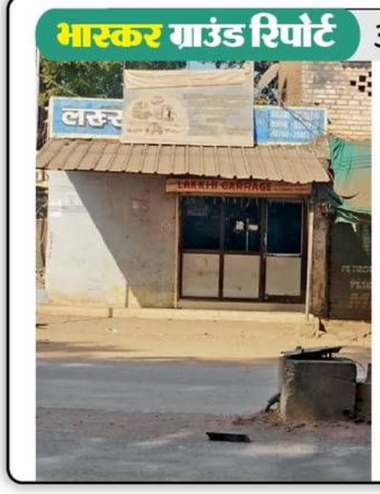

दस्तावेजों की बारीकी से पड़ताल में पता चलता है कि बीज सप्लाई के लिए जो शर्तें तय की गई थी। उसमें सबसे अहम थी कि सप्लायर फर्म का दफ्तर छत्तीसगढ़ में होना चाहिए। जिलों में करोड़ों के बीज सप्लाई करने वाली फर्म किसान एग्रोटेक ने जीएसटी और उद्यम रजिस्ट्रेशन के दस्तावेजों में अपना पता लकी गैरेज दुर्ग धमधा रोड का पता दिया है। भास्कर टीम जब यहां पहुंची तो यहां किसान एग्रोटेक का कोई दफ्तर ही नहीं मिला। यही नहीं यहां लकी गैरेज की बिल्डिंग में ट्रांसपोर्ट का काम चलता हुआ दिखाई दिया। भास्कर टीम ने धमधा रोड पर करीब 15 किलोमीटर तक किसान एग्रोटेक का दफ्तर खोजा लेकिन वो मिला ही नहीं। जाहिर है कि फर्जी पते, अधूरे दस्तावेज के जरिए इस पूरे खेल को अंजाम दिया गया।

तीन फर्मों ने की ऐसी सांठगांठ

टेंडर प्रक्रिया में भाग लेने वाली एक अन्य फर्म जिंदल क्रॉप साइंस ने लाइसेंस में केयर ऑफ के तौर पर किसान एग्रोटेक का पता बताया है। जिन किस्मों की सप्लाई की गई, उसके लिए फर्म के पास कोई वैध अनुमति या लाइसेंस ही नहीं है। जेम पोर्टल पर जारी किए सभी टेंडर में केवल तीन ही फर्मों किसान एग्रोटेक, जिंदल क्रॉप साइंस और कृषि बेस्ट सीड्स ने ही हिस्सा लिया। आरटीआई के दस्तावेज में किसान एग्रोटेक के साथ-साथ मेसर्स कृषि बेस्ट सीड्स (जिसका हिमाचल प्रदेश और महाराष्ट्र का पता है) के बीच को-मार्केटिंग अनुबंध है।

तथ्यों से जानिए ऐसे हुआ घोटाला

भास्कर की पड़ताल में पता चला है कि राष्ट्रीय बागवानी मिशन 2024-25 के तहत अक्टूबर 2024 में प्रदेश के उद्यानिकी विभाग को बीज खरीदी के लिए करीब 54 करोड़ रुपए का भारीभरकम बजट की मंजूरी मिली। जिसके तहत मार्च 2025 में विभिन्न जिलों ने निविदा निकाली। अर्थात पांच महीने बाद सभी जिलों ने 9 से 12 मार्च के बीच एक साथ टेंडर निकाले। इसके बाद सभी जिलों में 20 से 24 मार्च के बीज तीनों की एक साथ बिड भी जारी कर दी गई। अर्थात केवल 10-14 दिन के भीतर ये पूरी प्रक्रिया भी गई।

अजब गजब गुत्थी

किसान एग्रोटेक का असली मालिक कौन?

किसान एग्रोटेक का असली मालिक कौन है? इसको लेकर भी अजब गुत्थी है। भास्कर के पास 27 जनवरी 2023 में प्रभारी सहायक संचालक महासमुंद द्वारा दर्ज एफआईआर की प्रति है। जिसमें किसान एग्रोटेक फर्म पर शेड नेट हाउस निर्माण में गड़बड़ी की शिकायत की गई है। इसमें फर्म के मालिक के तौर पर जिग्नेश पटेल के नाम एफआईआर की गई है।

जांच की जाएगी

बीज खरीदी का ये मामला हमारे संज्ञान में आया है। जिन जिलों में भिंडी, करेला और लौकी के बीज की सप्लाई हुई है। उन सभी जिलों से जानकारी मंगवाई गई है। जानकारी आने के बाद इसकी विस्तृत जांच कर विवेचना की जाएगी।

-लोकेश कुमार, आईएएस, संचालक, उद्यानिकी विभाग

विपक्ष के पास सदन में बोलने के लिए सिर्फ झूठः मुख्यमंत्री

चंडीगढ़ | पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महा अभियान के तहत रविवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली की अध्यक्षता में पंचकूला स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय पंचकमल में कार्यशाला हुई।

वहीं सीएम नायब सिंह सैनी ने कहा कि विपक्ष के पास सदन में बोलने के लिए सिर्फ झूठ है। विपक्ष के लोग सदा सदन की कार्यवाही में बाधा डालने का प्रयास करते रहते हैं। हमारे विधायक विपक्ष को जोरदार जवाब दे रहे हैं। तुष्टिकरण के चलते कांग्रेस ने वंदे मातरम को भी विवादों में घसीटने का काम किया। वंदे मातरम के डेढ़ सौ वर्ष केवल समय की गणना नहीं, बल्कि राष्ट्र के पुनर्जागरण, संघर्ष और स्वाभिमान की 150 वर्ष लंबी गाथा है।

युवकों ने बुजुर्ग को मारी गुल्ली, बेटे पर ईंट से हमला

लुधियाना | सुखदेव नगर में शनिवार रात मामूली विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। आरोप है कि खाली प्लॉट में रोजाना गुल्ली-डंडा खेलकर उत्पात मचाने वाले युवकों ने पहले बुजुर्ग को गुल्ली मार दी। विरोध करने पर उनके बेटे पर ईंटों और बैडमिंटन रैकेट से हमला कर दिया। घायल युवक की पहचान सरबजीत सिंह है। पीड़ित ने बताया कि शनिवार शाम पिता घर के बाहर चाय पी रहे थे। इसी दौरान खेलते समय गुल्ली आकर उन्हें लगी, जिससे वह घायल हो गए। जब सरबजीत युवकों को समझाने घर गया कि वे कहीं और खेलें और परिवार को परेशान न करें तो आरोपियों ने गाली-गलौज कर मारपीट की।

बुजुर्ग दंपती को दी गई बच्चों की हत्या की धमकी

आतंकी कनेक्शन बताकर 15 दिन डिजिटल अरेस्ट, 1.15 करोड़ ठगे

भास्कर संवाददाता | इंदौर

साइबर ठगों ने आतंकवाद के नाम पर दहशत फैलाकर 77 वर्षीय बुजुर्ग महिला और उनके पति को 15 दिन तक 'डिजिटल अरेस्ट' में रखा और 1.15 करोड़ रुपए ठग लिए। आरोपियों ने खुद को पुणे एटीएस मुख्यालय का अधिकारी 'चंद्रभान सिंह' बताया और कहा कि जम्मू के एचडीएफसी बैंक खाते में 70 लाख का संदिग्ध लेन-देन उनके नाम से हुआ है, जो आतंकवादी कनेक्शन से जुड़ा है। 15 नवंबर को आए वीडियो कॉल में आरोपी खाकी वर्दी में दिखा। उसने पुलवामा, पहलगाम हमले और अन्य गंभीर अपराधों का हवाला देते हुए कहा कि 'आतंकवादी अफजल खान' ने उनका नाम लिया है। मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तारी की धमकी दी गई। अगले चरण में दूसरे आरोपी ने बच्चों की हत्या की धमकी दी। डर के कारण दंपती ने आधार, बैंक पासबुक और एफडी की जानकारी तक साझा कर दी। दंपती ने हाल ही में 82 लाख में जमीन बेची थी। ठगों ने एफडी तुड़वाने को कहा और रकम ट्रांसफर करवा ली। बैंक में पूछताछ होने पर 'बेटियों को पैसा भेज रहे हैं' कहने की सलाह भी दी। 1 दिसंबर को दामाद को जानकारी दी, फिर क्राइम ब्रांच पहुंचे। हीरानगर पुलिस ने अज्ञात मोबाइल नंबरों व बैंक खाताधारकों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

3 साल में 96 केस	वर्ष	केस
	2024	70
	2025	20
	2026*	6

भास्कर नॉलेज

ऐसे बचे इस ठगी से

- एजेंसियां (एटीएस, सीबीआई, ईडी, पुलिस) वीडियो कॉल पर पूछताछ या गिरफ्तारी नहीं करती।
- किसी भी कॉल पर आधार, बैंक डिटेल, ओटीपी साझा न करें।
- डराने, गोपनीय रखने या तुरंत पैसे ट्रांसफर करने का दबाव बनाएं तो यह 100% धोखाधड़ी का संकेत है।
- वर्दी, आईडी कार्ड या ऑफिस दिखाना भी फर्जी हो सकता है।
- कॉल काटें और संबंधित एजेंसी से सत्यापन करें।

फंस गए तो क्या करें?

- राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 पर तुरंत कॉल करें।
- www.cybercrime.gov.in पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज करें।
- निकटतम थाने या साइबर सेल में तुरंत लिखित शिकायत दें।
- बैंक को तुरंत सूचित कर ट्रांजेक्शन होल्ड/फ्रीज कराने का प्रयास करें।

अंतरराष्ट्रीय बागवानी मंडी में आग; सिलेंडर फटने से 60 लेबर क्वार्टर जलकर राख

गन्नौर | चंडीगढ़-दिल्ली एनएच-44 पर स्थित निर्माणाधीन अंतरराष्ट्रीय फल-फूल एवं बागवानी मंडी में रविवार दोपहर अस्थायी लेबर क्वार्टरों में भीषण आग लग गई। आग में केबिननुमा करीब 60 क्वार्टर जल गए। इस दौरान क्वार्टर में रखा गैस सिलेंडर धमाके के साथ फट गया। गनीमत यह रही कि हादसे के वक्त श्रमिक साइट पर काम कर रहे थे। निर्माणाधीन अंतरराष्ट्रीय फल-फूल एवं बागवानी मंडी में श्रमिकों के लिए अस्थाई क्वार्टर बनाए हुए हैं।

रविवार दोपहर करीब डेढ़ बजे मंडी परिसर में बने अस्थायी आवासों से अचानक धुआं उठने लगा। जब तक लोग कुछ समझ पाते, आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। आग की लपटें और धुएं का काला गुबार दूर तक दिखाई दे रहा था। आग के बीच अचानक एक गैस सिलेंडर फटने से धमाका हुआ, जिसके बाद वहां मौजूद लोग जान बचाकर भागने लगे। सूचना मिलते ही गन्नौर और सोनीपत से दमकल की करीब 5 गाड़ियां मौके पर पहुंची। करीब 2 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका।

शॉर्ट सर्किट माना जा रहा शुरुआती कारण

शुरुआती जांच में आग लगने का कारण बिजली के शॉर्ट सर्किट को माना जा रहा है, हालांकि प्रशासन की ओर से असल कारणों की पुष्टि होना बाकी है। बताया जा रहा है कि एक-एक क्वार्टर में 4-5 श्रमिक रहते थे। निर्माण कार्य में जुटे अधिकारियों का कहना है कि नुकसान का आकलन किया जा रहा है।

सभी श्रमिक दूसरी जगह शिफ्ट

बड़ी थाना प्रभारी कुलदीप सिंह टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने भीड़ को आगजनी वाली जगह से दूर रखा। आग लगने से तीन सेट जल गए हैं। सभी श्रमिक सुरक्षित है और उन्हें रहने के लिए दूसरी जगह शिफ्ट किया जा रहा है।

भास्कर एक्सक्लूसिव 2026 में बिजली कटौती की शिकायतों के समाधान का समय बढ़ा

बिजली आपूर्ति में गुरुग्राम- नंबर 1 व हिसार, जींद के गांवों में रोजाना 19 घंटे सप्लाई की जा रही

अजय बहादुर | अम्बाला

बिजली निगम द्वारा प्रदेश में 23 से 24 घंटे बिजली आपूर्ति का दावा किया जाता है। अप्रैल-2025 से फरवरी-2026 तक आंकड़े बताते हैं शहरी क्षेत्रों को 23:30 से 23:55 घंटे तक बिजली मिल रही है। जब शहरों, गांवों की तुलना करते हैं तो शहरों में 23 से 24 घंटे सप्लाई है, वहीं कई गांवों में आपूर्ति 18 से 21 घंटे के बीच सीमित है। हिसार, फतेहाबाद, जींद के ग्रामीण क्षेत्रों में सप्लाई महज 19 घंटे के आसपास सीमित है। बेहतर प्रदर्शन के मामले में गुरुग्राम-1, रेवाड़ी व पंचकूला मॉडल सबसे संतुलित हैं। यहां ग्रामीण व शहरी सप्लाई लगभग बराबर है।

पड़ताल में सामने आया कि 2025 की अपेक्षा 2026 में बिजली कटौती की शिकायतों के निस्तारण का समय बढ़ गया है। 2019 में शिकायत समाधान बहुत धीमा था, 2020-22 में सुधार हुआ। अब 2023-2026 में फिर समय बढ़ा है। 2025 में जहां बिजली कटौती को लेकर यूएचबीवीएन व डीएचबीवीएन दोनों निगमों को करीब 37.42 लाख शिकायतें मिलीं, शिकायतों के निपटान का औसत समय 1:49 घंटे रहा। 2026 में 2.58 लाख शिकायतें आईं, निपटान का समय बढ़कर 3:32 घंटे तक पहुंच गया है। 2026 यूएचबीवीएन को 1.36 लाख शिकायतें मिलीं, निपटान का औसत समय 3:32 घंटे रहा, वहीं डीएचबीवीएन को 1.21 शिकायतें मिलीं, निस्तारण का समय 2:49 घंटे रहा।

आपूर्ति में यहां है 3-5 घंटे तक का अंतर

जिला	शहरी	ग्रामीण	अंतर
हिसार	23:49	18:47	5:00 घंटे
फतेहाबाद	23:16	18:48	4:30 घंटे
जींद	23:16	18:53	4:20 घंटे
भिवानी	23:28	19:18	4:10 घंटे
नारनौल	23:25	19:17	4:00 घंटे
पलवल	23:13	19:23	3:50 घंटे
रोहतक	23:33	20:28	3.05 घंटे
झज्जर	23:28	20:42	2:45 घंटे

बेहतर प्रदर्शन वाले क्षेत्र

गुरुग्राम-1 में शहरी सप्लाई 23:37 घंटे, ग्रामीण आपूर्ति 23:21 घंटे रही। रेवाड़ी में शहरी आपूर्ति 23:31 घंटे, ग्रामीण आपूर्ति 23:18 घंटे है। गुरुग्राम-2 में शहरी आपूर्ति 23:50 घंटे, ग्रामीण आपूर्ति 22:52 घंटे है। पंचकूला में शहरी आपूर्ति 23:47 घंटे तो ग्रामीण आपूर्ति 23:03 घंटे का है।

हिसार में शहरी आपूर्ति 23:54 घंटे, ग्रमीण 19:21 घंटे तक सिमटी

हिसार में शहरी क्षेत्रों में 23:54 घंटे की आपूर्ति मिल रही है, वहीं यह अंतर घटकर ग्रामीणों क्षेत्रों में 19:21 घंटे तक सिमट रहा है। यानी अंतर 4:33 घंटे का है। फतेहाबाद में शहरी आपूर्ति 23:21 घंटे है, ग्रामीण आपूर्ति 19:09 घंटे है। जींद में शहरी आपूर्ति 23:30 घंटे है, जबकि ग्रामीण आपूर्ति घटकर 19:16 घंटे तक सिमट रही है।

यमुनानगर, कुरुक्षेत्र में शिकायतों के समाधान का समय बढ़ा

2025 में यमुनानगर में शिकायतों के निस्तारण का समय 1:17 घंटे था, 2026 में बढ़कर 5:54 घंटे हो गया। कुरुक्षेत्र में 2025 में जहां 1:01 घंटे का समय लगता था, 2026 में समय बढ़कर 4:29 घंटे का हो गया है। पानीपत और रोहतक में यूएचबीवीएन के तहत सबसे ज्यादा बिजली कटौती की शिकायतें दर्ज की गई हैं। पानीपत में वर्ष 2025 में 4.04 लाख शिकायतें आईं, निस्तारण का औसत समय 1:44 घंटे रहा। 2026 में 24,411 शिकायतें मिलीं, निस्तारण समय बढ़कर 2:55 घंटे हो गया है। रोहतक में 2025 में 2.73 लाख शिकायतें मिलीं, निस्तारण समय 1:27 रहा। जबकि वर्ष 2026 में 15,840 शिकायतें प्राप्त हुई, लेकिन निस्तारण समय बढ़कर 2:50 घंटे हो गया है।

पंजाब में ₹10 लाख ड्रग मनी और पिस्टल लेकर तस्कर छोड़ा, एसआई समेत चार नामजद

ममदोट | नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई के बीच एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स की फिरोजपुर यूनिट में तैनात एसआई पर गंभीर आरोप लगने से पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। 10 लाख 50 हजार रुपए की ड्रग मनी और लाइसेंसी पिस्तौल बरामद करने के बावजूद कार्रवाई न करने के आरोप में एसआई बलकार सिंह सहित 4 लोगों पर मामला दर्ज किया गया है। यह मामला पंजाब पुलिस की एएनटीएफ शाखा से जुड़ा है। एएनटीएफ रेंज के एसपी गुरिंदरबीर सिंह पीपीएस ने कार्रवाई की पुष्टि की है। 24 फरवरी को एएनटीएफ टीम गश्त पर थी। सूचना मिली कि एक युवक नकदी लेकर 2 अज्ञात व्यक्तियों से हेरोइन लेने जा रहा है।

कनाडा में सेटलमेंट के नाम पर 60 लाख लेकर शादी की, पत्नी ने तोड़ दिया रिश्ता

रायकोट | विदेश में कारोबार स्थापित करने की चाह में रायकोट के युवक ने कनाडा में रहने वाली युवती से शादी की, लेकिन यह रिश्ता अब ठगी और ब्लैकमेलिंग के आरोपों में उलझ गया है। आरोप है कि शादी के महज 2 माह बाद युवती का व्यवहार बदल गया और युवती ने अतिरिक्त 10 लाख रुपए की मांग की। रकम देने से इनकार करने पर युवती और उसके परिवार ने युवक का संपर्क नंबर ब्लॉक कर दिया। युवक ने थाना सिटी रायकोट पुलिस को इस मामले की शिकायत दी।

शिक्षकों ने सरकार के खिलाफ खोला मोर्चा, 'आग्रह रैली' निकाली

धर्मशाला | नई परिसर प्रणाली (क्लस्टर सिस्टम) के खिलाफ राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ ने रविवार को जिला मुख्यालय धर्मशाला में जोरदार शक्ति प्रदर्शन किया। कांगड़ा के 23 खंडों के 352 केंद्रों से आए 3000 से अधिक प्राथमिक शिक्षकों, सेवानिवृत्त कर्मियों और जेबीटी प्रशिक्षुओं ने इस 'आग्रह रैली' में हिस्सा लेकर अपनी आवाज बुलंद की। सुबह साढ़े 11 बजे डीआईजी मैदान में शिक्षकों का हुजूम जुटना शुरू हुआ, जो दोपहर एक बजे रेडक्रास चौक से होता हुआ जिलाधीश कार्यालय तक पहुंचा। यहां शिक्षकों ने धरना देकर शिक्षा विभाग द्वारा 23 सितंबर 2025 को जारी अधिसूचना के प्रति अपना कड़ा रोष प्रकट किया। संघ के पदाधिकारियों का आरोप है कि नई प्रणाली के तहत प्राथमिक शिक्षा का पूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण और संचालन प्रिंसिपल को सौंप दिया है। शिक्षकों का तर्क है कि साल 1984 से प्राथमिक शिक्षा का अपना स्वतंत्र ढांचा और क्लस्टर प्रणाली सफलतापूर्वक काम कर रही है। प्रदर्शनकारियों ने सरकार से मांग की है कि 13 फरवरी 2024 की संशोधित अधिसूचना को ही यथावत रखा जाए और नई प्रणाली को केवल रिसोर्स शेयरिंग यानी संसाधनों को साझा करने तक ही सीमित रखा जाए। संघ ने नाराजगी जताते हुए कहा कि शिक्षा मंत्री से कई बार मुलाकात और उनके आश्वासन के बावजूद विभाग ने शिक्षकों के हितों के विपरीत यह अधिसूचना जारी की है।

टीकाकरण अभियान मातृशक्ति के लिए ऐतिहासिक कदम : जयराम

मंडी में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में पहुंचे नेता प्रतिपक्ष

मंडी| सराज विधानसभा क्षेत्र के तहत जंजैहली में रविवार को सेतु सोशल वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक विशाल निशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की जबकि उनकी धर्मपत्नी डॉ साधना ठाकुर भी विशेष रूप से उपस्थित रही।

जयराम ने सेतु सोशल वेलफेयर ट्रस्ट के प्रयासों की जमकर सराहना की और कहा कि दुर्गम क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाएं पहुंचाना अत्यंत पुण्य और काबिलेतारीफ कार्य है। उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि गांव के वे उम्रदराज लोग जो शारीरिक अक्षमता या संसाधनों के अभाव में बड़े अस्पतालों तक नहीं पहुंच पाते, उन्हें उनके घर-द्वार पर विशेषज्ञ डॉक्टरों की सेवाएं उपलब्ध करवाना समाज सेवा की पराकाष्ठा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में भी सेतु ट्रस्ट इसी प्रकार के सेवा कार्यों के माध्यम से मानवता की सेवा जारी रखेगा। उन्होंने कहा कि आपदा के दौरान भी गत वर्ष सेतु वेलफेयर ट्रस्ट ने बहुत सराहनीय सेवाएं थुनाग में दी थी। अपने संबोधन के दौरान जयराम ठाकुर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा शुरू किए गए राष्ट्रव्यापी सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण अभियान (एचपीवी) पर विशेष जोर देते हुए इसे महिला स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी और दूरदर्शी कदम बताया। उन्होंने माताओं और बहनों का आह्वान किया कि वे इस टीकाकरण अभियान के प्रति जागरूक हों और अपनी बेटियों को यह सुरक्षा कवच अवश्य दिलाएं। उन्होंने विश्वास जताया कि भारत आने वाले वर्षों में सर्वाइकल कैंसर के उन्मूलन की दिशा में वैश्विक मिसाल कायम करेगा। शिविर में 1300 लोगों ने स्वास्थ्य लाभ उठाया। शिविर में लोगों के हर प्रकार के लैब टेस्ट भी मौके पर हुए। ईसीजी, शुगर सहित कई अन्य टेस्ट मौके पर होने से स्थानीय लोगों को बहुत लाभ पहुंचा। जंजैहली के इस शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सकों की जिस टीम ने अपनी निशुल्क सेवाएं प्रदान कीं।

यमुनानगर के रहने वाले अशोक ने बताई अमेरिका-इजरायल के ईरान पर हमले की आंखों देखी

बहरीन में धमाकों से कांपीं इमारतें, पूरी रात नहीं सोया कोई, यह जीवन में नहीं भूल पाएंगे

बहरीन से अशोक शर्मा

यमुनानगर | अमेरिका-इजरायल के ईरान के हमले के बाद भी बहरीन में रहने वाले किसी नागरिक को यह उम्मीद नहीं थी कि उनकी शांति को कोई खतरा है, लेकिन शनिवार की रात हमने परिवार के साथ जो देखा और महसूस किया, वह जिंदगीभर नहीं भूल पाऊंगा।

मैं बहरीन के तुबली शहर में रहता हूं। शनिवार रात करीब साढ़े 10 बजे थे। हम रोज की तरह दिनभर की थकान के बाद सोने की तैयारी में थे। तभी अचानक एक जोरदार धमाका हुआ। ऐसा लगा जैसे आसमान फट गया हो, लेकिन कुछ ही मिनटों बाद दूसरा धमाका हुआ, फिर तीसरा और फिर जैसे सिलसिला शुरू हो गया। हर धमाका पिछले से ज्यादा तेज महसूस हो रहा था। उस पल समझ आ गया कि हालात सामान्य नहीं हैं। आसपास की कई इमारतों की लाइटें बंद थीं, लेकिन खिड़कियों और बाल्कनियों में हलचल साफ दिखाई दे रही थी। लोग घरों से बाहर निकल आए थे। कुछ लोग मोबाइल से वीडियो बना रहे थे, कुछ आसमान की ओर टकटकी लगाए देख रहे थे। दूर कहीं आसमान में हल्की चमक दिखाई दे रही थी, जैसे कोई विस्फोट हुआ हो। हर आवाज दिल की धड़कन को और तेज कर रही थी। हम ज्यादा देर बाहर नहीं रुके। तुरंत अंदर आकर दरवाजे बंद कर लिए और कमरे के एक सुरक्षित कोने में बैठ गए। बाहर का सन्नाटा अजीब था, वह शांति का नहीं, बल्कि डर का था। तभी मोबाइल की घंटी बजी, फिर एक और कॉल, फिर लगातार कॉल्स।

यमुनानगर से मेरे परिवार, रिश्तेदार, दोस्त हर कोई एक ही सवाल पूछ रहा था सब ठीक तो है ना। मैं उन्हें बार-बार यही कह रहा था कि हम सुरक्षित हैं, घबराने की जरूरत नहीं है, लेकिन सच कहूं तो अंदर ही अंदर मैं खुद भी डरा हुआ था। पत्नी की आंखों में भी वही चिंता साफ दिखाई दे रही थी, जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है। पूरी रात धमाकों की आवाज सुनाई देती रही। कभी दूर, कभी पास। कभी हल्की, तो कभी इतनी तेज। खिड़कियां हल्की-सी कांपतीं महसूस होतीं। नींद का तो सवाल ही नहीं था। हम बिस्तर पर लेटते जरूर, लेकिन कुछ मिनट बाद फिर उठकर बैठ जाते थे।

-जैसा कि भास्कर को बताया।

ऑफिस किए बंद, भारतीय वापसी के इंतजार में

ईरानी हमले के बाद एक टावर में लगी आग।

यहां रहने वाले भारतीय समुदाय में भी बेचैनी साफ महसूस हो रही है। कुछ लोगों ने फोन पर बताया कि वे बैग पैक कर तैयार बैठे हैं। जैसे ही एयर स्पेस खुलेगा वे भारत चले जाएंगे। कोई संभावित फ्लाइट्स की जानकारी साझा कर रहा है, तो कोई दूतावास से संपर्क करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उड़ानों की अनिश्चितता के कारण फिलहाल इंतजार ही एकमात्र विकल्प है। हम सभी स्थानीय प्रशासन के निर्देशों का पालन कर रहे हैं। परिवार से लगातार संपर्क में हैं।

भास्कर बिजनेस गाइड

नई दिल्ली, सोमवार 2 मार्च, 2026

भास्कर एनालिसिस ईरान युद्ध लंबा खिंचा तो 1990 जैसे हालात, सेंसेक्स में खुलते ही गिरावट की आशंका, जेब से लेकर पोर्टफोलियो तक दिखेगी आंच

युद्ध में गिरावट के बाद भी 6 हफ्तों में रिकवरी का ट्रेंड

भास्कर न्यूज | मुंबई

ईरान पर अमेरिका-इजराइल के हमले की आंच निवेश पोर्टफोलियो से लेकर शॉपिंग पर पड़ सकती है। विश्लेषकों का कहना है कि अगर ये तनाव लंबा खिंचा तो वैश्विक ऊर्जा और भारत की अर्थव्यवस्था के लिए जोखिमभरा हो सकता है। हॉर्मुज जलमार्ग बंद होने से तेल महंगा होने और व्यापारिक मार्ग बाधित होने से भारत के आयात बिल, महंगाई और रुपया, तीनों पर चोट पड़ सकती है। सोमवार को जब बाजार खुलेंगे, तो शुरुआत में बड़ी उठा-पटक तय मानी जा रही है। इक्विरस सिक्युरिटीज के मुताबिक, 5 दशकों में भू-राजनैतिक संकटों के दौरान कच्चे तेल की कीमतों में 25% से 300% तक उछाल देखी जा चुकी है। ऐसे वक्त में शुरुआती हफ्तों में सेंसेक्स 18% तक गिरा है, लेकिन रिकवरी औसतन 6 हफ्ते में हो जाती है और बाजार लगभग सामान्य स्थिति में आ जाते हैं।

ये खेल पुराना: 73 साल पहले भी अमेरिका ने ईरानी पीएम को हटवाया था, वजह थी अमेरिकी कंपनियों को नुकसान

जीटीआरआई के फाउंडर अजय श्रीवास्तव कहते हैं, 'जड़ें 1953 तक जाती हैं। तब अमेरिका ने ईरान के निर्वाचित प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसादेग को अपदस्थ करने में भूमिका निभाई थी। ईरान के तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण करना वजह बना था, जिससे अमेरिकी तेल कंपनियों को घाटा हो रहा था। इसके बाद शाह रजा पहलवी को सत्ता में बिठाया गया। 1979 की इस्लामिक क्रांति ने यह समीकरण फिर पलट दिया। खामेनेई के सत्ता में आने के बाद ईरान ने अमेरिका-इजराइल दोनों से संबंध तोड़ लिए। यानी हालात 1953 के पहले जैसे हो गए थे, जिससे अमेरिका और इजराइल हर हाल में बदलना चाहते थे।

बीते 3 दशक में 7 में से 6 युद्धों में शेयर बाजार एक वर्ष में रिकवर; क्रूड के भी दाम तेजी से घटते हैं

विशेषज्ञों के मुताबिक भू-राजनीतिक संकट में बाजार की पहली प्रतिक्रिया भावनात्मक होती है। घबराहट में की गई खरीद-बिक्री अक्सर नुकसानदेह रही है। सोने-चांदी में सट्टेबाजी से बचें क्योंकि एक्सचेंजों ने मार्जिन बढ़ा दिए हैं। सोमवार की गैप-डाउन ओपनिंग के बाद बाजार की दिशा तेल की कीमतों और होर्मुज की स्थिति पर निर्भर करेगी, यही अगले हफ्ते का सबसे बड़ा ट्रिगर होगा।

बाजार	खाड़ी युद्ध (1990-91)	यूक्रेन युद्ध (2022)
कच्चा तेल	▲112%	▲97%
सेंसेक्स	▼25-30%	▼17-18%
S&P 500	▼19-20%	▼10-11%
सोना	▲5%	▲14%

▪ एसएससीआई के विश्लेषण के अनुसार, बीते 30 वर्षों में 7 पहचाने गए संघर्षों में से 6 में बाजार 1 साल में रिकवर हुए। ▪ अधिकांश मध्य-पूर्व संकटों में शुरुआती तेल उछाल के बाद सप्लाई सामान्य होती है। शेयर बाजार टिकाऊ साबित होते हैं। खाड़ी युद्ध एकमात्र अपवाद रहा तेल लंबे समय तक महंगा रहा।

इकोनॉमिक इम्पैक्ट : महंगाई बढ़ सकती है, सरकारी घाटा बढ़ेगा और ब्याज दरों में कटौती थम सकती है

होर्मुज जलमार्ग: वह नस जिसे दबाने से दुनिया तड़पती है...

होर्मुज की खाड़ी दुनिया का सबसे संवेदनशील ऊर्जा गलियारा है। इक्रा के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट प्रशांत वशिष्ठ बताते हैं कि इस संकरे जलमार्ग से दुनिया के 20% पेट्रोलियम और इतनी ही एलएनजी का व्यापार गुजरता है। सऊदी अरब, इराक, कुवैत और यूएई जैसे बड़े पेट्रोलियम उत्पादकों की सप्लाई इसी रास्ते से जाती है। ईरान का वैश्विक तेल उत्पादन में सीधा हिस्सा भले ही करीब 2.5% हो, लेकिन उसकी भौगोलिक स्थिति उसे इस पूरे क्षेत्र की सप्लाई पर कंट्रोल देती है। ईरान ने हॉर्मुज से यातायात बंद कर दिया है। भारत के लिए यह सीधी चोट है। 2025 में भारत के 50% कच्चे तेल और 54% एलएनजी का आयात इसी मार्ग से हुआ था।

सेंसेक्स: खुलने के साथ ही 2% तक गिर सकता है, आईटी को मिलेगा सहारा: एसबीआई सिक्युरिटीज

- 2026 में अब तक सेंसेक्स और निफ्टी, दोनों करीब 4% गिर चुके हैं। इस कमजोर बेस पर ईरान का हमला नई चुनौती बनकर आया है।
- एसबीआई सिक्युरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट सुदीप शाह ने आशंका जताई कि सोमवार को सेंसेक्स-निफ्टी 1-2% गिरावट के साथ खुल सकते हैं।
- इन्फॉर्मेटिक्स रेटिंग्स के चीफ इकोनॉमिस्ट डॉ. मनोरंजन शर्मा ने भी कहा कि भारतीय बेंचमार्क सूचकांकों के कमजोर खुलने की आशंका है।
- कच्चे तेल के दाम यदि बढ़ते रहे तो शेयर बाजार 1-1.5% गिर सकता है। विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली से दबाव और गहरा हो सकता है।

ऑटोमोबाइल: ईंधन की ऊंची कीमतें वाहनों की बिक्री पर असर डालेंगी। पेट्रोल-डीजल के भाव चाहे तुरंत न बढ़ें, पर बढ़ने की आशंका बनी रहेगी। ऐसे में गाड़ी बदलने की योजना टाली जा सकती है।

एविएशन, लॉजिस्टिक्स, केमिकल: एनर्जी सेक्टर से सीधे-सीधे जुड़े इन उद्योगों का मार्जिन घटेगा। पेट्रो-केमिकल, डीजल और विमान ईंधन के दाम बढ़ने से इन शेयरों को लेकर सेंटीमेंट कमजोर होगा।

पेंट सेक्टर: महंगे कच्चे तेल से पेंट कंपनियों के प्रॉफिट मार्जिन में गिरावट आ सकती है। टाइटेनियम डाइऑक्साइड और बाइंडर्स जैसे कच्चे माल की लागत में तेल का हिस्सा 60% से अधिक होता है।

आईटी सर्विसेज: इस सेक्टर की कंपनियों को मजबूत डॉलर का फायदा मिल सकता है। रुपए की कमजोरी से निर्यात करने वाले सेक्टरों को कुछ सहारा मिलेगा। ओएनजीसी जैसी कच्चा तेल निकालने वाली कंपनियों को फायदा होगा।

सराफा: सोने में 19%, चांदी में 31% तक उछाल के आसार, तनाव घटा तो तेजी से घटेंगे दाम: केडिया

- जब दुनिया डरती है, सोना चमकता है। ईरान पर हमले की आशंका पहले से थी, लिहाजा अंतरराष्ट्रीय बाजार में शुक्रवार को सोना तो स्थिर रहा, लेकिन चांदी में 7.85% उछाल आया।
- एसएमसी ग्लोबल सिक्युरिटीज की एवीपी वंदना भारती का अनुमान है कि सोना 1.70 लाख और चांदी 3 लाख तक जा सकती है। सोने में फौरन 7% और चांदी में 12% उछाल आ सकता है।
- केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया और आगे देखते हैं। उनके मुताबिक भारतीय बाजार में सोने की कीमत 1.90 लाख (+19%) और चांदी की 3.5 लाख रुपए (+31%) तक पहुंच सकती है।

... पर जल्दबाजी में खरीदारी घाटे का सौदा हो सकता है

जल्दबाजी में खरीदारी घाटे का सौदा हो सकता है। वंदना ने चेताया कि शुरुआती उछाल सेंटीमेंटल होती है। जैसे तनाव कम होगा, बाजार वापस फंडामेंटल्स पर लौटेंगे।

1. महंगाई: महंगे तेल से ईंधन, ढुलाई और उत्पादन लागत बढ़ेगी। इससे रिटेल में महंगाई बढ़ सकती है। ऐसे में रिजर्व बैंक के लिए ब्याज दरों में और कटौती मुश्किल हो जाएगी।

2. सरकारी घाटा: भारत को तेल आयात के लिए ज्यादा डॉलर चुकाने होंगे। इक्रा के प्रशांत वशिष्ठ के अनुसार, बढ़ती ऊर्जा कीमतें आयात बिल तेजी से बढ़ाएंगी और ऑयल मार्केटिंग कंपनियों का मार्जिन घटेगा।

3. वित्तीय बोझ: अगर सरकार उपभोक्ताओं को राहत देने के लिए सब्सिडी बढ़ाती है, तो राजकोषीय घाटे पर बोझ आएगा। डॉ. मनोरंजन शर्मा के अनुसार, संघर्ष लंबा खिंचा तो विनिवेश का मूल्यांकन भी कम होगा।

आगे क्या

दो तरह के हालात बनने की संभावना

1. तनाव जल्द कम हुआ तो... जीटीआरआई और इक्रा दोनों, मानते हैं कि रूस-यूक्रेन युद्ध की तरह बाजार शुरुआती झटके के बाद स्थिर हो सकते हैं। हॉर्मुज खुला रहा और वैकल्पिक सप्लाई रूट काम किए, तो भारत के लिए असर सीमित और अस्थायी रहेगा। सभी बाजारों में हालात जल्द सामान्य हो जाएंगे।

2. लंबा खिंचा तो... जीटीआरआई के मुताबिक, ईरान का राजनैतिक ढांचा, इस्लामी धार्मिक वर्ग, सेना और राष्ट्रवाद फौरन सत्ता परिवर्तन को मुश्किल बनाते हैं। खामेनेई की हत्या उन्हें शहीद बना सकती है और कट्टरपंथियों को मजबूत कर सकती है। ऐसे में भारत के लिए यह संकट संरचनात्मक हो जाएगा। 2025 में भारत ने ईरान को 11 हजार करोड़ का निर्यात और 3,716 करोड़ रुपए का आयात किया था, जो अब खतरे में है। तेल की कमी से माल ढुलाई, बीमा प्रीमियम और ईंधन की कीमतें बढ़ेंगी, जिससे महंगाई बेलगाम हो सकती है। चीन, जापान और द. कोरिया जैसी अर्थव्यवस्थाएं भी बुरी तरह प्रभावित होंगी।

फंड का फंडा

थीमैटिक फंड: भरोसे वाले सेक्टर में निवेश

मुंबई | इक्विटी स्कीम्स में सेक्टोरल/थीमैटिक फंड काफी लोकप्रिय हैं। इनमें निवेश किसी विशेष सेक्टर (जैसे आईटी या फार्मा), थीम मसलन डिजिटल इंडिया या ई-कॉमर्स या खास इकोनॉमिक ट्रेंड तक सीमित रहता है। जो निवेशक किसी खास सेक्टर की भविष्य की ग्रोथ को लेकर उत्साहित हैं, उनके लिए यह फोकस्ड इन्वेस्टमेंट का सबसे प्रभावी तरीका है। इसमें फंड मैनेजर का पूरा ध्यान केवल उन्हीं चुनिंदा कंपनियों पर होता है जो उस थीम को लीड कर रही होती हैं। पर इसमें डाइवर्सिफिकेशन सामान्य फंड्स के मुकाबले थोड़ा कम होता है, लेकिन सही समय पर सही थीम चुनने पर ये फंड बाजार से कहीं अधिक रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं। मुख्य सूचकांक से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए अनुभवी निवेशक अपने पोर्टफोलियो में इन फंड्स का उपयोग एक स्मार्ट टूल की तरह करते हैं। हालांकि, इसमें जोखिम अन्य फंड्स के मुकाबले अधिक होते हैं क्योंकि चुनी गई थीम/सेक्टर के बाजार में फेल होने पर पोर्टफोलियो को संभालना मुश्किल हो जाता है।

3 वर्ष में सालाना 44% तक रिटर्न

सेक्टोरल/थीमैटिक फंड	रिटर्न
निप्पॉन इंडिया ताइवान	43.7%
एसबीआई पीएसयू	36.0%
इन्वेस्को इंडिया पीएसयू	32.4%
आ.बि.सन लाइफ पीएसयू	32.4%
ICICI प्रू. पीएसयू	30.7%

निवेश के 5 बड़े फायदे ये..

अतिरिक्त मुनाफा: इंडेक्स से ज्यादा रिटर्न।
टारगेटेड निवेश: खास सेक्टर में एंट्री।
एक्सपर्ट मैनेजमेंट: प्रोफेशनल रिसर्च का लाभ।
बेहतर डाइवर्सिफिकेशन: पोर्टफोलियो विविधता।
सेक्टर रोटेशन: चक्रीय तेजी का फायदा।

इन्वेस्टमेंट ट्रेंड्स सेबी ने बंद कीं पुरानी रिटायरमेंट स्कीम्स, अब लाइफ साइकिल फंड आएंगे

तीन साल में एनपीएस फंड दोगुना होकर 10 लाख करोड़, निवेशकों की औसत उम्र 10 साल कम हुई

कृष्ण मोहन तिवारी | मुंबई

आखिर भारत में एनपीएस, अन्य रिटायरमेंट स्कीम्स में निवेश क्यों बढ़ रहा है?

भारत में अब लोग रिटायर होने के बाद का जीवन बेहतर बनाने के लिए निवेश बढ़ा रहे हैं। मार्केट-लिंक्ड एनपीएस और इक्विटी प्रोडक्ट में दिलचस्पी बढ़ रही है। सिस्टमैटिक्स ग्रुप के चीफ इन्वेस्टमेंट ऑफिसर (सीआईओ) विजय सारदा कहते हैं कि एनपीएस फंड को 5 लाख करोड़ पहुंचने में 11 साल लगे, लेकिन वहां से 10 लाख करोड़ का सफर तय करने में तीन साल ही लगे। वित्त वर्ष 2025 में, एनपीएस ने 12 लाख नए निजी क्षेत्र के ग्राहकों को जोड़ा। इससे मार्च 2025 तक कुल संख्या करीब 1.65 करोड़ हो गई।

वे कहते हैं कि 5 वर्षों में म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री ने 3 गुना वृद्धि देखी, लेकिन रिटायरमेंट जैसे विशिष्ट साधनों की रफ्तार इससे भी तेज रही, जो इस श्रेणी में एक बड़े संरचनात्मक बदलाव की पुष्टि करता है। पीएफआरडीए का डेटा दिखाता है कि हाल के एनपीएस ग्राहकों में 26-35 आयु वर्ग का हिस्सा 33% है, जो सबसे तेजी से बढ़ने वाला समूह है। फिर भी, सबसे बड़े निवेश और उच्चतम एसआईपी 38-48 आयु वर्ग से आती हैं। ये वे व्यक्ति हैं जिन्होंने महामारी के बाद खुद को तेजी से बदला है।

इनक्रेड मनी के सीईओ नितिन अग्रवाल कहते हैं कि इस पूरे स्ट्रक्चरल बदलाव के पीछे कई शक्तियां एक साथ काम कर रही हैं। यूपीआई से जुड़ी वित्तीय पहचान ने लाखों स्वरोजगार और 'गिग वर्कर' (अस्थायी कर्मचारी) को पहली बार औपचारिक वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में शामिल किया है। इनके पास नियोक्ता द्वारा प्रायोजित पेंशन का कोई सुरक्षा कवच नहीं है, ऐसे में मार्केट लिंक्ड प्रोडक्ट ही उनका सहारा बन गए हैं। नवी एएमसी के सीईओ आदित्य मुल्की कहते हैं कि हम बहुत से माता-पिता अपने बच्चों के नाम पर निवेश करते हुए भी देख रहे हैं। जनवरी 2021 में चिल्ड्रन्स फंड्स का औसत एयूएम 10,484 करोड़ रुपए था, जबकि जनवरी 2026 में यह 25,380 करोड़ रुपए पहुंच गई थी। यह बदलाव अगले 15-20 वर्षों तक बचत और निवेश के क्षेत्र में एक मुख्य चालक बना रहेगा, जो अब छोटे शहरों तक भी पहुंच रहा है।

बढ़ती जीवन प्रत्याशा से ट्रिगर

सारदा कहते हैं कि जीवन प्रत्याशा 1990 के 58 वर्ष से बढ़कर 70.8 हो गई है। 30 साल के व्यक्ति के 85-90 वर्ष तक जीवित रहने की वास्तविक संभावना है। रिटायरमेंट के बाद के 25-30 वर्षों के जीवन का खर्च उठाना एक ऐसी चुनौती है जिसे कोई भी एफडी की दर पूरा नहीं कर सकती।

मेडिकल महंगाई 14% बढ़ रही

भारत में 60+ उम्र के 14 करोड़ लोग हैं; 2050 तक यह संख्या 34.7 करोड़ होगी। चिकित्सा महंगाई सालाना 14% पर है, जो 'एको इंडिया हेल्थ इंश्योरेंस इंडेक्स 2024' के अनुसार एशिया में सबसे अधिक है। 2024 में स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम में 20% की वृद्धि।

संयुक्त परिवार कम हो रहे

भारत में औसत परिवार का आकार 1991 में 5.5 सदस्य था, जो अब घटकर लगभग 4.4 रह गया है। शहरी क्षेत्रों में यह 3.2-3.5 है। पहले संयुक्त परिवार होने की वजह से पहले बुढ़ापे का खर्च पूरा परिवार मिलकर उठाता था। लेकिन अब बढ़ते एकल परिवारों के कारण यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी बढ़ गई है।

एफडी, सेविंग खाते से ज्यादा रिटर्न

एनपीएस इक्विटी योजनाओं ने शुरुआत से अब तक औसतन 13% से अधिक का सालाना रिटर्न दिया है। एफडी की 6.5-7% की ब्याज दरों और 5-6% महंगाई दर के मुकाबले, ऊंचे टैक्स ब्रैकेट वाले निवेशकों के लिए पारंपरिक साधनों पर वास्तविक टैक्स-पश्चात रिटर्न नगण्य है।

सिर्फ 12 मिनट में एनपीएस खुल रहे

युवा पीढ़ी (30-40 वर्ष) बच्चों पर बोझ नहीं बनना चाहती। यह इच्छा वित्तीय योजना बनाने का सबसे बड़ा भावनात्मक कारण है। भारत की फिनटेक अपनाने की दर 87% है, जो वैश्विक औसत से ऊपर है। अब एनपीएस अकाउंट खोलना महज 12 मिनट का काम है।

नए रिजीम में एनपीएस ही सहारा

इनकम टैक्स की धारा 80सी सीमा के ऊपर 50,000 की अतिरिक्त 80सीसीडी (1बी) एनपीसी कटौती, 30% टैक्स ब्रैकेट वाले व्यक्ति के लिए 15,000 की सीधी वार्षिक टैक्स बचत में बदल जाती है, जो अक्सर किसी व्यक्ति को पहली बार सिस्टम में लाने का प्रारंभिक कारण बनती है।

सॉल्यूशन ओरिएंटेड की जगह लेंगे लाइफ साइकिल फंड्स

सेबी ने इस तरह की 'सॉल्यूशन-ओरिएंटेड' योजनाओं में नए निवेश पर रोक लगा दी। इससे बच्चों और रिटायरमेंट फंडों में चल रहे 8,50,000 से अधिक एसआईपी के बाधित होने की संभावना है। 41 योजनाओं और 62 लाख फोलियो के माध्यम से 57,000 करोड़ से अधिक की संपत्ति का प्रबंधन करती है। सर्कुलर के अनुसार, इन योजनाओं को नियामक अनुमोदन के अधीन, समान परिसंपत्ति आवंटन वाली अन्य योजनाओं के साथ विलय करना होगा। नियामक ने सॉल्यूशन-ओरिएंटेड फंडों के स्थान पर एक नई श्रेणी 'लाइफ साइकिल फंड्स' पेश की है।

10 वर्ष पहले शुरुआत से फंड 3 गुना अधिक बन सकता है

रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करने वालों की औसत उम्र में 10 साल की कमी आई है। पीजीआईएम इंडिया और मैक्स लाइफ आईआरआईएस सर्वे के मुताबिक 5 साल में पहली बार निवेश शुरू करने की औसत उम्र 44-46 से 33-35 वर्ष हो गई है। पीजीआईएम इंडिया सर्वे से इसकी पुष्टि होती है। एक निवेशक जो 44 के बजाय 34 की उम्र में 10 हजार की मासिक एसआईपी शुरू करता है। 12% के अनुमानित सालाना रिटर्न पर रिटायरमेंट के समय 2.5-3 गुना बड़ा कॉर्पस हो सकता है।

प्राइमरी मार्केट

तीन कंपनियां आईपीओ से जुटाएंगी ₹1,133 करोड़

मुंबई | इस हफ्ते एक मेनबोर्ड और दो एसएमई आईपीओ आएंगे। मेनबोर्ड सेगमेंट में 1,087 करोड़ रुपए का सेडेमैक मेकाट्रॉनिक्स का आईपीओ बुधवार को खुलेगा। पुणे की यह डीपटेक कंपनी मेकाट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी पर काम करती है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स और मैकेनिकल इंजीनियरिंग के मेल से बनी खास तकनीक है। सेडेमैक का अर्थ मशीन में फैसला लेने वाले सॉफ्टवेयर को मैकेनिकल पार्ट्स से अलग रखकर प्रक्रिया को सटीक बनाना है। यह कंपनी दोपहिया, तिपहिया और ईवी के लिए इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल यूनिट्स बनाती है। यह तकनीक गाड़ियों के इंजन स्टार्ट करने और माइलेज बढ़ाने में मददगार है। इस कंपनी की शुरुआत 18 जुलाई 2007 को आईआईटी बॉम्बे की लैब में प्रोफेसर शशिकांत और उनके छात्रों ने की थी। इसके अलावा एसएमई सेगमेंट में एल्फिन एग्रो इंडिया, श्रीनिवास प्रधान कंस्ट्रक्शंस के आईपीओ गुरुवार और शुक्रवार को खुलेंगे।

सेडेमैक मेकाट्रॉनिक्स 1,087 करोड़ जुटाएगी

आईपीओ	साइज	सब्सक्रिप्शन डेट
सेडेमैक मेकाट्रॉनिक्स	1,087	04 - 06 मार्च
एल्फिन एग्रो इंडिया	25	05 - 09 मार्च
श्रीनिवास प्रधान कंस्ट्रक्शंस	20	06 - 10 मार्च

(इश्यू साइज करोड़ रुपए में)

इस हफ्ते 9 कंपनियों की लिस्टिंग

- 2 मार्च: क्लीन मैक्स एनवायरो एनर्जी, श्री राम ट्विस्टेक्स, किआसा रिटेल, एकॉर्ड ट्रांसफॉर्मर एंड स्विचगियर, मोबिलाइज एप लैब
- 4 मार्च: पीएनजीएस रेवा डायमंड ज्वेलरी
- 5 मार्च: ओमनीटेक इंजीनियरिंग, याप डिजिटल
- 6 मार्च: स्ट्राइडर्स इम्पेक्स

पर्सनल फाइनेंस

मोरटोरियम: ईएमआई से ये राहत महंगी पड़ती है

मुंबई| लोन मोरटोरियम संकट में फौरी राहत देता है, पर अंततः कर्ज का बोझ बढ़ाता है। इसमें बैंक तय समय के लिए ईएमआई रोक देता है। इससे मोहलत तो मिलती है, पर ब्याज लगना बंद नहीं होता। ईएमआई पर तीन माह की मोहलत का ब्याज मूल कर्ज में जुड़ जाता है। इसके चलते मोरटोरियम खत्म होने के बाद लोन की अवधि या ईएमआई की राशि बढ़ जाती है। इसीलिए यह सुविधा तभी लें जब आय का कोई अन्य विकल्प न बचा हो।

लिक्विडिटी: संकट में नकदी बचाने का एक बेहतर जरिया

नौकरी जाने या मेडिकल इमरजेंसी में मोरटोरियम लेना समझदारी है। ऐसे समय में वित्तीय प्रबंधन से जरूरी घर की स्थिरता और फंड बचाना होता है।

शेड्यूल: नया भुगतान चार्ट देखकर ही मोरटोरियम चुनें

बैंक से संशोधित भुगतान चार्ट मांगें। इससे पता चलेगा कि कुल कितना अतिरिक्त ब्याज लगेगा और कितनी किस्तें बढ़ेंगी। राहत का असली सच सामने आएगा।

क्रेडिट: सिबिल बचाने के लिए बैंक से लिखित पुष्टि लें

बिना करार ईएमआई छोड़ना क्रेडिट स्कोर खराब कर सकता है। मोरटोरियम लेने से पहले बैंक से लिखित में ले लें कि रिपोर्टिंग में लेट पेमेंट का जिक्र नहीं करेगा।

अवधि: लंबी अवधि के होम लोन पर पड़ेगा ज्यादा असर

होम लोन जैसे लंबी अवधि के कर्ज में ब्याज कई साल तक बड़े मूलधन पर जुड़ता है। पर्सनल या वाहन लोन में मोरटोरियम का असर बढ़ी किस्तों में दिखता है।

बिजनेस एंकर दिग्गज निवेशक बफे के उत्तराधिकारी और बर्कशायर के सीईओ एबेल का पहला रिजल्ट: कमाई 29% घटी

एबेल ने लिखा: बफे की विरासत संभालना सबसे कठिन काम

भास्कर न्यूज | न्यूयॉर्क

निवेश की दुनिया के 'ओरेकल' वॉरेन बफे की कुर्सी संभालना कांटों भरे ताज से कम नहीं है। बर्कशायर हैथवे की चौथी तिमाही के नतीजे निराशाजनक रहे। ऑपरेटिंग अर्निंग्स 14.56 अरब डॉलर से गिरकर 10.2 अरब डॉलर पर आ गई। यानी करीब 29% की गिरावट। इंश्योरेंस कारोबार सबसे बड़ा दर्द बना। अंडरराइटिंग प्रॉफिट 54% गिरकर 1.56 अरब डॉलर रह गया, जो एक साल पहले 3.41 अरब डॉलर था। इंश्योरेंस इन्वेस्टमेंट इनकम भी 25% घटकर 3.1 अरब डॉलर पर आ गई। पूरे साल 2025 की बात करें तो ऑपरेटिंग अर्निंग्स 47.44 अरब डॉलर से घटकर 44.49 अरब डॉलर रही। कुल मिलाकर, यह बफे के आखिरी दौर में कमजोर पड़ती कमाई की तस्वीर है और नए सीईओ ग्रेग एबेल को यही विरासत मिली है। निवेशकों को लिखे अपने पहले पत्र में एबेल ने कहा कि बफे की विरासत संभालना दुनिया का सबसे मुश्किल काम है।

सीईओ ग्रेग एबेल (दाएं)

पहला इम्तिहान: नए सीईओ ने एप्पल जैसे बड़े निवेश में बने रहने के संकेत दिए

नतीजों के साथ जारी वार्षिक शेयरधारक पत्र में सीईओ एबेल ने कई अहम सवालों के जवाब दिए, जो निवेशकों के मन में बफे की विदाई के बाद से घर कर गए थे...

पहला: नकदी का पहाड़: क्या बेकार पड़ा रहेगा?
एबेल ने इसे ड्राई पाउडर कहा। यानी वह पूंजी जो सही मौका आने पर लगाई जाएगी। स्पष्ट किया कि बर्कशायर ट्रेजरी बॉन्ड पकड़े रहने से ज्यादा उत्पादक कारोबार में निवेश को तरजीह देता है।

दूसरा: डिविडेंड मिलेगा या नहीं?
जवाब साफ था: नहीं। जब तक एक डॉलर रोककर उससे एक से ज्यादा का मूल्य बनाया जा सकता है, डिविडेंड नहीं दिया जाएगा।

तीसरा: क्या कंपनी का शेयर बायबैक का इरादा है?
एबेल ने कहा कि बायबैक तभी होगा जब शेयर अपनी वास्तविक कीमत से नीचे ट्रेड करें और कंपनी में नकदी की स्थिति प्रभावित न हो।

चौथा: शेयर पोर्टफोलियो कौन देखेगा?
एबेल ने यह जिम्मेदारी खुद अपने ऊपर ली।

पांचवा: एप्पल और बड़े निवेश का क्या?
एबेल ने संकेत दिया कि एपल, अमेरिकन एक्सप्रेस, कोका-कोला और मूडीज जैसे बड़े निवेशों में 'सीमित गतिविधि' रहेगी। एपल के बारे में उनका आकलन था कि यह 'दशकों तक कम्पाउंडेड ग्रोथ' देगा। यह अहम है क्योंकि बफे ने हाल के वर्षों में एपल में हिस्सेदारी कम की थी।

छठा: नई शक्ति: जापानी कंपनियों में दोगुना मुनाफा
एबेल ने बताया कि पांच जापानी ट्रेडिंग हाउसेज में बर्कशायर का निवेश कागज पर दोगुने से भी ज्यादा हो गया है। यह बफेट की उस रणनीति की जीत है जो एबेल को विरासत में मिली और जिसे वे आगे बढ़ाने का इरादा रखते हैं।

एक्सपर्ट व्यू | एबेल ने पत्र से दिल जीता, लेकिन जो कहा, उसे करके दिखाना होगा

वैश्विक फर्म सीएफआरए रिसर्च की विश्लेषक कैथी सेफर्ट ने पत्र को ए ग्रेड दिया। उनके अनुसार एबेल ने वह किया जो जरूरी था। यह संदेश दिया कि बर्कशायर वही रहेगी जो बफेट ने बनाई। ग्लेनव्यू ट्रस्ट के सीआईओ बिल स्टोन ने इसे असाधारण बताया। गेबेली ईटीएफ के मैक्रे साइक्स ने तो "गोल्ड मेडल" तक दे दिया। लेकिन सेफर्ट की चेतावनी भी उतनी ही अहम है। वो यह है, "कहना और करना अलग होता है।" बफेट की विरासत नंबर में हैं। 1965 से अब तक 19.7% सालाना चक्रवृद्धि रिटर्न, जो एसएंडपी 500 के करीब दोगुना है। कुल रिटर्न 60 लाख फीसदी से भी पार। एबेल ने पहला इम्तिहान संवाद का पास कर लिया है। लेकिन असली चुनौती यह है कि 370 अरब डॉलर की नकदी को सही जगह लगाएं, इंश्योरेंस बिजनेस को पटरी पर लाएं और 2025 की गिरती कमाई का सिलसिला तोड़ें।

धैर्य शक्ति है। धैर्य क्रियाशीलता का अभाव नहीं है, बल्कि यह उचित कार्य के सही समय पर सही ढंग से किए जाने की प्रतीक्षा मात्र है।

– फुल्टन जे शीन

युद्ध की आग

पिछले कुछ समय से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह के हालात बने हुए हैं, उसमें ऐसा लगता है कि कई मोर्चों पर प्रतिद्वंद्वी देशों के बीच विवादित मुद्दों को सुलझाने के लिए संवाद के बजाय संघर्ष को ही आखिरी हल मान लिया गया है। हैरानी की बात यह है कि युद्ध के खिलाफ शांति का पाठ पढ़ाने वाले कुछ ताकतवर देशों के नेताओं को भी अपने प्रभाव से संघर्ष को टालने के रास्ते तलाश करना प्राथमिक नहीं लगता। इसके उलट वे तनाव को सीधे टकराव में तब्दील करने वाले अभियानों में शामिल होना जरूरी समझने लगे हैं। बीते कुछ महीनों से इजराइल और अमेरिका ने ईरान के खिलाफ जिस तरह का माहौल बनाना शुरू किया था, उससे साफ था कि अगर विवाद के मूल बिंदुओं को केंद्र में रख कर अंतरराष्ट्रीय मंचों की मध्यस्थता में बिना देरी किए संबंधित पक्षों के बीच वार्ता की गुंजाइश नहीं निकाली गई, तो हालात को संभालना मुश्किल होगा।

ऐसी स्थिति के बीच शनिवार को इजराइल और अमेरिका ने ईरान पर साझा हमला करके अपनी मंशा साफ कर दी। अपने हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत को इजराइल और अमेरिका बेशक अपनी कामयाबी मानें, लेकिन इसके बाद अब नए सिरे से क्षेत्रीय अस्थिरता का खतरा जिस पैमाने पर बढ़ गया है, वह किस दिशा की ओर बढ़ेगा, यह देखने की बात होगी। इसके अलावा, इजराइली हमले में ईरान के कई इलाकों में भारी नुकसान पहुंचा और सैकड़ों नागरिक मारे गए। जवाब के तौर पर ईरान ने भी अमेरिका और इजराइल के कई ठिकानों पर समान तीव्रता वाले हमले किए और कई जगहों पर व्यापक क्षति हुई। सवाल है कि इस युद्ध का उद्देश्य आखिर क्या है? अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि मकसद सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने से आगे ईरान की सत्ता में बैठी व्यवस्था को हटाना है। यह समझना मुश्किल है कि अमेरिका एक ओर ईरान को परमाणु कार्यक्रम पर समझौते के लिए दबाव बनाता रहा है, तो अब वह अपना उद्देश्य मौजूदा ईरानी सत्ता को खत्म करना बता रहा है। ईरान के परमाणु कार्यक्रम को सीमित करने के लिए ओमान की मध्यस्थता में शांति वार्ता भी चल रही थी। हालांकि ईरान ने युद्ध से बचने की इच्छा जरूर जताई थी, लेकिन उसने यूरेनियम समृद्ध करने का अधिकार रखने की बात दोहराई। अब इजराइल और अमेरिका के साझा हमले के बाद यह वार्ता फिलहाल बेमानी हो चुकी है।

जिस दौर में विकास के नारे के साथ सभी देश बेहतर भविष्य का सफर तय करना चाहते हैं, उसमें संवाद के रास्ते बंद करके युद्ध का रास्ता अख्तियार करने का नतीजा आखिर क्या निकलेगा? रूस-यूक्रेन के बीच जारी युद्ध वैश्विक शांति के लिए पहले ही एक जटिल चुनौती है। हाल ही में पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच भड़की खुली जंग ने भी एक नया मोर्चा खोल दिया। अब इजराइल और अमेरिका के साझा हमले और खासतौर पर खामेनेई की मौत के बाद ईरान की प्रतिक्रिया क्या होगी, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कैसे समीकरण खड़े होंगे, किन देशों के बीच नई मोचेबंदी होगी और युद्ध कितने बड़े दायरे में फैलेगा, ये प्रश्न वैश्विक चिंता का केंद्र बनने वाले हैं। इसके मद्देनजर भारत के लिए एक जरूरी कदम यह होना चाहिए कि युद्धग्रस्त इलाकों से अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के प्रयास हों। आज दुनिया में युद्ध के कई मुहाने खुल गए हैं, अगर उसे रोका नहीं गया, तो फिर व्यापक जंग के त्रासद नतीजे सामने होंगे।

अंधविश्वास की मार

आधुनिक दौर में विज्ञान और तकनीक की मदद से पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष तक प्रगति के नए आयाम गढ़े जा रहे हैं। मगर समाज का एक हिस्सा अब भी अंधविश्वास के अंधकार से बाहर नहीं निकल पा रहा है। इस तरह की सोच जहां व्यक्तिगत जीवन में परेशानियों के द्वार खुले रखती है, वहीं कई बार यह हिंसा का कारण भी बनती है। खासकर जादू-टोने के अंधविश्वास में नियम-कानूनों को ताक पर रखकर निर्दोष लोगों की हत्या कर देने या सार्वजनिक तौर पर किसी को अपमानित करने या फिर भीड़ हिंसा में किसी की बेरहमी से पिटाई करना आम बात हो गई है। यों तो देश के कई हिस्सों से डायन बता कर महिलाओं की हत्या के मामले सामने आते रहे हैं, लेकिन पिछले कुछ समय के दौरान झारखंड में ऐसी लगातार कई घटनाओं ने चिंता बढ़ा दी है। हाल ही में झारखंड के गुमला में जादू-टोना करने के संदेह में एक महिला की कुल्हाड़ी से हमला कर हत्या कर दी गई। सवाल है कि इस तरह के अंधविश्वास को खत्म करने और इससे जुड़ी हिंसा पर अंकुश लगाने के लिए सरकार से लेकर सामाजिक स्तर पर गंभीरता से प्रयास क्यों नहीं हो पा रहे हैं?

इसमें दोराय नहीं कि चाहे गांव हो, या शहर हर जगह समाज के एक हिस्से में अंधविश्वास की छाया नजर आती है। आज जब देश और दुनिया विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में कोसों आगे निकल गए हैं, तब महज अंधविश्वास की वजह से किसी के बीमार होने पर चिकित्सीय इलाज कराने के बजाय जादू-टोने का सहारा लेना किस तरह की सोच को दर्शाता है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि विकास के तमाम दावों के बीच देश में सामाजिक स्तर पर वैज्ञानिक चेतना के प्रसार को लेकर शासन-प्रशासन की ओर से अब तक गंभीर प्रयास नहीं हुए हैं। जबकि देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रचार एवं प्रसार को प्रोत्साहित करने का दायित्व सरकार और समाज सभी पर है। हालांकि, कुछ राज्यों में अंधविश्वास से जुड़े अपराध पर नियंत्रण पाने के लिए कानून बनाए गए हैं, लेकिन उन पर कड़ाई से अमल और लोगों में जागरूकता पैदा करने से ही इस समस्या का समाधान संभव हो सकता है।

हमले का असर

जो लोग जिनेवा में बातचीत की प्रगति देख रहे थे, वे इस बात को लेकर आश्वस्त थे कि युद्ध को टल जाना है। मगर जिस पैमाने पर साझा अभियान शुरू हुआ, उससे सवाल उठ खड़ा हुआ कि क्या ट्रंप और नेतन्याहू ने अपने विरुद्ध बन रहे माहौल को मोड़ने के लिए युद्ध का रास्ता चुन लिया!

पुष्परंजन

ईरान पर अमेरिका-इजराइल के व्यापक हमले को दो दिन हुए हैं, यह पहले से ही साफ है कि इसका मध्य-पूर्व और खासकर खाड़ी पर गहरा असर पड़ेगा। अमेरिका-इजराइल की बमबारी में कई बड़े अधिकारियों के साथ सर्वोच्च नेता अली खामेनेई और उनके परिवार के लोग भी मारे गए हैं। ईरान में 40 दिन का शोक है। तेहरान ने न सिर्फ इजराइल बल्कि इस इलाके के कई देशों पर हमले करके जवाब दिया है।

सऊदी अरब, कतर, संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, कुवैत और ओमान सभी पर ईरानी मिसाइलों या ड्रोन से हमला किया गया, जबकि इनमें से किसी भी देश ने अपने इलाके से ईरान पर हमला नहीं किया था। इन देशों में कई जगहों को निशाना बनाया गया, जिनमें अमेरिकी सैन्य अड्डे, हवाई अड्डे, बंदरगाह और वाणिज्यिक इलाके भी शामिल थे। अगर यह लड़ाई लंबी खिंचती है, तो यह खाड़ी देशों के लिए एक असली बदलाव बिंदु बन सकती है। एक ऐसा मोड़, जो देशों की सुरक्षा, उभयपक्षीय सहयोग और यहां तक कि उनके लंबे समय के आर्थिक भविष्य के बारे में सोचने के तरीके को बदल देगा।

ईरान से जुड़ा कोई भी लंबा संघर्ष समुद्री यातायात को प्रभावित करेगा, खासकर होर्मुज की खाड़ी, जो दुनिया की आर्थिक धमनियों में से एक है। थोड़ी बहुत रुकावट से ऊर्जा की कीमते तेज हो जाएंगी, जो निवेशकों के लिए नई चिंता पैदा कर सकती हैं। हां, तेल की ज्यादा कीमतें अल्पकालिक राजस्व को बढ़ा सकती हैं, फिर भी ऊर्जा बाजार असंतुलित हो जाएगा। क्या ट्रंप तेल की कीमतों में भी उछाल चाहते थे? चीन और रूस ज्यादा देर चुपचाप नहीं रहेंगे। मास्को यदि सीधा नहीं भी कूदा, मगर इस उथल-पुथल का फायदा उठाकर हथियारों की बिक्री बढ़ा सकता है, वह क्षेत्रीय बंटवारे का भी लाभ उठा सकता है।

इस संदर्भ में जो वार्ता जिनेवा में चल रही थी, उसे ठीक से देखा जाए तो जो लोग मध्यस्थता कर रहे थे, उन्हें भी भरोसे में नहीं लिया गया। ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराकची ने वार्ता के इस दौर को, जो ओमान की मध्यस्थता और अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजंसी के महानिदेशक राफेल ग्रासी की उपस्थिति में आयोजित किया गया था, आज तक की 'सबसे गंभीर और सबसे लंबी' वार्ता बताया था। ईरान के विदेश मंत्री ने वार्ता के माहौल और ओमान की मध्यस्थता की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा था कि कुछ मुद्दों पर सहमति बहुत करीब आ गई है। बेशक, अभी भी मतभेद मौजूद हैं, जो स्वाभाविक है, लेकिन पहले की तुलना में बातचीत के समाधान तक पहुंचने के लिए दोनों पक्षों में अधिक गंभीरता देखी जा रही है।

उधर ईरान के विदेश मंत्री की घोषणा के अनुसार, 'इस बात पर सहमति हुई कि सोमवार से तकनीकी टीमें वियना में और अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजंसी में विशेषज्ञ समीक्षा शुरू करेंगी। इस बैठक का उद्देश्य कुछ तकनीकी मुद्दों को एक निश्चित ढांचे में व्यवस्थित करना बताया गया है।' अराकची के मुताबिक, यह तय हुआ था कि हमारे विशेषज्ञों की अगले सोमवार को एजंसी के साथ बैठक होगी। वहां कुछ तकनीकी

पहलुओं पर चर्चा की जानी है, ताकि ये तकनीकी पहलू स्पष्ट हो सकें, जिसके बाद हम राजनीतिक बैठकों में उन पर निर्णय ले सकें।' अराकची के बयानों से निकट भविष्य में वार्ता के चौथे दौर के आयोजन की योजना की भी जानकारी मिली कि यह बैठक लगभग एक सप्ताह में आयोजित होगी। इस अंतराल में दोनों पक्षों को कुछ कदम उठाने होंगे, दस्तावेज तैयार करने होंगे और स्वाभाविक रूप से अपनी-अपनी राजधानियों में आवश्यक परामर्श करने होंगे। प्रतिबंधों को लेकर ईरान के रुख को स्पष्ट करते हुए जोर दिया गया कि तेहरान की अपेक्षाएं स्पष्ट रूप से रखी गई हैं।

> यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि विएना में बैठे रणनीतिकार इजराइल के पास नाभिकीय हथियारों और मिसाइलों की बात कभी नहीं उठाते। यह नहीं पूछा जाता कि इजराइल के पास नब्बे परमाणु हथियार हैं या दो सौ! वह ऐसे हथियारों की मौजूदगी की न तो पुष्टि करता है और न ही खंडन। माना जाता है कि ईरान मिसाइलों, पनडुब्बियों और विमानों से परमाणु हथियार दागने में सक्षम है। 2024 में इजराइल ने अपने परमाणु बमों के निर्माण और रखरखाव पर 11 अरब अमेरिकी डालर खर्च किए थे। अगर केवल परमाणु हमले की धमकी भर को लेकर ईरान पर हमला किया जा सकता है, तो उस तरह की धमकी पाकिस्तान कई बार भारत को दे चुका है।

अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अमेरिका के रणनीतिक सहयोगी ओमान से भी इस सैन्य कार्रवाई की सूचनाओं को साझा नहीं किया गया था। ओमान के विदेश मंत्री बद्र अल-बुसैदी ने जिनेवा में ईरान और अमेरिका के बीच अप्रत्यक्ष वार्ता के तीसरे दौर को 'रचनात्मक और सकारात्मक' विचारों के आदान-प्रदान वाला बताया था और इन वार्ताओं का समर्थन जारी रखने के लिए ओमान की प्रतिबद्धता पर जोर दिया था। ओमानी विदेश मंत्री बद्र बिन हमद अल बुसैदी ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से मुलाकात के बाद कहा था कि परमाणु बातचीत अब तक की सबसे सकारात्मक, अहम और उपलब्धियों वाली थी। मगर क्या वाइट हाउस ने पहले से तय कर रखा था कि बातचीत के धोखे में हमला किया जाएगा? ईरान से आने वाली खबरों से पता चलता है कि तेहरान में यूनिवर्सिटी स्ट्रीट और जोम्हौरी इलाके में तथा ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स मुख्यालय के पास हमला किया गया। इसके अलावा, अलग-अलग खबर आईं कि ईरान की राजधानी में एक हमला सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के दफ्तर के पास हुआ। तेहरान के उत्तरी सैय्यद खानदान इलाके में भी धमाके हुए। तबरीज, कर्मनशाह, काम, इलाम, इस्फाहान, लारेस्तान जैसे शहरों में बमबारी हुई है।

अभी दो बातें स्पष्ट नहीं है कि लड़ाई कितने दिनों तक छिड़ी रहेगी। इसके अलावा, क्या लेबनान से हिजबुल्ला और यमन में हूती विद्रोही इजराइल के विरुद्ध हमले करेंगे। तेहरान इस पर सहमत था कि वह बैलिस्टिक मिसाइलों के जखीरे को कम कर देगा। तेहरान सिविल न्यूक्लियर यूरेनियम के प्रसंस्करण पर लगी पाबंदियों पर बात करने में लचीला रुख दिखा चुका था, लेकिन अपनी मिसाइलें पूरी तरह से समाप्त करने पर वह सहमत नहीं था।

सबसे दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि विएना में बैठे रणनीतिकार इजराइल के पास नाभिकीय हथियारों और मिसाइलों की बात कभी नहीं उठाते। यह नहीं पूछा जाता कि इजराइल के पास नब्बे परमाणु हथियार हैं या दो सौ! वह ऐसे हथियारों की मौजूदगी की न तो पुष्टि करता है और न ही खंडन। माना जाता है कि वह मिसाइलों, पनडुब्बियों और विमानों से परमाणु हथियार दागने में सक्षम है। 2024 में इजराइल ने अपने परमाणु बमों के निर्माण और रखरखाव पर 11 बिलियन अमेरिकी डालर खर्च किए थे। अगर केवल परमाणु हमले की धमकी भर को लेकर ईरान पर हमला किया जा सकता है, तो उस तरह की धमकी पाकिस्तान कई बार भारत को दे चुका है।

ईरान पर हमला ऐसे वक्त हुआ है, जब पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच बमबारी चल रही है। पाकिस्तान ने इस सैन्य अभियान को आपरेशन 'गजब लिल-हक' नाम देते हुए खुली जंग का एलान कर दिया है। पाकिस्तान का दावा है कि उसके हमले में 130 से अधिक तालिबान लड़ाके मारे गए हैं। यह कितना अजीब है कि जो डोनाल्ड ट्रंप पाकिस्तान और भारत के बीच युद्ध विराम का छद्म दावा गाहे-बगाहे करते रहते हैं, उनके बारह महीनों के कार्यकाल में सात देशों पर हमले हुए और एक नेता को बंदी बनाया गया। सबसे दुख की बात यह है, कि ट्रंप की एकतरफा कार्रवाई पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय मूकदर्शक बना हुआ है।

मुक्ति का प्रकाश

ममता कुशवाहा

मनुष्य का जीवन केवल सांस लेने और भौतिक सुविधाओं के उपभोग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चेतना, अनुभव और आत्मबोध की निरंतर यात्रा है। जब तक मनुष्य अज्ञान के अंधकार में भटकता रहता है, तब तक वह बाहरी स्वतंत्रता के बावजूद भीतर से बंधा रहता है। अज्ञान से बाहर निकलना, अनुभव और संघर्ष से सीखना, संवेदनशीलता विकसित करना और आत्मकेंद्रित दृष्टि से ऊपर उठकर मानव-कल्याण के उद्देश्य से जुड़ना, यही जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि और वास्तविक स्वतंत्रता का मार्ग है।

अज्ञान मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा बंधन है। यह केवल ज्ञान के अभाव का नाम नहीं, बल्कि सत्य से दूरी, पूर्वाग्रहों की जकड़न और आत्मबोध के अभाव की स्थिति है। जब मनुष्य केवल परंपराओं, रूढ़ियों और सुनी-सुनाई बातों के आधार पर सोचता है, तब वह अपने विवेक और चेतना का उपयोग नहीं कर पाता। अज्ञान उसे भय, संकीर्णता और भ्रम में बांध देता है। वह सत्य को देखने के बजाय सुविधा के अनुसार सोचता है और अपने हित को ही सर्वोच्च मान लेता है। ऐसी स्थिति में वह न तो स्वयं को समझ पाता है और न समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को। इसलिए सच्ची मुक्ति का पहला चरण अज्ञान के अंधकार से बाहर निकलना है, जहां मनुष्य प्रश्न करना सीखता है और अपने भीतर छिपी चेतना को पहचानता है।

अनुभव मनुष्य को जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराता है। पुस्तकें और उपदेश दिशा तो दे सकते हैं, पर जीवन की गहराई का बोध अनुभव से ही होता है। सुख और दुख, सफलता और असफलता, प्रेम और पीड़ा, ये सभी अनुभव मनुष्य के दृष्टिकोण को परिष्कृत करते हैं। जब मनुष्य अपने अनुभवों से सीखता है, तब वह केवल परिस्थितियों का शिकार नहीं रहता, बल्कि उन्हें समझने और उनसे आगे बढ़ने की क्षमता विकसित करता है। अनुभव उसे यह सिखाता है कि जीवन निरंतर परिवर्तनशील है। इसमें छिपी सीख ही उसे परिपक्व बनाती है।

संघर्ष इस सीख को और अधिक गहराई देता है। जब मनुष्य कठिन परिस्थितियों से गुजरता है, तब उसकी वास्तविक शक्ति प्रकट होती है। संघर्ष उसे सहनशीलता, धैर्य और आत्मविश्वास प्रदान करता है। जो व्यक्ति संघर्ष से भागता है, वह जीवन की परीक्षा में कमजोर पड़ जाता है, जबकि संघर्ष मनुष्य को यह एहसास कराता है कि जीवन की सार्थकता केवल आराम में नहीं, बल्कि चुनौतियों का सामना करने में है। यही संघर्ष धीरे-धीरे उसे अज्ञान से ज्ञान की ओर, भय से साहस की ओर और निराशा से आशा की ओर ले जाता है।

संवेदनशीलता मनुष्य को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी सोचने की क्षमता देती है। जब मनुष्य दूसरों के दुख, पीड़ा और संघर्ष को महसूस करता है, तब उसके भीतर करुणा और सहानुभूति जन्म लेती है। संवेदनशील व्यक्ति केवल अपनी सफलता से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि समाज की समस्याओं को भी समझता है। वह जानता है कि उसकी मुक्ति केवल व्यक्तिगत नहीं हो सकती, क्योंकि वह समाज का ही हिस्सा है। संवेदनशीलता मनुष्य को आत्मकेंद्रित दृष्टि से बाहर निकालकर व्यापक मानवता से जोड़ती है।

आत्मकेंद्रित दृष्टि मनुष्य के विकास में सबसे बड़ा अवरोध है। जब मनुष्य केवल अपने लाभ, प्रतिष्ठा और सुविधाओं के बारे में सोचता है, तब उसका दृष्टिकोण संकीर्ण हो जाता है। वह समाज को केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति का साधन समझने लगता है। ऐसी स्थिति में वह चाहे कितना ही सफल क्यों न हो जाए, भीतर से खाली रहता है। वास्तविक संतोष और शांति उसे तब मिलती है, जब वह अपने जीवन को किसी बड़े उद्देश्य से जोड़ता है। आत्मकेंद्र से बाहर निकलना तभी संभव है, जब मनुष्य त्याग, समझ और व्यापक दृष्टि रखता हो।

मानव-कल्याण के उद्देश्य से जुड़ना जीवन को अर्थ प्रदान करता है। जब मनुष्य अपने ज्ञान, अनुभव और शक्ति का उपयोग दूसरों के हित के लिए करता है, तब उसका जीवन केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज के विकास का माध्यम बन जाता है। मानव-कल्याण का मार्ग मनुष्य को यह सिखाता है कि उसकी पहचान केवल 'मैं' से नहीं, बल्कि 'हम' से जुड़ी है। जब वह दूसरों की भलाई में अपनी खुशी खोजता है, तब उसके भीतर आत्मिक शक्ति का विकास होता है। यही आत्मिक शक्ति उसे कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर और दृढ़ बनाए रखती है।

सच्ची स्वतंत्रता का अर्थ केवल बाहरी बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि आंतरिक सीमाओं से भी मुक्त होना है। जब मनुष्य अज्ञान, भय, अहंकार और स्वार्थ से ऊपर उठता है, तब वह वास्तव में स्वतंत्र होता है। ऐसी स्वतंत्रता उसे आत्मबोध प्रदान करती है और उसे यह समझने में मदद करती है कि जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं के लिए जीना नहीं, बल्कि मानवता के लिए जीना है। जो व्यक्ति हर परिस्थिति को सीख का अवसर मानता है, वह निरंतर विकसित होता रहता है। वह जीवन की कठिनाइयों से टूटता नहीं, बल्कि उन्हें अपनी चेतना के विस्तार का साधन बनाता है।

वास्तव में सच्ची मुक्ति कोई एक क्षण की उपलब्धि नहीं, बल्कि एक सतत् प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया अज्ञान से ज्ञान की ओर, आत्मकेंद्र से मानव-कल्याण की ओर और सीमित दृष्टि से व्यापक चेतना की ओर ले जाती है। अनुभव, संघर्ष और संवेदनशीलता इस यात्रा के प्रमुख साधन हैं। जब मनुष्य इन तीनों को अपने जीवन में स्वीकार करता है और हर परिस्थिति को सीख के रूप में देखता है, तब वह आत्मिक शक्ति से भर उठता है। यही आत्मिक शक्ति उसे जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि, सच्ची स्वतंत्रता तक पहुंचाती है, जहां वह न केवल स्वयं मुक्त होता है, बल्कि दूसरों के जीवन को भी प्रकाश से भर देता है।

दुनिया मेरे आगे

> जब मनुष्य अज्ञान, भय, अहंकार और स्वार्थ से ऊपर उठता है, तब वह वास्तव में स्वतंत्र होता है। ऐसी स्वतंत्रता उसे आत्मबोध प्रदान करती है और उसे यह समझने में मदद करती है कि जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं के लिए जीना नहीं, बल्कि मानवता के लिए जीना है।

चौपाल

नई चुनौतियां

आज महंगाई, बेरोजगारी, प्रदूषण, भ्रष्टाचार, शिक्षा में असमानता और डिजिटल अपराध जैसी समस्याएं बड़ी चुनौती बन चुकी हैं। सबसे बड़ी समस्या महंगाई है। रोजमर्रा की चीजों के दाम बढ़ने से आम आदमी का जीवन मुश्किल हो गया है। पेट्रोल, गैस, सब्जियां और दवाइयां गरीबों एवं मध्य वर्ग की पहुंच से बाहर हो रही हैं। लोगों की बचत घट रही है और जीवन स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। दूसरी गंभीर समस्या बेरोजगारी है। पढ़े-लिखे युवाओं को भी आज रोजगार नहीं मिल पा रहा है। इससे उनमें निराशा बढ़ रही है। कई बार वे गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। शिक्षा और रोजगार के बीच संतुलन बनाना सरकार और समाज दोनों की जिम्मेदारी है। प्रदूषण भी एक बड़ा खतरा बन चुका है। हवा-पानी और मिट्टी तीनों प्रदूषित हो रहे हैं। पेड़ों की कटाई और वाहनों की बढ़ती संख्या से वैश्विक ताप बढ़ रहा है। इससे प्राकृतिक आपदाएं बढ़ गई हैं। इन सभी समस्याओं का समाधान केवल सरकार से उम्मीद करके नहीं होगा। हमें भी अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। पर्यावरण की रक्षा करनी होगी। शिक्षा को महत्त्व देना होगा और समाज में जागरूकता फैलानी होगी।

– रागिनी कुशवाहा, सिंगरौली

संवरेंगे शहर

देश के कई शहरों को संवारने के लिए केंद्र सरकार ने जो मुहिम चलाने की बात कही है, वह सराहनीय है। इसके तहत शहरों के पुनर्विकास और सुधारों को गति दी जाएगी। इसके लिए सरकार ने 'अर्बन चैलेंज फंड' को मंजूरी दी है। इसके लिए एक लाख करोड़ की केंद्रीय सहायता निर्धारित की गई है। इस पहल से अगले पांच वर्षों में शहरी क्षेत्रों में चार लाख करोड़ का कुल निवेश (बाजार, वित्तपोषण, निजी भागीदारी और सुधारों के माध्यम से) जुटाने का लक्ष्य है। इस कोष का उद्देश्य भारतीय शहरों को लचीला, उत्पादक, समावेशी और जलवायु-संवेदनशील बनाना है। यह योजना वित्तीय वर्ष 2025-26 से 2030-31 तक चालू रहेगी। इसका विस्तार वर्ष 2033-34 तक किया जा सकता है। केंद्रीय सहायता प्राप्त करने के लिए, परियोजनाओं को प्रतिस्पर्धात्मक माध्यम से चुना जाएगा। इसमें शहरों को शहरी नियोजन में सुधार जैसे लक्ष्य पूरे करने होंगे।

– युगल किशोर राही, छपरा

जवाबदेही की जरूरत

हाल ही में पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची से जुड़े विवादों के समाधान के लिए न्यायिक अधिकारियों की निगरानी में पुनरीक्षण का शीर्ष न्यायालय का निर्देश महत्त्वपूर्ण कदम है। यह निर्णय उस समय आया, जब बड़ी संख्या में मतदाता दावों और आपत्तियों के लंबित रहने तथा मतदाता सूची की शुद्धता पर सवाल उठ रहे थे। मतदाता सूची संविधान के अनुच्छेद 326 के अंतर्गत नागरिकों के मताधिकार का आधार है। यदि पात्र नागरिक का नाम सूची से छूट जाए या अपात्र नाम शामिल हो जाएं, तो चुनाव की निष्पक्षता और लोकतंत्र की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। सुप्रीम कोर्ट ने न्यायिक निगरानी सुनिश्चित कर यह स्पष्ट किया है कि मतदाता सूची का पुनरीक्षण केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि संवैधानिक अधिकारों की रक्षा से जुड़ा विषय है। न्यायालय का यह हस्तक्षेप चुनाव आयोग और राज्य प्रशासन को अधिक जवाबदेह तथा पारदर्शी ढंग से कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

– आशुतोष पांडेय, जम्मू

किशोरों की राह

इन दिनों गिरोहबाजों के महिमामंडन से निराशा होती है। चिंता की बात यह है कि किशोर भी सोशल मीडिया के प्रभाव में उनको आदर्श मानने लगे हैं। 'किंग' जैसे उपनामों से अपराध को साहस और प्रतिष्ठा का प्रतीक बना कर पेश किया जा रहा है। इससे युवा वर्ग भ्रमित है। दर्जनों मामलों में संलिप्त अपराधियों के काले कारनामों को चमकदार बना कर पेश करना समाज के लिए गंभीर चेतावनी है। जब अपराधियों को डिजिटल मंचों पर नायक के रूप में दिखाया जाता है, तो नाबालिग अनजाने में आपराधिक प्रवृत्तियों की ओर आकर्षित हो जाते हैं। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए पुलिस और साइबर सेल के बीच सशक्त समन्वय आवश्यक है। केवल सजा ही समाधान नहीं है। भटके हुए किशोरों को शिक्षा, कौशल विकास और नैतिक मार्गदर्शन से मुख्यधारा से जोड़ना जरूरी है।

– इशायत अली, बदायूं, उप्र

व्रत त्योहार

3 मार्च 2026 : होलिका दहन , चंद्र ग्रहण, फाल्गुन पूर्णिमा
4 मार्च 2026 : होली, चैत्र महीने का आरंभ
5 मार्च 2026 : भाई दूज
6 मार्च 2026 : भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी
8 मार्च 2026 : रंग पंचमी
10 मार्च 2026 : शीतला सप्तमी
11 मार्च 2026 : शीतला अष्टमी, बसोड़ा, कालाष्टमी और कृष्ण जन्माष्टमी (मासिक)
15 मार्च 2026 : कृष्ण नृसिंह द्वादशी, मीन संक्रांति
16 मार्च 2026 : प्रदोष व्रत

समाज की सामूहिक आत्मा का उत्सव है रंगों भरी होली

शास्त्री कोसलेन्द्रदास

पर्व

फाल्गुन की पूर्णिमा की उजली रात जब शीत की अंतिम आहट को विदा करती है और वसंत का स्मित बिखेरती है, तब चहुं ओर रंग और अनुराग भर उठता है। होली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय जीवन की सामूहिक चेतना का उल्लासपूर्ण महोत्सव है। यह ऐसा उत्सव है जो पूरे देश में मनाया जाता है, यद्यपि उसके रूप, रीति और रस में स्थान-स्थान पर विविधता दिखाई देती है। लोक उत्सव के रूप में ख्यात होली पर्व सामाजिक समरसता और सद्भाव का संदेश देता है।

कहीं होलिका-दहन की ज्वाला में लोक अपने दुःख-दाह को समर्पित करता है, तो कहीं रंगों की पिचकारी से हृदय की उमंगें फूट पड़ती हैं। बांस या धातु की पिचकारी से रंगीन जल छोड़ना, अबीर-गुलाल से आलोकित मुखमंडल, मित्रों से परिहास मिलकर इस पर्व को जीवंत बनाते हैं। कुछ स्थानों पर लोग होलिका की परिक्रमा करते हैं, अग्नि में नारियल तथा गेहूं-जौ के डंठल अर्पित करते हैं और उनके अधजले अंश को प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं। यह लोक-आस्था और कृषि-संस्कृति का सुंदर संगम है।

शास्त्रीय आधार और प्राचीनता

भारत रत्न डा पांडुरंग वामन काणे के धर्मशास्त्र के इतिहास के अनुसार होली का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इसका प्राचीन नाम होलाका था, जिसका उल्लेख जैमिनि मीमांसा सूत्र (1/3/15-16) में है। जैमिनि और शबर स्वामी के अनुसार यह उत्सव समस्त आर्यों द्वारा संपादित होता था। काठक-गृह्यसूत्र में इसे स्त्रियों के सौभाग्य से जोड़ा है, जहां पूर्णचन्द्र राका देवता कहे गए हैं। कामसूत्र (1/4/42) में होलाका को उन क्रीड़ाओं में गिना गया है, जो संपूर्ण भारत में प्रचलित थीं। वहां फाल्गुन पूर्णिमा पर सुगंधित चूर्ण और रंगीन जल की क्रीड़ा का उल्लेख है। लिंग पुराण और वराहपुराण में फाल्गुनिका और पटवास-विलासिनी के रूप में इस पर्व का वर्णन मिलता है, जो लोक-समृद्धि और बाल-क्रीड़ाओं से युक्त है। हेमाद्रि ने भविष्योत्तर पुराण से युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण के संवाद का उल्लेख करते हुए होलिका-पूर्णिमा को हुताशनी कहा है। यह प्रमाणित करता है कि यह उत्सव केवल लोकाचार नहीं, बल्कि शास्त्र सम्मत और वैदिक परंपरा से अनुप्राणित है।

वसंत में काम-पूजा का उत्स

होलिका-दहन के अगले दिन चैत्र प्रतिपदा को काम-पूजा का विधान बताया गया है। घर के प्रांगण में वर्गाकार स्थल बनाकर कामदेव की प्रतिमा पर चन्दन-लेप करना, आम्र-मंजरी का सेवन करना और ब्राह्मणों को दान देना वसंत के जीवनोत्सव का प्रतीक हैं। पतझड़ के उपरांत नवपल्लव और आम्र-बौर के साथ जीवन की नव-सृष्टि का स्वागत होली का गूढ़ तत्त्व है।

दोलयात्रा और क्षेत्रीय वैविध्य

जब उत्तर और पश्चिम भारत में होलिका-दहन और रंगोत्सव की धूम रहती है, तब बंगाल में दोलयात्राविवेक ग्रंथ में वर्णित दोलयात्रा का आयोजन होता है। वहां फाल्गुन पूर्णिमा पर कृष्ण-प्रतिमा को झूले पर विराजित कर उत्सव मनाया जाता है। यह भक्ति और सौंदर्य का सुमधुर समन्वय है। दक्षिण भारत में रंगों के उत्सव होलिका के पांचवें दिन रंग पंचमी मनाई जाती है। कहीं-कहीं यह उल्लास कई दिनों तक चलता है और रंगों से सड़कें लाल हो उठती हैं।

उल्लास और संयम का संतुलन

होली मूलतः प्रेम और हर्ष का पर्व है, किन्तु कहीं-कहीं अश्लील गान और भद्दे परिहास इसकी मर्यादा को आहत भी करते हैं। शास्त्र और लोक, दोनों का संकेत यही है कि उत्सव में उल्लास हो, उच्छृंखलता नहीं, रंग हो पर कालुष्य न हो, हास्य हो पर किसी का अपमान नहीं हो। कुछ पाश्चात्य लेखकों ने होली के उद्गम को मिस्र या यूनान से जोड़ने का प्रयास किया, परंतु यह मत भ्रामक है। वैदिक ग्रंथों, पुराणों और आचार-ग्रंथों में होलाका का स्पष्ट उल्लेख उपलब्ध है, तब इसे विदेशी प्रभाव मानना भारतीय परंपरा की उपेक्षा है।

होलाकाधिकरण का न्याय

होलाकाधिकरण में यह सिद्धांत प्रतिपादित है कि जो आचार किसी एक प्रदेश के लिए उपयुक्त है, वह तर्कसंगत रूप से अन्य प्रदेशों के लिए भी ग्राह्य हो सकता है। धर्मशास्त्रकारों ने इस न्याय का अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट है कि होली केवल किसी एक क्षेत्र की परंपरा नहीं, बल्कि अखिल भारतीय सांस्कृतिक धरोहर है। वास्तव में होली वसंत की उन्मुक्त हंसी है, खेतों की हरियाली का आशीर्वाद है, प्रेम का रंग है और समाज की सामूहिक आत्मा का उत्सव है। यह स्मरण कराती है कि जीवन में दुःख-दाह को अग्नि में समर्पित कर, हृदय को रंगों से सराबोर कर, हम नूतन ऊर्जा के साथ आगे बढ़ें। होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति का जीवंत आलोक है, जिसमें लोक और शास्त्र, प्रेम और परंपरा, उल्लास और अध्यात्म एक साथ झिलमिलाते हैं।

परंपरा से 'आयोजनों' तक सिमटती ब्रज की होली

पवन गौतम

भारत में तो ब्रज की होली सांस्कृतिक रूप से महशूर है ही, आज दुनिया में ब्रज की होली का डंका बज रहा है। सरकार लगातार होली को प्रचारित-प्रसारित कर रही है। होली की व्यवस्थाओं को व्यापक बनाया जा रहा है। होली पर ब्रज में आने वाले पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। इससे रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे हैं। इसका दूसरा पहलू यह है कि ब्रजवासी लगातार होली से कुछ दूर भी हो रहे हैं।

ब्रज में 45 दिन तक चलाने वाला होली का उत्सव सिकुड़कर अब पांच दिन का भी नहीं रह गया है। इतना ही नहीं, अभी तक समूचे ब्रज में नैसर्गिक रूप से खेले जाने वाली होली अब कुछ सांकेतिक आयोजनों तक ही सीमित रह गई है। मठ मंदिरों पर होने वाले चुनिंदा होली के आयोजन ही अब ब्रज की होली के नाम पर हो रहे हैं। आयोजनों के भी प्रयोजन तलाशे जा रहे हैं और इनके लिए प्रयोजक भी आगे नहीं आ रहे हैं। ब्रज की नैसर्गिक होली अब एक 'प्रायोजित आयोजन' का रूप लेती जा रही है। इसमें भव्यता तो नजर आती है लेकिन होली का आनंद नदारद रहता है। आधुनिकता, व्यस्तता, व्यवस्था और बेचारगी से ब्रज की परंपरागत होली के रंग फीके पड़ रहे हैं। होली का उल्लास अब नजर नहीं आ रहा हैं।

बृजवासी होली पर बस होली की बातें याद कर खुद को सांत्वना देते दिख रहे हैं। उनके जेहन में वह होली अभी जीवित है जिसे 'ब्रज की होली' कहा जाता है। पीढ़ी बदलने के साथ ही ये यादें भी विस्मृत हो जाएंगी और समय के साथ ब्रज की सच्ची होली भी...। रात के प्रथम पहर से भोर तक गांवों में गूंजने वाले 'सांखी' के स्वर अब कानों में नहीं पड़ते हैं। यह होली गायन और होली खेलने की ब्रज की प्रमुख विधा रही है। इस विधा में हुरियारों की टोली की ओर से गाए जाने वाले होरी के रसिया का हुरियारिनों की टोली रसिया गाकर जवाब देती हैं। लयबद्ध और चरणबद्ध यह गायन बेहद मनोरंजक, अर्थपूर्ण और होली की मस्ती से सराबोर होता है। हुरियारिनों के हाथों में लाठियां रहती हैं। वे रसिया के आखिरी चरण में अपनी लाठियों से हुरियारों पर प्रहार करती हैं। उन्हें पीछे धकेलती हैं। हुरियारे अपने हाथों में लाठियों को थामे रहते हैं। इन लाठियों के सहारे बचाव की मुद्रा में रहते हैं। हुरियारिनें रसिया गाते हुए हुरियारों को पीछे धकलती हैं। हुरियारे ढाल की तरह लाठी को बचाव में उपयोग करते हैं। इसके बाद फिर तितर-बितर हुए हुरियारे एकत्रित होते हैं और रसिया गाते हैं। हुरियारिन जवाब में रसिया गाती हैं और लाठियों से प्रहार करती हैं। प्रेम पगी लाठियों के प्रहारों को सहने और बचाव करने का यह क्रम निरंतर जारी रहता है। बरसाना में अभी तक लड्डू होली भी लट्ठमार होली जितनी ही उल्लासित करने वाली होती थी। अब लड्डू होली का स्वरूप बदल गया है। अभी तक पहाड़ी पर स्थित राधा रानी मंदिर की प्राचीर से लड्डुओं की बरसात होती थी। यह मनोरम दृश्य जो भी अपनी आंखों से देखता था, कभी भुला नहीं पाता था। अब लड्डू होली का स्वरूप बदल रहा है। अब लड्डुओं की बरसात नहीं होती है। यह प्रतीकात्मक रह गई है। सिर्फ गोस्वामीजन आपस में एक दूसरे के ऊपर लड्डू फेंककर ही परंपरा को निभा रहे हैं। ब्रज क्षेत्र में होली लगभग 45 दिन तक चलने वाला सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्सव है। इसकी शुरुआत बसंत पंचमी से होती है और फाल्गुन पूर्णिमा तक चलता है। यहां हर स्थान पर होली का अलग स्वरूप देखने को मिलता है।

आध्यात्मिक जागरण का पर्व रंग पंचमी

सुनील दत्त पांडेय

सांस्कृतिक परंपरा

फाल्गुन मास की पूर्णमासी के दिन होली का त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है और होली सामाजिक समरसता का प्रतीक मानी जाती है जो जाति, धर्म, पंथ से दूर हम सबके अंदर भाईचारे और सामाजिक एकता का भाव पैदा करती है। होली की सनातन सांस्कृतिक परंपरा में फाल्गुन मास में मनाए जाने वाले होली महापर्व की तरह चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की पंचमी को रंग पंचमी कहा जाता है और रंग पंचमी का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से विशेष महत्व है।

सनातन धर्म के शास्त्रों के अनुसार चैत्र कृष्ण पक्ष की रंग पंचमी को देवी-देवताओं की होली का महापर्व माना जाता है और जो बहुत ही शुभ और कल्याणकारी पर्व माना गया है, जिस दिन ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी देवी-देवताओं के साथ पृथ्वी पर अवतरित होकर एक साथ यमुना के तट पर होली खेलते हैं। रंग पंचमी की आध्यात्मिक छटा कुछ और ही होती है, जिसकी आध्यात्मिक ऊर्जा को श्रद्धालु अपने अंतर मन की शक्ति से ही अनुभव कर सकते हैं।

रंग पंचमी पर्व को लेकर यह मान्यता मानी जाती है कि इस पवित्र पावन दिन द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने राधा रानी के साथ यमुना के तट पर वृंदावन में होली खेली थी और और इस मनमोहक और आकर्षक तथा भक्ति से सराबोर दृश्य को देखकर देवी-देवताओं ने उन पर पुष्प वर्षा की थी। राधा-कृष्ण की इस होली में उनके साथ ग्वाले और गोपियों ने भी रंगोत्सव मनाया था। इसीलिए आज भी यह मान्यता है कि चैत्र कृष्ण पक्ष की पंचमी यानी रंग पंचमी के दिन भगवान कृष्ण और राधा सभी देवी-देवताओं के साथ यमुना जी के तट पर होली खेलने आते हैं। इसीलिए इस दिन श्रद्धालु भगवान कृष्ण और राधा की विशेष रूप से पूजा करते हैं और देवी-देवताओं का ध्यान करते हुए उन्हें हवा में अबीर और गुलाल चढ़ाते है। धार्मिक मान्यता है कि रंग पंचमी पर्व के दिन लाल और गुलाबी रंग के गुलाल को पूजा में अर्पित करना अत्यंत ही शुभ माना गया है और इस दिन श्रद्धालुओं को राधा-कृष्ण सहित सभी देवी-देवताओं का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होता है।

रंग पंचमी के दिन सूर्योदय के उपरांत लक्ष्मी और नारायण, भगवान श्रीकृष्ण और राधा की विधि-विधान से पूजा करना कल्याणकारी माना जाता है। रंग पंचमी की पूजा के लिए सर्वप्रथम घर में पूजा स्थल पर ईशान कोण में एक मेज पर पीला कपड़ा बिछाकर उस पर राधा-कृष्ण

की मूर्ति को स्थापित कर गंगा या यमुना जी के जल से स्नान कराया जाता है और रोली, चंदन, वस्त्र, गुलाल आदि से राधा-कृष्ण की प्रतिमा या चित्र का अभिषेक किया जाता है और उन्हें नैवेद्य चढ़ाया जाता है। पूजा के अंत में राधा-कृष्ण की आरती उतारी जाती है।

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में रंग पंचमी का त्योहार एक अलग ढंग से ही मनाया जाता है। इस दिन देहरादून में दरबार साहिब में ऐतिहासिक और प्राचीन झंडा मेले का शुभारंभ होता है और दरबार साहिब में स्थापित झंडे साहिब का नए वस्त्र पहनाकर अभिषेक किया जाता है और देश के कोने-कोने से श्रद्धालु झंडे मेले में भाग लेने आते हैं और अपनी मन्नत मांगते हैं और मन्नत मांगने के लिए झंडा साहिब में रुमाल चढ़ाते हैं और मन्नत पूरी होने पर फिर अगले साल रंग पंचमी के दिन रुमाल चढ़ाने आते हैं और प्रसाद चढ़ाकर झंडा साहिब का आभार व्यक्त करते हैं। उदासीन संप्रदाय से जुड़े हुए साधु संत सिद्ध साधक गंगा और यमुना के पावन तट पर साधना करते हैं। और यह साधु संत गंगा के पवित्र पावन तट पर स्थित श्मशान घाट में महाशिवरात्रि के दिन प्रवेश करते हैं और लगभग सवा महीने तक धुनी लगाकर साधना करते हैं और रंग पंचमी के दिन अपनी श्मशान साधना पूर्ण कर देहरादून में दरबार साहब में स्थित झंडे मेले में सम्मिलित होकर झंडा साहिब को प्रणाम करते हैं और उसके बाद हरिद्वार से करीब 20-25 किलोमीटर दूर पौड़ी गढ़वाल जनपद में स्थित विंध्यवासिनी मंदिर में चैत्र नवरात्र का विशेष पूजन करते हैं।

वृंदावन को चैतन्य करने वाले महाप्रभु

पूनम नेगी

जयंती (फाल्गुन पूर्णिमा) पर विशेष

मध्यकालीन भारत के जिन संत-सुधारकों ने एक मौन क्रांति के द्वारा मुगल आक्रांताओं के क्रूर अत्याचारों से कराह रहे भारतीय जनमानस को ईश्वरीय आलम्बन प्रदान करने का स्तुत्य कार्य किया था। उनमें चैतन्य महाप्रभु का योगदान अप्रतिम माना जाता है। पन्द्रहवीं शताब्दी में फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को पश्चिम बंगाल के नवद्वीप (वर्तमान में मायापुर गांव) में जन्मे इस महान कृष्ण भक्त ने हरिनाम संकीर्तन की रसधार बहाकर तद्युग की पीड़ित व क्षुधित मानवता को प्रभु प्रेम की जो संजीवनी सुधा पिलायी वैष्णव भक्तों के हृदय में उसकी गमक आज भी बरकरार है। ईशभक्ति की एकांतिक साधना को हरि संकीर्तन के माध्यम से सार्वजनिक करने का श्रेय चैतन्य महाप्रभु जैसी प्रणम्य विभूति को ही जाता है।

इस महामानव का अवतरण ऐसे अंधयुग में हुआ था जहां एक ओर हिंदू समाज को छुआछूत व ऊंच-नीच की बेड़ियों में जकड़ रखा था, तो वहीं दूसरी ओर देश की आम जनता क्रूर मुगल शासकों के अत्याचारों व धर्मांतरण की तलवार से आतंकित थी। राजनीतिक व सामाजिक अस्थिरता के उस युग में उन्होंने हरि संकीर्तन की अपनी अनूठी शैली से समाज में मानवीय एकता व सद्भावना का बिगुल फूंका। उनके इस आंदोलन का मूल लक्ष्य था सर्व-धर्म समभाव, प्रेम, शांति और अहिंसा की भावना को जन-जन के हृदय में संचारित कर लोगों का हृदय परिवर्तन करना।

भगवान श्रीकृष्ण की द्वापरयुगीन विलुप्त लीलास्थली वृन्दावन को पुनः चैतन्य करने का श्रेय भी महाप्रभु को ही जाता है। भारत के इसी महान संत ने देश-दुनिया के सनातनधर्मियों को वृंदावन की पुरातन महत्ता से परिचित कराकर उनके मन में दिव्य तीर्थ के प्रति भक्ति भाव जागृत किया था। 'इस्कान' के संस्थापक आचार्य एसी भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद के अनुसार श्रीकृष्ण के इन गौरांग अवतार ने अपने छह प्रमुख अनुयायियों को वृंदावन भेजकर वहां सप्त देवालयों की आधारशिला रखवाई थी। कालांतर में उनके वे छह प्रमुख शिष्य वैष्णवों के गौड़ीय संप्रदाय के षड्गोस्वामियों के नाम से विख्यात हुए। गौड़ीय संप्रदाय के ये सात प्रमुख वैष्णव मंदिर हैं- गोविंददेव मंदिर, गोपीनाथ मंदिर, मदन मोहन मंदिर, राधा रमण मंदिर, राधा दामोदर मंदिर, राधा श्यामसुंदर मंदिर और गोकुलानंद मंदिर। वृंदावन की आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण में इन ऐतिहासिक सप्त देवालयों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

जिस तरह बंगभूमि में प्रति वर्ष फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को गौरांग प्रभु का जन्मोत्सव भारी धूमधाम से मनाया जाता है, ठीक वैसे ही वृंदावन में भी गौरांग प्रभु का जन्मोत्सव तथा कार्तिक पूर्णिमा के दिन गौरांग का आगमनोत्सव भारी हर्षोल्लास से मनाया जाता है। चैतन्य महाप्रभु की प्रेरणा से जगन्नाथ रथयात्राओं के माध्यम से शुरू हुई श्रीकृष्ण संकीर्तन यात्रा आज तक बदस्तूर जारी है। आज भी जगन्नाथ रथयात्रा में चैतन्य महाप्रभु का नाम लेकर 'निताई गौर हरि बोल' का उद्घोष करके संकीर्तन शुरू किया जाता है। महाप्रभु ने लोगों को सिखाया कि भक्ति का रास्ता भेदरहित मानव प्रेम से होकर जाता है।

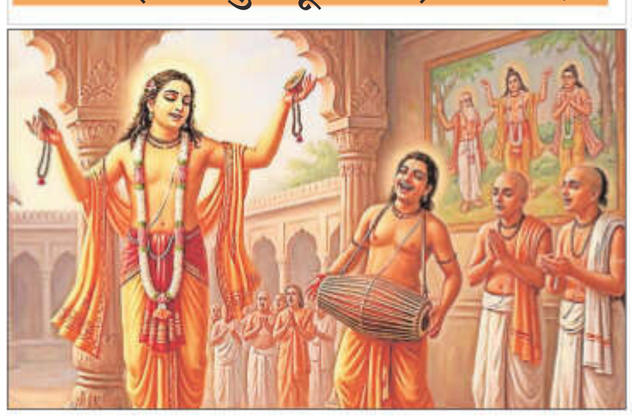

कहा जाता है कि पिता का श्राद्ध करने जब वे गया गए तो वहां उनकी भेंट ईश्वरपुरी नाम के एक वैष्णव संत से हुई। उन्होंने निमाई के कान में कृष्ण भक्ति का मंत्र फूंक कर उनका जीवन बदल दिया। कालान्तर में वे केशव भारती नामक वैष्णव संत से संन्यास की दीक्षा लेकर निमाई से चैतन्य महाप्रभु बन गए। हालांकि कुछ लोगों की मान्यता है कि माधवेन्द्र पुरी इनके दीक्षा गुरु थे। संन्यास लेकर वे कृष्ण भक्ति में आकंठ डूब गए। कहते हैं कि संकीर्तन यात्रा के साथ महाप्रभु जब पहली बार पुरी के जगन्नाथ मंदिर पहुंचे तो भगवान की मूर्ति देखकर भाव-विभोर नृत्य करते करते मूर्छित हो गए। यह दृश्य देख वहां उपस्थित पुरी के प्रकांड पंडित सार्वभौम भट्टाचार्य उन्हें अपने घर ले आए। घर पर शास्त्र-चर्चा के दौरान सार्वभौम के पाण्डित्य प्रदर्शन में अहंकार की बू देख महाप्रभु ने उन्हें अपने वास्तविक रूप का दिग्दर्शन कराया जिसे देख सार्वभौम के ज्ञान चक्षु खुल गए और वे महाप्रभु के चरणों में गिर कर सदा-सदा के लिए उनके शिष्य बन गए। पंडित सार्वभौम भट्टाचार्य द्वारा की गई चैतन्य महाप्रभु की शत-श्लोकी स्तुति को आज 'चैतन्य शतक' के नाम से जाना जाता है।

मोह से मुक्त होकर लें फैसला, करें कर्म

जनसत्ता धर्मदीक्षा

भारत में फल की इच्छा के बिना कर्मयोग के सिद्धांत को स्थापित करने में श्रीमद् भगवद् गीता का प्रमुख स्थान है। गीता महाभारत के भीष्मपर्व का हिस्सा है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जीवन, कर्म, धर्म और योग का उपदेश दिया है। इसमें कुल 18 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में अलग-अलग जीवन संदेश है। इसमें ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग और संन्यास योग जैसे महत्वपूर्ण विषय समाहित हैं। गीता सार के इस अंक में हम प्रथम अध्याय के जीवन संदेश को समझने की कोशिश करेंगे।

भगवद् गीता के पहले अध्याय का शीर्षक है अर्जुन विषाद योग या अर्जुन के दुःख का योग। इसमें दर्शन का अधिक समावेश नहीं है, फिर भी यह मानव व्यक्तित्व की बहुमूल्य समझ प्रदान करता है। इसकी शुरुआत धृतराष्ट्र के संजय से पूछे गए प्रश्न से होती है। धृतराष्ट्र संजय से पूछते हैं कि उनके पुत्र और पांडु के पुत्र क्या कर रहे हैं। संजय अपने वृत्तांत की शुरुआत करते हैं, इसी बीच कृष्ण अर्जुन को दोनों सेनाओं के बीच ले जाकर शत्रु सेना का जायजा लेते हैं। अर्जुन शत्रु सेना

भगवद् गीता के पहले अध्याय का सार संदेश है अपनी भावनाओं को अपने निर्णय पर हावी न होने दें। चीजों को निष्पक्ष रूप से देखें।

में अपने प्रिय गुरु भीष्म को देखते हैं, जिन्होंने उस राज्य का त्याग कर दिया था जिसके लिए वे लड़ रहे थे। वे अपने गुरु द्रोणाचार्य को भी देखते हैं, जिन्होंने उन्हें धनुर्विद्या सिखाई थी। उन्हें अपने रिश्तेदार दिखाई देते हैं, जबकि उन्हें शत्रुओं को देखना चाहिए था। जब भावना उनके बौद्धिक दृढ़ विश्वास के आड़े आती है, तो वे लड़खड़ाते और गिर पड़ते हैं। वे अपने रुख को सही ठहराने के लिए बेतुके तर्क देते हैं और झूठी वैराग्यता का प्रदर्शन करते हैं। भ्रमित और थके हुए वे गिर पड़ते हैं, खड़े होने में असमर्थ, उनका मन चकरा रहा होता है और रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस प्रकार पराक्रमी अर्जुन दुर्बल करुणा से ग्रस्त होकर टूट जाता है और क्षत्रिय शासक के रूप में धर्म और न्याय को बनाए रखने के अपने कर्तव्य को भूल जाता है। जब हमारे पास उच्च दृष्टि का अभाव होता है, तो हम अस्थिर भावनाओं से कमजोर हो जाते हैं। हम तुच्छ बातों में उलझ जाते हैं। बुद्धि भ्रमित हो जाती है।

यही अर्जुन की स्थिति है। कृष्ण के लिए अर्जुन को और

गीता सार

उसके माध्यम से युगों-युगों से भ्रमित और व्याकुल आत्माओं को ज्ञान देने का मंच तैयार है। लाखों लोगों ने संकट की घड़ी में गीता का सहारा लिया है और ज्ञान का वह प्रकाश पाया है जो अंधकार से सत्य की ओर स्पष्ट मार्ग दिखाता है। कृष्ण अपने तर्कों से अर्जुन को कमजोर भावनाओं से बाहर निकलने में मदद करते हैं और धर्म व न्याय के मार्ग पर आगे बढ़ने की सीख देते हैं। इस सीख में सभी जनमानस के लिए गहरा संदेश होता है, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। लोग अपने जीवन में कर्तव्य पालन में कई बार अपनों के मोह में फंस जाते हैं और न्याय के मार्ग पर चलने से विमुख हो जाते हैं।

गीता के प्रथम अध्याय में अर्जुन के साथ कृष्ण के संवाद में आम लोगों के लिए कई संदेश हैं। प्रथम सीख है, सभी समस्याएं अलगाव की भावना से उत्पन्न होती हैं। अपने प्रतिद्वंदी या शत्रु सहित सभी के साथ एकरूपता का अनुभव करें। मन शांत रहेगा, बुद्धि तीव्र और स्पष्ट होगी, और कर्म प्रभावी होंगे। लेकिन प्रेम को कठिन निर्णयों के आड़े न आने दें। एक मां अपने बच्चे से हमेशा प्रेम करती है, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर सुधारात्मक कार्रवाई भी करती है। दूसरी सीख है, भय और असुरक्षा का स्रोत कुकर्म, अज्ञानता, दुष्टता, स्वार्थ और पराक्रम से उत्पन्न होते हैं। अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनें और निस्वार्थ बनें। आप विषम परिस्थितियों में भी निर्भीक हो जाएंगे। तीसरी सीख है, यदि आप धर्म व न्याय के मार्ग पर नहीं हैं तो आपकी सारी प्रतिभा, शक्ति और सामर्थ्य व्यर्थ है। सफलता और विजय का एकमात्र निर्धारक तत्व धर्म है। चौथी सीख है, किसी भी स्थिति को 'मेरे साथ क्या होगा' के संकीर्ण दृष्टिकोण से देखने पर आप भ्रमित और अनिर्णायक हो जाते हैं। कार्रवाई रुक जाती है। उसी चीज को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखने पर आपको स्पष्टता प्राप्त होती है। पांचवीं सीख है, अपनी भावनाओं को अपने निर्णय पर हावी न होने दें। चीजों को निष्पक्ष रूप से देखें। अपनी भावनाओं को ध्यान में रखें, लेकिन कार्रवाई का निर्णय बुद्धि पर छोड़ दें। अपने दायित्वों पर ध्यान केंद्रित करें। उन्हें अच्छी तरह निभाएं। दूसरों की आलोचना करने में समय बर्बाद न करें। कमजोर दया भाव से विचलित न हों, क्योंकि यह मन की एक क्षणिक विकृति है। छठी सीख है, जब आप अपने भीतर झांकते हैं और दो विरोधी सेनाओं के बीच खड़े होते हैं, न तो अच्छा करते हैं और न ही बुरा, तो आपको कुरु- नकारात्मक प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं। जब मानसिक बेचैनी बढ़ जाती है तो आपको मतिभ्रम होने लगता है। आपको ऐसी चीजें दिखाई देती हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं होता। दुःख झूठी त्याग की भावना उत्पन्न करता है। जब आपका मन व्याकुल हो तो निर्णय लेने में देरी करें। सातवीं सीख है, घृणा और द्वेष सही कर्म के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। घृणा से ऊपर उठें। मन शांत होता है, बुद्धि में स्पष्टता आती है और आप आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने में सक्षम होते हैं।